किशोर ग्रन्थमाला - ४३

तारा-रहस्यम्

'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्योपेतम्



कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

किशोर-ग्रन्थमाला

४३

तारा-रहस्यम्

'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्योपेतम्

(तारापञ्चाङ्ग-तारातन्त्र-तारा-उपासना-
तारापूजा-पद्धतिरूपात्मकम्)

लेखक तथा सम्पादक

व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर-

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री

(ादेशिक सरकार द्वारा सम्मानित)



कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

१९९२

प्रकाशक : कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी

संस्करण : प्रथम, वि० सं० २०४९ (१९९२ ई०)

मूल्य : रु० २५-००

© Krishnadas Academy

Oriental Publishers & Distributors

Post Box No. 1118

Chowk, (Chitra Cinema Building), Varanasi-221001

(INDIA)

Phone : 52358

अपरं च प्राप्ति-स्थानम्

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

के० ३७/९९, गोपाल मन्दिर लेन

पो० बा० १००८; वाराणसी-२२१००१ (भारत)

फोन : ३३३४५८

प्रस्तुति

आगमशास्त्र और तन्त्रवाङ्मय में दश महाविद्याओं की महिमा अपरम्पार मानी गई है। उन दश महाविद्याओं में 'काली' का नाम सर्वप्रथम है। द्वितीय नाम है 'तारा' महाविद्या का। यथा—

'काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।
भैरवी छिन्नमस्ता च विद्या धूमावती तथा॥ १॥
बगला सिद्धविद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।
एता दश महाविद्याः सिद्धि-विद्याः (सिद्धविद्याः) प्रकीर्तिताः॥ २॥

आगम-शैव-शाक्ततन्त्रों में मुख्यतः शाक्ततन्त्रों में इन दश महाविद्याओं के नाम प्रसिद्ध हैं और इनकी महिमा का विशेष उल्लेख है। इनको सिद्धिदायिनी और सिद्ध-महाविद्या कहा गया है। ये शीघ्र सिद्ध होती हैं, यदि इनकी उपासना-सपर्या-चरिवस्या विधिपूर्वक और समाहित मनसे, शुद्धता पूर्वक की जाय। इनकी उपासना द्विविध है—वाममार्गीय और दक्षिणमार्गीय। उपासक उनका ज्ञान तन्त्रग्रन्थों से प्राप्त कर सकते हैं।

आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र ने इस दिशामें बड़ा कार्य किया है। अन्य महत्त्व के भी कार्य इनके हैं। 'शिवमहापुराण' का हिन्दी-अनुवाद भी महत्ता की रचना है। कर्मकाण्ड के ज्ञाता होने के कारण उक्त दिशा में भी इनकी उपलब्धि महत्त्वपूर्ण है। छोटे-बड़े इनकी कुल मिलाकर शताधिक रचनाएँ मुद्रित व प्रकाशित हो चुकी हैं।

आचार्य मिश्र ने विभिन्न देवी-देवों से सम्बद्ध अनेक रहस्य ग्रन्थों का निर्माण किया है। उनमें 'शाक्त' और शाक्तेतर ग्रन्थ हैं। दस-बारह से भी अधिक ग्रन्थ—इस दिशा में उनके रचित हैं। 'शाक्त'—ग्रन्थों में—उदाहरणार्थ 'दुर्गा-रहस्य', 'काली-रहस्य', 'बगलामुखी-रहस्या'दि हैं और 'शाक्तेतर' ग्रन्थों में 'राम-रहस्य', 'हनुमद्-रहस्य' आदि विशिष्ट हैं।

'हनुमद्-रहस्य' तो बड़ी विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण कृति है। इसमें 'हनुमत्कवच', 'पञ्चमुख-हनुमत्कवच', 'सप्तमुखहनुमत्कवच', 'एकादशमुख-हनुमत्कवच', 'हनुमत्पञ्चरत्न', 'हनुमद्वडवानलस्तोत्र' आदि ही नहीं 'हनुमत्सहस्रनामस्तोत्र', 'हनुमत्सहस्रनामावली' के अतिरिक्ति हिन्दी की भी अनेक स्तुतियां—'हनुमान-चालीसा', 'संकटमोचन-हनुमानाष्टक', 'हनुमान बजरंगबाण', 'हनुमान-साठिका', 'हनुमानलहरी' तथा 'हनुमानबाहुक' आदि भी संकलित हैं।

दश महाविद्याओं में प्रथमोपात्त 'काली' को आधार बनाकर आचार्य मिश्र ने 'काली-रहस्यम्' का निर्माण किया है। इस ग्रन्थ में भी काली की पञ्चाङ्ग-उपासना तथा उनसे सम्बद्ध अनेक दुर्लभ स्तोत्रादि दिये गये हैं। उ० प्र० सं० अकादमी, लखनऊ द्वारा इसपर पुरस्कार भी प्रदान किया गया है।

शाक्ततन्त्रों की दश महाविद्याओं 'काली' या 'महाकाली'-जैसे प्रथम महाविद्या हैं, वैसे ही 'तारा' का नाम द्वितीय महाविद्या के रूप में आता है।

बड़े हर्ष की बात है कि, आचार्य मिश्र 'तारा-महाविद्या' का आश्रय लेकर 'तारा-रहस्यम्' को संगृहीत एवं सुसम्पादित करके श्रद्धालु जनके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। आचार्य मिश्र की यह कृति भी विशिष्ट महत्त्व की है। इसमें 'पञ्चाङ्ग-उपासना' के सहित, यन्त्रोद्धार', 'मन्त्रोद्धार', 'तारामन्त्र', 'तारा-सपर्यासरणि', 'तारा-स्तोत्र' के अतिरिक्त 'तारा-कवच' या (उग्रतारा-कवच) भी है।

तारोपासना में यह 'तारा-कवच' महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह नीलतन्त्रोक्त अत्यन्त रहस्यात्मक है। इसे 'उग्र-तारा-कवच' भी कहते हैं। 'उग्रतारा' की चर्चा बौद्धतन्त्रों में भी सुनी गई है। इसी क्रम में भैरवीतन्त्रोक्त 'तारा-हृदयम्' भी है। 'तारोपनिषत्' तो यहाँ संकलित है ही।

आचार्य मिश्र ने 'ताराशतनाम' तथा 'तारा-शतनामावली' के साथ-साथ 'तारासहस्रनाम' का भी संग्रह किया है। यह वस्तुतः तारा-तकारादि-

सहस्रनामस्तोत्र है। इसकी विशिष्टता यह है कि, तारा-महाविद्या के सहस्रनाम तकारादि हैं। इस ग्रन्थ में तकारादि-श्रीतारा के सहस्रनाम के साथ-साथ चतुर्थ्यन्त तकारादि सहस्रनाम की नामावली नमस्कारान्तक है। इससे ग्रन्थ की उपयोगिता बढ़ गयी है।

इनके अतिरिक्त भी कतिपय महत्त्व के स्तोत्र-कवच आदि का बड़े श्रम से, अन्वेषण के साथ संकलन किया गया है। 'तारात्रैलोक्य-विजय-कवच', 'श्रीउग्र-ताराकवच', 'श्रीताराकर्पूरस्तोत्र', 'त्रैलोक्य-मोहन-तारा-कवच' एवं 'विद्याप्रदतारास्तोत्र' भी इस कृति में संग्रहीत हैं।

अतः मैं बड़े हर्ष और विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि, 'तारा-रहस्यम्' शीर्षक ग्रन्थ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और अपने ढंग की अपूर्व कृति है। इतनी सामग्री एकत्र अन्यत्र कदाचित् दुर्लभ है। 'शाक्त-प्रमोद' में भी इतनी सामग्री उपलब्ध नहीं है।

मैं इस कृति के लिए **आचार्य मिश्र** को बधाई देता हूँ। महाविद्या-तारा से प्रार्थना करता हूँ कि विद्या और महाविद्या की सेवा में उनकी लेखनी इसी भाँति निरन्तर चलती रहे।

औरंगाबाद, वाराणसी
गुरुपूर्णिमा-२०४९ वि.सं.

करुणापति त्रिपाठी
पू. अध्यक्ष, उ. प्र. सं. अकादमी, लखनऊ
तथा
पू. कुलपति, सं. सं. विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्राक्कथन

शक्ति-उपासना के विशाल क्षेत्र के अन्तर्गत दश महाविद्याओं की उपासना में जगन्माता भगवती तारा का प्रमुख स्थान है। काली (१), तारा (२), षोडशी-त्रिपुरसुन्दरी (३), भुवनेश्वरी (४), भैरवी (५), छिन्नमस्ता (६), धूमावती (७), बगलामुखी (८), मातंगी (९) एवं कमलात्मिका-कमला (१०)—इन दश महाविद्याओं में पराम्बा जगदम्बा भगवती तारा देवी द्वितीय स्थान पर प्रतिष्ठित हैं। भगवती तारा का उपासना क्षेत्र अत्यधिक संकुचित होते हुए भी रहस्यमय और चमत्कारपूर्ण है। तारा को ही उग्रतारा भी कहते हैं।

'तार' शब्द से टाप् प्रत्यय करने पर तारयति अज्ञानान्धतमसः समुद्धरति भक्तान् या सा 'तारा'। अर्थात् तारण करनेवाली एवं अज्ञानरूपी अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश में लाने वाली। भगवती तारा के तीन रूप हैं—१. तारा, २. एकजटा, ३. नील सरस्वती। इन तीनों रूपों के रहस्य, कार्यकलाप एवं ध्यान परस्पर भिन्न हैं, किन्तु भिन्न होते हुए भी तीनों की सम्मिलित शक्ति समान और एक है।

महाविद्या-तारा की महिमा लोक-पितामह ब्रह्मा ने महर्षि वसिष्ठ से इस प्रकार वर्णन किया है—तारा-विद्या के समान तीनों लोकों में और कोई विद्या नहीं है। इस तारा देवी के अनुग्रह से ही मैं चौदह भुवनों की रचना एवं चार वेदों की व्याख्या अनायास करता हूँ। इसी भुवनतारिणी विद्या की समाराधना करके तत्त्वज्ञान प्राप्तकर भगवान् विष्णु जगत् का पालन करते हैं। प्रलय-काल में भगवान् शङ्कर तारा की ही समाराधना करके रुद्र-मूर्ति धारणकर समस्त विश्व का संहार करते हैं। वह नीला देवी भगवती तारा परमा शक्ति हैं। वह प्राणीमात्र का समस्त संकटों से परित्राण करती हैं। वह करोड़ों सूर्यों की प्रभा के समान प्रकाशवान् और करोड़ों चन्द्रों के सदृश सुशीतल हैं। वह महाकाल-पत्नी तारा करोड़ों विद्युत्-लतिकाओं के समान ज्योतिर्मयी एवं चतुर्दश भुवनों का संरक्षण करने वाली ब्रह्मज्ञानमयी हैं। श्रद्धा-भक्ति पूर्वक स-विधि जगज्जननी भगवती तारा की उपासना करने से सामान्य जन भी बृहस्पति के समान हो जाते हैं।

भगवती तारा की उपासना मुख्यतः तान्त्रिक-पद्धति से ही सद्यः फल-प्रदायिनी होती है, जिसे 'आगमोक्त-पद्धति कहते हैं। इस तान्त्रिक उपासना का प्रचार-प्रसार आज भी मिथिला, बंगाल एवं इसके इर्द-गिर्द क्षेत्र में बहुतायत से देखने को मिलता है।

भारत में सर्व-प्रथम महर्षि वसिष्ठ ने भगवती तारा की उपासना की थी। एतदर्थ तारा को 'वसिष्ठाराधिता तारा' भी कहा जाता है। वसिष्ठ ने पहले वैदिक रीति से ही आराधना की, जो सफल न हो सकी। पश्चात् उन्हें अदृश्य शक्ति से संकेत मिला कि, 'तुम तान्त्रिक-पद्धति अर्थात् चीनाचार के द्वारा उपासना करो—इससे अवश्य सिद्धि मिलेगी।' ऐसा करने से ही उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। इससे यह भी सिद्ध होता है कि तारा की उपासना चीन, तिब्बत, लद्दाख आदि देशों में प्रचलित थी और आज भी प्रचलित है।

अबतक जगन्माता भगवती तारा की उपासना के लिए हिन्दी टीका सहित ऐसी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं थी, जिससे तारा-उपासना करने वाले सर्व-साधारण साधक वर्ग भी लाभान्वित हो सकें। यद्यपि शाक्त-प्रमोद एवं तारा-तन्त्र आदि ग्रन्थ हैं भी, परन्तु आधुनिक शैली में संशोधन-सम्पादन एवं सरल-सुबोध हिन्दी टीका आदि न होने से वे सब के लिए उपयोगी नहीं। इन समस्त कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए ही मैंने प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन किया है।

इसमें तारा-ध्यान; तारा-यन्त्रोद्धार, तारा-मन्त्रोद्धार, तारा-मन्त्र, तारा-सपर्या-पद्धति, तारा-स्तोत्र, तारा-कवच, तारा-हृदय, तारोपनिषत्, तारा-शतनाम-सहस्रनाम, तारा-सहस्रनामावली एवं तारा-प्रातःस्मरण-स्तोत्र आदि तारा उपासना-सम्बन्धी अनेक विषय संग्रहीत हैं।

विद्वद्वरेण्य **आचार्य पं० श्रीकरुणापतिजी त्रिपाठी** का मैं विशेष आभारी हूँ, जिन्होंने अपने अत्यन्त व्यस्त-कार्य क्षणों में भी प्रस्तुत पुस्तक में अपनी प्रस्तुति लिखकर ग्रन्थ को गौरवान्वित किया है।

इसका संशोधन-सम्पादन एवं अनुवाद कार्य भी मैंने बड़ी सावधानी के साथ किया है फिर भी मानव-दोष से सम्भव त्रुटियों के लिए क्षमा-प्रार्थी हूँ।

क्योंकि, तन्त्रशास्त्र का विषय बड़ा गहन है। इसीलिए तन्त्रशास्त्र के टीकाकारों ने सर्वत्र ही 'एतद्-गुरुमुखादवगन्तव्यः' अर्थात् इसका ज्ञान गुरु-परम्परा से ही जानने योग्य है। अतः कृपालु पाठकों से विनम्र निवेदन है कि, इसमें जहाँ-कहीं किसी प्रकार की भी त्रुटि रह गयी हो, तो उसे सूचित करें, जिसे मैं अग्रिम संस्करण में उसका सुधार करा सकूँ।

अन्त में, 'कृष्णदास अकादमी, वाराणसी' के अधिकारी वर्ग विशेष धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने प्रस्तुत प्रकाशन द्वारा तारा-उपासना-प्रेमी पाठकों का महान् उपकार किया है।

नागपंचमी
३ अगस्त, १९९२ ई०

शिवदत्तमिश्र शास्त्री
सी. के. ५/२६ ए., भिखारीदास लेन
(ठठेरी बाजार), वाराणसी-१

विषयानुक्रमणिका

विषयाः	पृष्ठाङ्काः	विषयाः	पृष्ठाङ्काः
१. मङ्गलाचरणम्	१	१४. तारा-सहस्रनामावली	१००
२. ताराध्यानम्	२	१५. तारा-प्रातःस्मरण-स्तोत्रम्	१२०
३. यन्त्रोद्धारः	२	१६. श्रीउग्रतारा-कवचम्	१२२
४. मन्त्रोद्धारः	३	१७. श्रीतारा-त्रैलोक्य-विजय-कवचम्	१२७
५. तारामन्त्रः	३	१८. तारा-कर्पूर-स्तोत्रम्	१४८
६. तारासपर्यासरणिः	४	१९. त्रैलोक्यमोहन-तारा-कवचम्	१५२
७. तारास्तोत्रम्	२४	२०. विद्याप्रद-तारा-स्तोत्रम्	१५६
८. तारा-कवचम्	२८	२१. देवी-आरती	१५८
९. तारा-हृदयम्	४०	२२. ग्रन्थकारसंस्तवः	१५९
१०. तारोपनिषत्	४६	२३. क्षमा-प्रार्थना	१६०
११. तारा-शतनाम-स्तोत्रम्	४८		
१२. तारा-शतनामावली	५३		
१३. तारा-तकारादि-सहस्रनाम-स्तोत्रम्	५६		

*

॥ श्रीमात्रे जयन्त्यै नमः ॥

आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रि-संस्कृतं

तारा-रहस्यम्

'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्योपेतम्

□

मङ्गलाचरणम्

तारारहस्येऽत्र जगज्जनन्याः
पूजादि-नानाविषया निबन्धाः ।
न्यस्ता, तदीया विवृतिर्वितन्यते
हृद्युपासकानां सुविधामपेक्ष्य ॥ १ ॥

देवरिया-मण्डलगत-'मझौली'ग्रामाऽभिजनेन ।
सन्तशरणतनुजनुषा शिवदत्ताख्येन मिश्रेण ॥ २ ॥

इस तारारहस्य में जगज्जननी माता तारा के विषय में, जो पूजादि नाना प्रकार के निबन्ध दिये गये हैं, मैं श्री शिवदत्त मिश्र उपासकों की सुविधा के लिए, उसकी टीका करता हूँ ॥१॥ देवरिया-मण्डलान्तर्गत 'मझौली ग्राम', जहाँ मेरे पूर्वजों की निवास-भूमि थी, वहीं के रहने वाले पण्डित श्री सन्तशरण मिश्र के आत्मज श्री शिवदत्त मिश्र नामक मैं इस तारा-रहस्य की 'शिवदत्ती' भाषा-टीका करता हूँ ॥२॥

तारा-ध्यानम्[1]

प्रत्यालीढ-पदार्पिताङ्घ्रिशवहृद्-घोराट्टहासापरा
खड्गेन्दीवर-कर्त्रि-खर्परभुजा हुङ्कारबीजोद्भवा ।
खर्वा नील-विशाल-पिङ्गल-जटाजूटैक-नागैर्युता
जाड्यं न्यस्य कपालकर्तृ जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ॥

यन्त्रोद्धारः

सयोनिं चन्दनेनाऽष्टदलं पद्मं लिखेत् ततः ।
मृद्वासनं समासाद्य मायां पूर्वदले लिखेत् ॥१॥
बीजं द्वितीयं याम्ये फट् उत्तरे पश्चिमे तु ठम् ।
मध्ये बीजं लिखेत् तारं भूतशुद्धिमथाचरेत् ॥२॥

तारा-ध्यान—जो शव के हृदय पर अपना बायाँ चरण आगे तथा दाहिना पैर पीछे की ओर स्थापित कर वीरासन की मुद्रा में स्थित हैं, जिन्होंने अपने हाथों में खड्ग, कमल, कर्त्तारिका (छुरी) और खर्पर धारण किया है, जो हुङ्काररूप बीज से उत्पन्न हुई खर्व (गायत्री अथवा कुबेर निधि) स्वरूपा हैं। जिनकी नील, विशाल एवं पिङ्गल जटाएँ सर्पमण्डित हैं, जो ब्रह्मदेव से लेकर जगत् पर्यन्त जीवों के हृदय में जड़ता उत्पन्न करती हैं और प्रसन्न होने पर स्वयम् उसका विनाश भी कर देती हैं। ऐसी तारा देवी का ध्यान करना चाहिए।

यन्त्रोद्धार—साधक सुखपूर्वक आसन पर बैठ कर रक्त चन्दन के द्वारा, प्रथम 'ह्रीं' इस मन्त्र को लिखकर अष्टदल कमल बनावे।

---

१. ध्यानेन मन्त्रसिद्धिः स्याद् ध्यानं सर्वार्थसाधनम् ।
ध्यानं विना भवेन्मूको सिद्धिमन्त्रोऽपि पुत्रक ! ॥

—सां० तन्त्रः पटल ५, श्लोक १८

तारायन्त्रम्

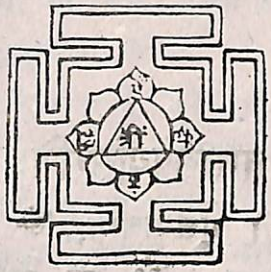

अथ मन्त्रोद्धारः

मन्त्रोद्धारः

वाग्बीजं प्रथमं प्रोच्य ओङ्कारं तु ततः पठेत् ।
लज्जाबीजं ततस्ताराबीजं हूँ फट् ततः पठेत् ॥

तारामन्त्रः

ऐं ओं ह्रीं क्रीं हूँ फट् ।

पूर्वदल में माया बीज 'ह्रीं' लिखे, दक्षिण के दल पर 'क्लीं' उत्तर के दल पर 'फट्' और पश्चिम के दल पर 'ठम्' लिखे । इसी प्रकार मध्य के चार दलों में 'क्लीं' इस बीजमन्त्र को लिखे ॥१-२॥

मन्त्रोद्धार—प्रथम वाग्बीज लिखे, तदनन्तर 'ॐकार', तत्पश्चात् लज्जाबीज 'ह्रीं' पुनः ताराबीज 'क्रीं' लिखे, पुनः 'हूँ फट स्वाहा' लिखे ।

तारामन्त्र—इस प्रकार 'ऐं ॐ ह्रीं क्रीं हूँ फट्' इन छह अक्षरों का तारा मन्त्र हुआ ।

तारासपर्यासरणिः

कुशहस्तो मौनी मूलेनाचम्य, 'ॐ वज्रोदके हूँ फट्' इत्यनेन जलं गृहीत्वा, 'ॐ ह्रीं स्वाहा' इत्यनेन पादौ प्रक्षाल्य, 'ॐ ह्रीं स्वविशुद्धधर्म-सर्वपापानि शमयाशेष-विकल्पानपनय स्वाहा' इत्यनेनाऽऽचम्य, 'ॐ मणिधरि वज्रिणि शिखरिणि सर्ववशङ्करि हूँ फट्' इति शिखाबन्धनं कृत्वा, 'ॐ रक्ष रक्ष हूँ फट् स्वाहा' इति भूमिं संशोध्य, 'ॐ पवित्रवज्रं मे हूँ स्वाहा' इति भूमिमभिमन्त्र्य, 'ॐ आसुरेश्वरि वज्ररेखे हूँ स्वाहा' इत्यनेन भूमिं स्पृष्ट्वा, 'आधारशक्ति-कमलासनाय नमः' इति सम्पूज्य, तत आसनं स्पृष्ट्वा 'पृथ्वी'-त्यादिमन्त्रं पठेत्। तद्यथा—

तारा पूजन-पद्धति—साधक सर्व-प्रथम कुशा हाथ में धारण कर मौन हो 'क्रीं' इस मन्त्र को पढ़ कर आचमन करे, पुनः 'ॐ वज्रोदके हूँ फट्' इस मन्त्रसे जल लेकर 'ॐ ह्रीं स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर दोनों पैर प्रक्षालन करे। तदनन्तर 'ॐ ह्रीं' से लेकर 'स्वाहा' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर आचमन कर 'ॐ मणिधरि' से लेकर 'हूँ फट्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर शिखा बाँधे। पुनः 'ॐ रक्ष रक्ष' से लेकर 'स्वाहा' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर पृथ्वी को शुद्ध कर 'ॐ पवित्रवज्र' से लेकर 'स्वाहा' पर्यन्त मन्त्र पढ़ भूमि को अभिमन्त्रित करे। तदनन्तर 'ॐ आसुरेश्वरि' से लेकर 'हूँ

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

ततः सर्वविघ्नानुत्सार्य, ततः—

'ॐ अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥'

इत्यनेनाऽक्षतप्रक्षेपेण सर्वविघ्नानुत्सारयेत् । गन्ध-पुष्पाभ्यां करौ सम्मर्द्य, तत्पुष्पमैशान्यां नाराचमुद्रया प्रक्षिपेत् । तत्र मन्त्रः—

"ॐ ते सर्वे बिलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः ।
मृत्यु-रोग-भय-क्रोधाः पतन्तु रिपुमस्तके हूँ फट् ॥

सामान्यार्घ्यस्थापनविधिः

तत्र 'ॐ आधारशक्तये नमः' इत्यनेनाधारशक्तिमभिमन्त्र्य,

स्वाहा' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर पृथ्वी का स्पर्श करे और 'आधारशक्ति-कमलासनाय नमः' इस मन्त्र को पढ़ कर पृथ्वी का पूजन करे। तत्पश्चात् 'ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका०' इत्यादि मन्त्र पढ़ कर आसन का स्पर्श करे।

पुनः साधक 'ॐ अपसर्पन्तु' से लेकर 'शिवाज्ञया' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर हाथ में अक्षत ले, उसे चारों दिशाओं में प्रक्षिप्त कर विघ्नोत्सारण करे। फिर चन्दनादि सुगन्धित पदार्थ से तथा पुष्पों को हाथ में मसल कर दोनों हाथ सुवासित करे और बाणमुद्रा के द्वारा 'ॐ ते सर्वे०' से लेकर 'हूँ फट्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर, उन पुष्पों को ईशानकोण में फेंक देवे।

तारा-पूजन के लिए सामान्यार्घ्य स्थापन-विधि—सर्व-प्रथम साधक 'ॐ आधारशक्तये नमः' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर आधारशक्ति को अभिमन्त्रित

तत्र चतुरस्रं लिखित्वा, तदुपरि 'ॐ ह्रः सामान्यार्घ्यं स्थापयामि नमः' इति सामान्यार्घ्यस्थापनं कृत्वा, तस्मिन् प्रणवेन जलं निधाय, तत्र—

'गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥'

इति सूर्यमण्डलादङ्कुशमुद्रया[1] तीर्थानि तत्रावाह्य, पुष्पाऽक्षतैः 'गङ्गादिसकलतीर्थेभ्यो नमः' इति तत्र सम्पूज्य, 'हृदयादिषडङ्गदेवताभ्यो नमः' इति हृदयादि-षडङ्गदेवान् सम्पूज्य, 'ॐ आं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इति,

---

करे। तदनन्तर चतुष्कोण बना कर उसके ऊपर 'ॐ ह्रः' से 'नमः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर, उस चतुष्कोण पर तारा के पूजन के लिए सामान्य अर्घ्य-पात्र रखे। फिर 'ॐ' पढ़ कर अर्घ्यपात्र में जल डाले। तदनन्तर उस पात्रस्थ जल में 'गङ्गे च०' से लेकर 'सन्निधिं कुरु' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर अंकुशमुद्रा दिखाते हुए सूर्यमण्डल से तीर्थों का आवाहन करे। पुनः हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर 'गङ्गादिसर्वतीर्थेभ्यो नमः' मन्त्र पढ़ कर आवाहित तीर्थों का पूजन करे, अनन्तर 'हृदयादिषडङ्गदेवताभ्यो नमः' मन्त्र पढ़ कर हृदयादिषडङ्ग देवों का पूजनकर, पुनः 'ॐ आं०' से लेकर

मुद्राव्युत्पत्तिमाह तन्त्रे —

१. मोदनात् सर्वदेवानां द्रावणात् पापसन्ततेः ।
तस्मान्मुद्रेति विख्याता मुनिभिस्तन्त्रवेदिभिः ॥
अथ मुद्राः प्रवक्ष्यामि सर्वतन्त्रेषु कल्पिताः ।
याभिर्विरचिताभिश्च मोदन्ते मन्त्रदेवताः ॥
ऋज्वीं च मध्यमां कृत्वा तर्जनीं मध्यपर्वणि ।
संयोज्याऽऽकुञ्चयेत् किञ्चिन् मुद्रैषाऽङ्कुशसंज्ञिका ॥
—म० महा०, पू० ख०, प्र० त० ।

'ॐ वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः' इति, 'ॐ सं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इति, अर्क-वह्नि-चन्द्रमण्डलानि सम्पूज्य, 'वम्' इति 'धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, 'हूम्' इति कवचेनाऽवगुण्ठ्य, 'फट्' इत्यस्त्रेण संरक्ष्य, तत्र प्रणवं दशवारं जपेत् ।

इति सामान्याऽर्घ्यस्थापनविधिः ।

सामान्यार्घ्यस्थजलेनाऽऽत्मानं पूजोपकरणानि चाऽभिषिच्य, ततो विशेषार्घ्यस्थापनं कुर्यात् । तद्यथा—

विशेषार्घ्यस्थापनविधिः

'ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हूँ स्वाहा' इति मण्डलं विरच्य, ततो नवमिति भुवं सम्मृज्य । तत्र त्रिकोणवृत्तभूगृहात्मकं मण्डलं

'षोडशकलात्मने नमः' पर्यन्त तीन मन्त्रों को पढ़ क्रमशः सूर्य, अग्नि एवं चन्द्रमण्डल का (अर्घ्यपात्रस्थ जल में) पूजन करे, और 'वम्' मन्त्र पढ़ कर धेनुमुद्रा दिखाते हुए उसे अमृतमय बनावे । 'हूम्' इस कवच मन्त्र द्वारा अर्घ्यपात्र के चारों ओर जल से घेर कर 'फट्' इस अस्त्रमन्त्र से उसकी रक्षा करे, पुनः दश बार प्रणव मन्त्र का जप करे ।

इस प्रकार सामान्यार्घस्थापन-विधि समाप्त ।

उपर्युक्त विधि से स्थापित सामान्यार्घ के जल से अपने को तथा तारा पूजन-सामग्री को अभिषिक्त कर तदनन्तर देवी की पूजा के लिए विशेषार्घ्य स्थापित करे ।

उसकी विधि इस प्रकार है—सर्वप्रथम 'ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हूँ स्वाहा' इस मन्त्र को पढ़कर गोलाकार मण्डल निर्माण करे, फिर 'नवम्'

---

१. अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठाऽनामिका पुनः ।
तथा तु तर्जनी मध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता ॥
—मेरुतं, अष्टम प्र०, श्लो० ३५

विधाय, तत्र आधारशक्तिं कूर्मशेषौ च सम्पूज्य, तत्राधारम् 'ह्रीं फट्' इति मन्त्रेण संस्थाप्य, पूर्वोक्त-वह्निमण्डलमन्त्रेण तत्तन्मण्डलमभ्यर्च्य, तत्र शङ्खम् 'हूँ फट्' इति मन्त्रेण प्रक्षालितं संस्थाप्य, मन्त्रचतुष्टयं जपन् शङ्खमर्चयेत् । तद्यथा--

'ह्राँ ह्रीं ह्रूँ कालीकपालाय नमः, स्त्राँ-स्त्रीं-स्त्रूं तारिणी-कपालाय नमः, ह्रां ह्रीं ह्रूं नीलकपालाय नमः, ह्रां स्त्रीं हूँ स्वर्ग-कपालाय सर्वाधाराय सर्वोर्ध्वाय सर्वशुद्धिमयाय सर्वासुर-रुधिरारुणाय शुभ्राय सुराभाजनाय देवीकपालाय नमः' इति मन्त्रचतुष्टयम् ।

इस मन्त्र को पढ़ कर मण्डल-भूमि को शुद्ध करे। तदनन्तर त्रिकोण, उसके ऊपर वृत्त, उसके ऊपर भूपुर का निर्माण करे। उस मण्डल में 'आधारशक्त्यै नमः, कूर्माय नमः, शेषाय नमः' इन मन्त्रों को पढ़ कर क्रमशः आधारशक्ति, कूर्म और शेष का पूजन करे। पुनः 'ह्रीं फट्' इस मन्त्र से आधारशक्ति को स्थापित कर, उसमें 'वह्निमण्डलाय दश-कलात्मने नमः' इस अग्नि मन्त्र से अग्नि का पुष्प, अक्षत से पूजन करे। और 'हूँ फट्' इस मन्त्र को पढ़ कर, उस आधारशक्ति पर प्रक्षालित शङ्ख स्थापित करे। पुनः नीचे लिखे हुए चार मन्त्रों को पढ़ कर उस शङ्ख का पूजन करे।

वे चार मन्त्र १—'ह्रीं ह्रीं ह्रूं कालीकपालाय नमः'। २—स्त्राँ स्त्रीं स्त्रूं तारिणीकपालाय नमः। ३—ह्रां ह्रीं ह्रूं नीलकपालाय नमः। ४—'ह्राँ स्त्रीं हूँ' से लेकर 'देवीकपालाय नमः' पर्यन्त जानना चाहिए।

ततः पूर्वोक्तार्कमण्डलमन्त्रेण तन्मण्डलं सम्पूज्य, ततो मूलमन्त्रेण शङ्खे जलं निधाय, स्वधाबुद्ध्या तत्र गन्ध-पुष्पाऽक्षतान् क्षिपेत्। तत्र त्रिखण्डां मुद्रां प्रदर्श्य, तत्र पूर्वोक्तचन्द्रमण्डलमन्त्रेण तन्मण्डलं सम्पूज्य, 'ऐं ह्रीं श्रीं हों ओं ह्रीं त्रीं हूँ फट् ह्सौँ हूँ' इत्यनेनाऽष्टकृत्वो जलमभिमन्त्र्य, 'ह्रीं'मिति मन्त्रेण [1]शङ्खमुद्रां [2]धेनुमुद्रां [3]योनिमुद्रां दर्शयित्वा,

---

तदनन्तर पूर्वोक्त 'आं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः' इस मन्त्र को पढ़ कर मण्डल की पूजा कर 'क्लीं' इस मन्त्र से शङ्ख में जल रखे और 'स्वधा' बुद्धि से उस शङ्खस्थ जल में गन्ध, पुष्प और अक्षत प्रक्षिप्त करे। पुनः त्रिखण्डमुद्रा प्रदर्शित कर पूर्वोक्त 'ॐ डं सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' इस सोम मन्त्र को पढ़ कर, पुनः मण्डल का पूजन कर 'ऐं ह्रीं' से लेकर 'ह्सौं हूँ' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर आठ बार शङ्खस्थ जल को अभिमन्त्रित कर 'ह्रीं' इस मन्त्र को पढ़ते हुए शङ्खमुद्रा,

---

१. वामाङ्गुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना।
कृत्वोत्तानां ततो मुष्टिमङ्गुष्ठं तु प्रसारयेत्॥
वामाङ्गुलयस्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः।
दक्षिणाङ्गुष्ठ-संस्पृष्टा मुद्रैषा शङ्खमुद्रिका॥
म. म., पू. ख., प्र. त.।

२. अन्योन्याभिमुखौ श्लिष्टौ कनिष्ठाऽनामिका पुनः।
तथा तु तर्जनी मध्या धेनुमुद्रा प्रकीर्तिता॥
—मेरुतं., अष्टम प्र., श्लो. ३५.

३. मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके।
अनामिकोर्द्ध्वं-संश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ॥
अङ्गुष्ठाग्रद्वयं न्यसेद् योनिमुद्रेयमीरिता॥
—म. महा., पू. ख., प्रथम तर.।

[1]मत्स्यमुद्रयाऽऽच्छाद्य, दशवारं मूलमन्त्रं जपेत् ।

तत्र वृत्ताष्टदलषट्कोणं ध्यात्वा, देवीं प्रविचिन्त्य, सम्पूज्य, मूलेन चतुर्वारं सन्तर्प्य, 'ऐं ह्रीं ह्स्रौं नम आनन्दभैरवं तर्पयामि' इति मन्त्रेण सन्तर्प्य, तेनाऽर्घ्यतोयेन पूजासाधनानि प्रोक्षयेत् ।

इति विशेषार्घ्यस्थापनविधिः ।

ॐ यथागताभिषेकममाग्नि मे हूँ फट्' इति मन्त्रेण पुष्पं संशोष्य, 'ॐ आँ ह्रीं स्वाहा' इति चित्तशोधनं कुर्यात् ।

धेनुमुद्रा और योनिमुद्रा दिखाते हुए मत्स्यमुद्रा के द्वारा शङ्ख को कुशा से ढँक कर दश वार 'क्रीं' इस मन्त्र का जप करना चाहिए ।

तदनन्तर ऊपर वृत्त, उसके भीतर अष्टदल कमल, उसके भीतर त्रिकोण का ध्यान कर, उसमें बैठी हुई देवी का ध्यान कर पूजा करे और 'क्लीं' इस मन्त्र को चार बार पढ़ कर देवी को तृप्त करे । अनन्तर 'ऐं ह्रीं ह्स्रौं नमः आनन्दभैरवं तर्पयामि' इस मन्त्र से आनन्दभैरव को तृप्त कर, उस अर्घ्यपात्र स्थित जल से अपने को तथा पूजा-द्रव्यों को प्रोक्षित करे ।

इस प्रकार तारापूजन में विशेषार्घ्य स्थापन-विधि समाप्त ।

तदनन्तर साधक 'ॐ यथा' से लेकर 'हूँ फट्' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर फूलों को शुद्ध करे और 'ॐ आँ ह्रीं स्वाहा' पढ़ कर अपने चित्त की शुद्धि करे ।

---

१. दक्षपाणि-पृष्ठदेशे वामपाणितलं न्यसेत् ।
अङ्गुष्ठौ चालयेत् सम्यङ् मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी ।।
—म. म., पू. ख., द्वि. तर. ।

तत ऋष्यादिन्यासं कुर्यात्। तद्यथा—शिरसि, वसिष्ठाय ऋषये नमः। मुखे, अनुष्टुप्-छन्दसे नमः। हृदये, त्र्यम्बक-देवतायै नमः।

ततो हृदयादिन्यासः—ह्रां हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। ह्रूँ शिखायै वषट्। ह्रैं कवचाय हुम्। ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ह्रः अस्त्राय फट।

ततः करन्यासं कुर्यात्। तद्यथा—

ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ह्रैं अनामिकाभ्यां हूम्। ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

पुनः ऋष्यादि न्यास करे। उसकी विधि इस प्रकार है—'वसिष्ठाय ऋषये नमः' पढ़ कर शिर का, 'अनुष्टुप्छन्दसे नमः' पढ़ कर मुख का, 'त्र्यम्बकदेवतायै नमः' पढ़ कर हृदय का स्पर्श करे।

पुनः हृदयादि न्यास करे। उसकी विधि इस प्रकार है—'ह्राँ हृदयाय नमः' मन्त्र से हृदय का, 'ह्रीं शिरसे स्वाहा' पढ़ कर शिर का, 'ह्रूँ' शिखायै वषट्' पढ़ कर शिखा का, 'ह्रैं कवचाय हुम्' पढ़ कर दोनों कन्धों का, 'ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्' पढ़कर दोनों नेत्रों का स्पर्श करे, 'ह्रः अस्त्राय फट्' पढ़ कर अपने चारों ओर चुटकी बजावे।

इसके बाद करन्यास करे। उसकी विधि इस प्रकार है—

'ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः' मन्त्र से हाथ के दोनों अँगूठों का, 'ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा' से दोनों तर्जनी का, 'ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट्' मन्त्र से दोनों मध्यमा का, 'ह्रैं अनामिकाभ्यां हूम्' पढ़ कर दोनों अनामिका का, 'ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्' पढ़कर दोनों कनिष्ठिका का तथा 'ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्' पढ़ कर दोनों हाथ के तलवे का स्पर्श करना चाहिए।

ततो मूलेन त्रिधाव्यापकन्यासं कुर्यात्। पुनः मूलेन स्वबीजेन वा प्राणायामत्रयं कुर्यात्। तद्यथा—चतुर्वारजपेन पूरकः, षोडशवारजपेन कुम्भकः; अष्टवारजपेन रेचकः। तद्विपरीतो द्वितीयः। तद्विपरीतस्तृतीयः।

ततः षट्कोणाऽष्टदलभूपुरात्मकयन्त्रं विलिख्य, तन्मध्ये ह्सौंबीजं विलिख्य, यन्त्रसंस्कारं च कृत्वा। तत्र मध्ये मेधा-प्रज्ञा-विद्या-धी-धृति-स्मृति-बुद्धिविद्येश्वर्यः पूज्याः।

ततः पुष्पं गृहीत्वा, 'ह्सौं-सरस्वतीयोगपीठाय नमः' इति यन्त्रमध्ये पुष्पं प्रक्षिपेत्। तत्पश्चात् देवीं ध्यायेत्। तद्यथा—

पुनः 'ऐं ओं' इत्यादि षडक्षर मूल मन्त्र पढ़ कर तीन बार व्यापक न्यास करे, फिर मूल मन्त्र से अथवा बीजाक्षर (क्रीं) इस मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करे। चार बार मूल मन्त्र पढ़ कर पूरक, सोलह बार पढ़कर कुम्भक और आठ बार पढ़कर रेचक इस प्रकार प्रथम प्राणायाम, फिर दूसरी बार इसके विपरीत अर्थात् आठ बार मूल मन्त्र पढ़ कर पूरक, सोलह बार पढ़कर कुम्भक तथा चार बार पढ़ कर रेचक करे। पुनः तीसरा प्राणायाम सोलह बार मूल मन्त्र पढ़ कर पूरक, चार बार पढ़ कर कुम्भक तथा आठ बार पढ़ कर रेचक करे।

तदनन्तर षट्कोण, उसके बाहर अष्टदल कमल एवं उसके ऊपर भूपुर लिखकर यन्त्र निर्माण करे। उसके बीच भाग (त्रिकोणमध्य) में 'ह्सौं' बीज मन्त्र लिख कर यन्त्र का संस्कार करे। और उसके बीच में मेधा, प्रज्ञा, विद्या, धी, धृति, स्मृति तथा बुद्धिस्वरूपा विद्येश्वरियों का पूजन करे।

तदनन्तर हाथ में पुष्प लेकर 'ह्सौं सरस्वतीयोगपीठाय नमः' इस मन्त्र से यन्त्र के मध्य में पुष्प रख देवे। तथा निम्नलिखित देवी के आकार का ध्यान करे।

देवीध्यानम्

विश्वव्यापक-वारिमध्य-विलसच्छ्वेताम्बुजन्मास्थितां
कर्त्रीं खड्ग-कपाल-नीलनलिनै राजत्करामिन्दुभाम् ।
काञ्ची-कुण्डल-हारकङ्कणलसत्-केयूरमञ्जीरता-
माप्तैर्नागवरै-र्विभूषिततनूमारक्त-नेत्रत्रयाम् ॥१॥

पिङ्गोग्रैकजटां ललत्स्वरसनां दंष्ट्राकरालाननां
चर्मद्वैपिवरं कटौ विदधतीं श्वेतास्थिपट्टालिकाम् ।
अक्षोभ्येण विराजमानशिरसं स्मेराननाम्भोरुहां
तारां शावहृदासनां दृढकुचामम्बां त्रिलोक्याः स्मरेत् ॥२॥

देवी-ध्यान—विश्व में व्याप्त, जल के मध्य में खिले हुऐ सुशोभित श्वेत कमलासन पर जो बैठी हुई हैं, जिनके हाथों में छुरी, तलवार, कपाल और नीलवर्ण का कमल शोभा पा रहा है, जिनके शरीर की कान्ति चन्द्रमा के समान निर्मल है, काञ्ची, कुण्डल, कङ्कण, केयूर और मञ्जीर के आभूषणों से जो जगमगा रही हैं, बड़े-बड़े नाग जिनके शरीर में लिपटे हुए हैं, और जिनके तीनों नेत्र ईषद् रक्त वर्ण की लालिमा से युक्त हैं, उन भगवती तारा का मैं ध्यान करता हूँ ॥१॥

जिनकी जटाओं का अग्रभाग पीत वर्ण से युक्त है, कटि (कमर) में काञ्ची शोभा पा रही है, जिनके दाँत अत्यन्त भयानक हैं और जो कटिभाग में श्वेतास्थि से युक्त चीते का चर्माम्बर धारण की हैं एवं जिनके शिर पर अक्षोभ्य शोभा दे रहा है, जिनका मुख-कमल मन्दस्मित से युक्त है, जो शवासन पर विराजमान हैं, जिनका कुचमण्डल अत्यन्त कठिन है ऐसी त्रिलोक-जननी ताराम्बा का साधक ध्यान करे ॥२॥

इति ध्यात्वा, करकच्छपिकां बद्ध्वा, तत्र पुष्पाऽक्षतं गृहीत्वा। ततो मूलाधारात् कुण्डलिनीमुत्थाप्य, द्वितीयां मूर्तिं निस्सार्य, तन्मुखे 'सोऽहम्' इति प्रदीपकलिकां जीवमूर्तिं निःक्षिप्य, तां सहस्रदलपद्मस्थब्रह्मणा संयोज्य, चन्द्रमण्डलस्थाऽमृतेन सन्तोष्य, कुण्डलिन्या जीवमूर्तिं वियोज्य, दक्षिणनासापुटेन निस्सृतं पुष्पाऽक्षतं विभाव्य, तत्पुष्पाक्षत-षट्कोणाऽष्टदल-भूगृहात्मकयन्त्र निःक्षप्य, तत्र देवीमावाहयेत्। तद्यथा—

'महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥'

इस प्रकार देवी का ध्यान कर हाथ को कच्छपिका के समान बाँध कर, हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर मूलाधार चक्र से कुण्डलिनी को ऊपर उठाते हुए, उस कुण्डलिनी से दूसरी मूर्त्ति निकाल कर उसके मुख में 'सोऽहम्' रूप दीपकलिका को जीवमूर्त्ति में स्थापित कर, उसे मस्तक में स्थित सहस्रदल पद्मस्थ ब्रह्म के साथ मिला कर वहीं पर स्थित चन्द्रमण्डलस्थ अमृत से तृप्त कर कुण्डलिनी से जीवमूर्ति को अलग करे। फिर दाहिनी नाक से निकले हुए पुष्पाक्षत का ध्यान कर, उन पुष्पाक्षतों को षट्कोण, अष्टदल एवं भूपुर से युक्त यन्त्र में चढ़ा कर उस यन्त्र पर 'महापद्म' से लेकर 'परमेश्वरि' पर्यन्त मन्त्र पढ़ते हुए देवी का आवाहन करे।

मन्त्रार्थ इस प्रकार है—जो महापद्मवन में निवास करती हैं, जिनका शरीर सच्चिदानन्दस्वरूप है, जो सबका कल्याण करने वाली हैं, एवम्भूता हे परमेश्वरि! आप इस यन्त्र में आओ।

इति पठित्वा, मूलं च पठन् 'अमुकदेवि इहागच्छ इह तिष्ठ मम पूजां गृहाण,' 'इह सन्निधेहि इह सन्निरुध्यस्व, इह सम्मुखी भव' इति तत्तन्मुद्राः प्रदर्श्य, एष पुष्पाञ्जलिः मूलमन्त्रमुच्चार्य, 'अमुकदेवि ! वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य हूँ फट् स्वाहा अमुकदेव्यै नमः' इति पठन् पुष्पाञ्जलिपञ्चकं क्षिपेत् ।

इदं पाद्यं मूलमन्त्रमुच्चार्य, 'अमुकदेव्यै नमः ।' इदमाचमनीयं मूलमन्त्रमुच्चार्य, 'अमुकदेव्यै नमः' इति पठित्वा दद्यात् । एष मधुपर्कः मूलमन्त्रमुच्चार्य 'अमुकदेव्यै नमः' इति पठित्वा मधुपर्कं दद्यात् । इदं स्नानीयं मूलमन्त्रमुच्चार्य 'अमुकदेव्यै नमः' इति देवीं स्नापयेत् । एवं वसन-भूषणे

इतना मन्त्र पढ़कर पुनः 'ऐं ॐ' इत्यादि मूल मन्त्र पढ़े और पुनः 'तारे देवि इहागच्छ' पढ़ कर आवाहन करे, 'इह तिष्ठ' पढ़ कर आसन देवे, 'मम पूजां गृहाण' पढ़ कर पूजा की अनुमति प्रदान करे । 'इह सन्निधेहि, इह सन्निरुध्यस्व' पढ़ कर यन्त्र में देवी का सन्निधान करे । पुनः आवाहन और सन्निधान की मुद्रा प्रदर्शित करे । 'ऐं ॐ ह्रीं क्रीं' आदि मूल मन्त्र पढ़ कर 'तारे देवि वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य हूँ फट् स्वाहा, तारादेव्यै नमः' पर्यन्त मन्त्र पाँच बार पढ़ कर पाँच पुष्पाञ्जलि देवी को समर्पित करे ।

इदं पाद्यं 'ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हूँ फट् तारादेव्यै नमः' इस मन्त्र को पढ़ कर भगवती तारा को पाद्य देवे । इसी प्रकार 'इदमाचमनीयं ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हूँ फट् तारादेव्यै नमः' पढ़ कर आचमन प्रदान करे । 'एष मधुपर्कः ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हूँ फट् तारादेव्यै नमः' पढ़ कर मधुपर्क प्रदान करे । 'इदं स्नानीयं ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हूं फट् तारादेव्यै नमः' पढ़ कर स्नानार्थ जल समर्पित करे । इसी प्रकार मूल मन्त्र के प्रथम पूजा की

दद्यात् । इमानि पुष्पाणि मूलमन्त्रमुच्चार्य 'वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य हूँ फट् स्वाहा अमुकदेव्यै वौषट्' इति पठित्वा, पुष्पाणि दद्यात् । तत आवरणपूजां कुर्यात् । तद्यथा–

आवरण-पूजा

पूर्वे गणेशं पूजयेत् । तद्यथा—गं गणेश इहागच्छ इह तिष्ठेत्यादिना पूजयेत् । पुष्पदाने विशेषमनुः–'गं गणेशवज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य फट् स्वाहा' इत्यनेन पुष्पं दद्यात् ।

एवं बटुकं दक्षिणे पूजयेत् । एवं क्षेत्रपालं पश्चिमे पूजयेत् । उत्तरे योगिनीं पूजयेत् ।

ततो देव्या मस्तके अक्षोभ्यं पूजयेत् । 'अक्षोभ्यं वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' इति मन्त्रेणाऽक्षोभ्यं पूजयेत् ।

वस्तु तदनन्तर मूल मन्त्र, तत्पश्चात् 'तारादेव्यै नमः' पढ़ कर वस्त्र, भूषण समर्पित करे । फिर 'इमानि पुष्पाणि ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हूँ फट् वज्र-पुष्पं प्रतीक्ष्य हूँ फट् स्वाहा तारादेव्यै वौषट्' इतना मन्त्र पढ़ कर भगवती तारा को पुष्प समर्पित करे । तदनन्तर आवरण-पूजा करे ।

आवरण-पूजा—यन्त्र के पूर्व में गणेश पूजन करे । उसकी विधि—'गं गणेश, इहागच्छ इह तिष्ठ' मन्त्र पढ़ कर आवाहन करे और आसन देवे । पुनः 'गं गणेशाय नमः' मन्त्र पढ़ कर आचमन, जलादि से उनका पूजन करे । इसी प्रकार सर्वोपचार से पूजन कर 'गं गणेश, वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य फट् स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर गणेश जी को पुष्प समर्पित करे ।

इसी प्रकार दक्षिण में बटुक, पश्चिम में क्षेत्रपाल और उत्तर में योगिनियों का भी तत्तन्मन्त्रों से पूजन करे ।

तदनन्तर देवी के मस्तक पर 'अक्षोभ्यं वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर अक्षोभ्य की पूजा करे ।

ततः षट्कोणेषु षडङ्गं पूजयेत् ।

तद्यथा—

'एकजटायै नमः' इति हृदये । 'तारिण्यै नमः' इति शिरसि । 'वज्रोदकायै नमः' इति शिखायाम् । 'उग्रतारायै नमः' इति कवचे । 'महापरिशरायै नमः' इति नेत्रे । 'पिङ्गोग्रैकजटायै नमः' इति दिक्षु पूजयेत् ।

ततो दिग्दलेषु 'वैरोचनमसिताभं पद्मनाभं शङ्खपाण्डुरं वैरोचनवज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' इत्यादि-पुष्पदाने मन्त्रः । नामकं मामकं पाण्डुरं तारकं विदिक्षु पूजयेत् । पुष्पदाने मन्त्रः प्राग्वत् ।

तत्पश्चात् षट्कोण में 'एकजटायै नमः' से 'पिङ्गोग्रैकजटायै नमः' पर्यन्त छः मन्त्रों से षडङ्ग की पूजा करे और 'एकजटायै नमः' से हृदय, 'तारिण्यै नमः' से शिर, 'वज्रोदकायै नमः' से शिखा, 'उग्रतारायै नमः' से दोनों हाथ, 'महापरिशरायै नमः' से दोनों नेत्रों का स्पर्श कर, 'पिङ्गोग्रैकजटायै नमः' मन्त्र पढ़ कर चारों दिशाओं में चुटकी बजावे ।

पुनः अष्टदल कमल के चारों दिशाओं में वैरोचन, असिताभ, पद्मनाभ और शङ्खपाण्डुर का पूजन करे । पूजा के बाद 'वैरोचनवज्र-पुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर वैरोचन को पुष्पाञ्जलि प्रदान करे । पुनः अन्य तीन देवताओं का क्रमशः इसी प्रकार सम्बोधन पूर्वक, आदि में नाम निवेश कर 'वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' पढ़ कर पुष्प समर्पित करे । तदनन्तर अष्टदल के कोने में नामक, मामक, पाण्डुर तथा तारक का भी नाम में चतुर्थ्यन्त पूर्वक 'नमः' लगा कर पूजन करें। और तत्तन्नामों को सम्बोधन पूर्वक 'वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' पढ़ कर पुष्प समर्पित करे ।

ततो भूगृहस्य चतुर्द्वारेषु पूर्वादितः पद्मान्तक-जन्मान्तक-विघ्नान्तक-नरकान्तकान् पूजयेत् । पुष्पदाने मन्त्रः प्राग्वत् ।

ततस्तद्बाह्ये इन्द्रादीन् दिक्पालान् पूजयेत् । तद्बहिः वज्र-शक्ति-दण्ड-खड्ग-पाशा-ऽङ्कुश-गदा-शूल-चक्राणि पूजयेत् ।

ततो धूपः साङ्गायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै (मूलम्) अमुकदेवतायै नमः । एवं दीपं दद्यात् ।

ततो नैवेद्यं दद्यात् । तद्यथा—स्वर्णादिभाजने नैवेद्यं परिवेष्य वायुबीजं द्वादशवारं जपन्, तज्जातमरुतेन नैवेद्यं संशोध्य दक्षिणकरतले वामकरतलं सन्न्यस्य, तदुत्थेनाऽग्निनाऽग्निबीजं

इस प्रकार षट्कोण, अष्टदल में तत्तद् देवताओं का पूजन कर, भूपुर के चारों द्वार पर पूर्वादि क्रम से पद्मान्तक, जन्मान्तक, विघ्नान्तक और नरकान्तक का भी नाम के अन्त में चतुर्थ्यन्त विभक्ति सहित 'नमः' ('पद्मान्तकाय नमः' इत्यादि) लगा कर चारों द्वार पर पूजन करे । पुष्पाञ्जलि देते समय सम्बोधन पूर्वक 'वज्रपुष्पं प्रतीक्ष्य स्वाहा' इत्यादि पूर्वोक्त विधि के अनुसार मन्त्र पढ़े और पुष्प समर्पित करे ।

तदनन्तर भूपुर के बाहर इन्द्रादि दिक्पालों के नाम में, चतुर्थ्यन्त पूर्वक 'नमः' लगा कर पूजन करे । और उसके भी बाहर वज्र, शक्ति, दण्ड, खड्ग, पाश, अङ्कुश, गदा, शूल तथा चक्र का पूजन करना चाहिए ।

पुष्प समर्पण के पश्चात् देवी को 'साङ्गायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हुँ फट् तारादेव्यै नमः' पर्यन्त पढ़ कर धूप तथा नैवेद्य समर्पित करे । उसकी विधि इस प्रकार है—

सुवर्णादि निर्मित पात्र में नैवेद्य लगा कर वायुबीज बारह बार पढ़ कर उसकी हवा से नैवेद्य को शुद्ध कर, दाहिने हाथ की हथेली पर बायाँ हाथ रख कर, उससे उठी हुई अग्नि के द्वारा बारह बार अग्नि-

द्वादशवारं जपनखिलं नैवेद्यदोषं संदह्य, पुनर्वामकरपृष्ठे दक्षिण-हस्तं कृत्वा, तत्र प्रदर्श्य, वंबीजं द्वादशवारं जपन्, तदुत्थया-ऽमृतधारया नैवेद्यमभिषिच्य, पुनर्मूलेनाऽभिषिच्य, तत्स्पृष्ट्वा-ऽष्टशो मूलमन्त्रं जपेत्। धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, गन्ध-पुष्पैस्तदर्चयेत्।

ततो नैवेद्यभाजनं वामाऽङ्गुष्ठेन संस्पृश्य, दक्षिणहस्तेन जलं धृत्वा, मूलं पठन्, 'इदं नैवेद्यं साङ्गायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै सावरणायै अमुकदेव्यै नमः' इति नैवेद्यमुत्सृज्य, अङ्गुष्ठाऽनामिकाभ्यां नैवेद्यमुद्रां प्रदर्श्य, सपुष्पकराभ्यां त्रिः प्रोद्धरन् ग्रासमुद्रां वामहस्तेन प्रदर्शयेत्।

बीज (रम्) का जप करते हुए, नैवेद्य के समस्त दोषों को दूर कर, पुनः बायें हाथ के हथेली के पृष्ठ भाग में दाहिना हाथ रख कर नैवेद्य रखते हुए 'वं' इस वरुण बीज को बारह बार जपते हुए, उससे उत्पन्न अमृतधारा द्वारा नैवेद्य को अभिषिञ्चित करे। पुनः मूल मन्त्र से अभिषिञ्चित करे। और नेवेद्य पात्र का स्पर्श करते हुए आठ बार पुनः मूल मन्त्र का जप करे। फिर धेनुमुद्रा प्रदर्शित कर गन्ध और पुष्प से नैवेद्य की पूजा करे।

तदनन्तर नैवेद्य के पात्र को बायें अँगूठे से स्पर्श करते हुए, दाहिने हाथ में जल लेकर मूल मन्त्र पढ़ते हुए 'इदं नैवेद्यं साङ्गायै सायुधायै सपरिवारायै सवाहनायै सावरणायै तारादेव्यै नमः' पढ़ कर नैवेद्य को वहीं रख देवे। तदनन्तर अङ्गुष्ठ और अनामिका अङ्गुलि से पुनः नैवेद्यमुद्रा प्रदर्शित कर, पुष्पयुक्त दोनों हाथों से तीन बार (नैवेद्य पात्र) ऊपर उठा कर ग्रासमुद्रा प्रदर्शित कर बायें हाथ से नैवेद्य प्रदर्शित करे।

ततः प्राणादिमुद्रां दर्शयेत् । 'ॐ प्राणाय स्वाहा' इति पठन् कनिष्ठा-ऽनामिका-ऽङ्गुष्ठैः प्राणमुद्रां दर्शयेत् । ततः 'ॐ अपानाय स्वाहा' इति पठंस्तर्जनीमध्यमा-ऽङ्गुष्ठैः अपानमुद्रां दर्शयेत् । ततः 'ॐ उदानाय स्वाहा' इति पठननामामध्यमा-ऽङ्गुष्ठैरुदानमुद्रां दर्शयेत् । ततः 'ॐ व्यानाय स्वाहा' इति पठन् तर्जन्यनामा-मध्यमा-ऽङ्गुष्ठैर्व्यानमुद्रां दर्शयेत् । ततः 'ॐ समानाय स्वाहा' इति पठन् सर्वाङ्गुलीभिः समानमुद्रां प्रदर्शयेत् ।

ततो देवीं सन्तुष्टां विभाव्य, पानीयं दद्यात् । मूलमन्त्रमुच्चार्य्य, इदं पानीयममुकदेव्यै नमः । इदमाचमनीयममुकदेव्यै नमः । इदं ताम्बूलम्, एष पुष्पाञ्जलिश्चाऽमुकदेव्यै नमः ।

तदनन्तर प्राणादिमुद्रा प्रदर्शित करे । 'ॐ प्राणाय स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर कानी, अनामिका तथा अँगूठे को मिला कर प्राणमुद्रा प्रदर्शित करे । पुनः 'ॐ अपानाय स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर तर्जनी, मध्यमा और अँगूठे को मिला कर अपानमुद्रा प्रदर्शित करे । फिर 'ॐ उदानाय स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर अनामिका, मध्यमा तथा अँगूठे को मिला कर उदान मुद्रा, इसी प्रकार 'ॐ व्यानाय स्वाहा' मन्त्र पढ़ कर तर्जनी, अनामिका, मध्यमा तथा अँगूठे को मिला कर व्यानमुद्रा तथा 'ॐ समानाय स्वाहा' मन्त्र पढ़कर सम्पूर्ण अङ्गुलियों को मिला कर समानमुद्रा प्रदर्शित करे ।

तत्पश्चात् भोजन से देवी को सन्तुष्ट होने की कल्पना कर मूल मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'इदं पानीयं तारादेव्यै नमः' मन्त्र पढ़ कर आचमन करावे । पुनः मूल मन्त्र पढ़ कर 'इदं ताम्बूलं तारादेव्यै नमः' पढ़ कर ताम्बूल तथा मूल मन्त्र पूर्वक 'तारादेव्यै नमः' पढ़ कर देवी को पुष्पाञ्जलि समर्पित करना चाहिए ।

पूर्ववत् ऋष्यादिन्यास-करन्यास-षडङ्गन्यासान् ध्यानं च विधाय,

'ह्रीं माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान् मे सिद्धिदा भव ॥'

इति पठन्, मूलमन्त्रेण मालां सम्पूज्य, यथाशक्ति जपं कुर्यात् ।

जपान्ते, पुनः प्राणायामादिकं विधाय, देवीं ध्यात्वा,

'ॐ गुह्याऽतिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि ! त्वत्प्रसादान् महेश्वरि ! ॥'

इति पठन्, तेजोमयं मण्डलं ध्यायन्, देव्या वामहस्ते जपं समर्पयेत् । पुनः पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा, स्तोत्र-कवचादिकं पठेत् ।

जपविधि—इस प्रकार देवी-पूजा के अनन्तर पूर्वोक्त क्रम से जप के पहले ऋष्यादि न्यास, करन्यास और हृदयादि षडङ्ग न्यास करे और देवी का ध्यान कर 'ह्रीं माले' से लेकर 'सिद्धिदा भव' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर मूल मन्त्र से माला की पूजा कर यथाशक्ति देवीमन्त्र का जप करना चाहिए ।

जप कर लेने के पश्चात् पुनः तीन प्राणायामादि क्रिया करे और देवी का ध्यान कर 'ॐ गुह्याति' से लेकर 'महेश्वरि' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर तेजोमण्डल का ध्यान करते हुए, देवी के बायें हाथ में जप समर्पित करना चाहिए। पुनः आठ बार पुष्पाञ्जलि समर्पित कर तारास्तोत्र, ताराकवच, ताराहृदय और तारोपनिषद् आद का पाठ करना चाहिए।

ततः प्रदक्षिणीकृत्य, दण्डवत् प्रणिपत्य, ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा मदीयं च सकलं देव्यै ते समर्पयेत्।

ततः पुष्पाञ्जलिं गृहीत्वा,

'ॐ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं सुरेश्वरि !।
यदर्चितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ १ ॥
आवाहनं च पूजां च तन्माहात्म्यं जपं तथा।
विसर्जनं न जानामि श्रीदेवि ! त्वं क्षमस्व मे ॥ २ ॥
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन् न्यूनमधिकं कृतम्।
विपरीतं च तत्सर्वं क्षमस्व परमेश्वरि ! ॥ ३ ॥
'एष पुष्पाञ्जलिरमुकदेव्यै नमः'। इति क्षमाप्य, तत्पश्चात्—
'ॐ गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वरि !।
पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च ॥ ४ ॥

पाठ के अन्त में देवी की प्रदक्षिणा कर दण्डवत् प्रणाम कर 'ॐ 'इतः पूर्वं' से लेकर 'मदीयं च सकलं देव्यै ते' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर देवी को अपना सर्वस्व ब्रह्मार्पण कर देवे।

तदनन्तर पुष्पाञ्जलि हाथ में लेकर 'ॐ मन्त्रहीनं०' से 'एष पुष्पाञ्जलिस्तारादेव्यै नमः' पर्यन्त मन्त्र को पढ़ते हुए पुष्पाञ्जलि प्रदान करे और पूजापराध के लिए देवी से क्षमा माँगे। तत्पश्चात्— 'ॐ गच्छ गच्छ' से 'पुनरागमनाय च' पर्यन्त मन्त्र पढ़ते हुए संहारमुद्रा

इति संहार[1]मुद्रया पुष्पमेकं गृहीत्वा, देवीं विसृज्य, तत्पुष्पम् ऐशान्यां पात्रान्तरे क्षिपेत् ।

पुनस्तत्र पात्रे चण्डेश्वरीं समभ्यर्च्य,

'ॐ चण्डेश्वरि महादेवि निर्माल्यैश्चन्दनादिभिः ।
लेह्य-चोष्या-ऽन्नपानादि निर्माल्यं स्रग्विलेपनम् ॥
निर्माल्यभोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया ॥१॥'

'इदं निर्माल्यं श्रीचण्डेश्वर्यै नमः' इति पठन् निर्माल्यं क्षिपेत् ।

ततः किञ्चिद् देवी-नैवेद्यम् 'उच्छिष्टचाण्डाल्यै नमः' इति पठंस्तस्यै दद्यात् । तत्पश्चाद् नैवेद्यं स्वयं भुञ्जीत ।

इति तारा-रहस्ये तारासपर्यासरणिः समाप्ता ।

*

द्वारा एक फूल ग्रहण कर देवी का विसर्जन करे और उस पुष्प को (यन्त्र के) ईशान कोण में किसी दूसरे पात्र में रख देवे ।

पुनः उसी पात्र में 'चण्डेश्वर्यै नमः' पढ़ कर चण्डेश्वरी का पूजन करे तथा 'ॐ चण्डेश्वरि' से लेकर 'श्रीचण्डेश्वर्यै नमः' पर्यन्त मन्त्र पढं कर सारा निर्माल्य चण्डेश्वरि को समर्पित कर देवे ।

उसके बाद कुछ नैवेद्य 'उच्छिष्टचाण्डाल्यै नमः' मन्त्र पढ़ कर उसे दे देना चाहिए, फिर उस नैवेद्य को स्वयं भोजन करे ।

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्या सहित तारा-रहस्य में
तारा-पूजन-विधि-समाप्त ।

---

१. अधोमुखे वामहस्ते ऊर्द्ध्वं स्याद् दक्षहस्तकम् ।
क्षिप्त्वाऽङ्गुलीरङ्गुलीभिः सङ्ग्रथ्य परिवर्तयेत् ॥
एषा संहारमुद्रा स्याद् विसर्जनविधौ स्मृता ।
—मन्त्रमहा०, पू० ख०, द्वि० त० ।

तारास्तोत्रम्

मातर्नीलसरस्वति प्रणमतां सौभाग्यसम्पत्प्रदे
प्रत्यालीढपदस्थिते शवहृदि स्मितानना‌म्भोरुहे ।
फुल्लेन्दीवरलोचने[1] त्रिनयने कर्त्री कपालोत्पले
खड्गञ्चादधती त्वमेव शरणं त्वामीश्वरीमाश्रये ॥ १ ॥
वाचामीश्वरि भक्तकल्पलतिके[2] सर्वार्थसिद्धीश्वरि
गद्य-प्राकृत - पद्यजातरचना -[3] सर्वार्थसिद्धिप्रदे ।
नीलेन्दीवरलोचनत्रययुते कारुण्यपारावारे
सौभाग्यामृतवर्द्धनेन[4] कृपया सिञ्चत्वमस्मादृशम् ॥ २ ॥

प्रणाम करने वाले भक्तों को सौभाग्य-सम्पत्ति प्रदान करने वाली, शव के हृदय पर बायाँ पैर आगे और दाहिना पैर पीछे रख कर वीरासन पर विराजमान भगवति मन्दस्मितकमलानने, विकसित-कमलनयने, त्रिनयने ! छुरी, कपाल, नील कमल और खड्गधारण करने वाली, हे नीलसरस्वति मातः ! तुम्हीं मेरी शरण हो, इसलिए मैं तुम स्वामिनी का आश्रय लेता हूँ ॥ १ ॥

वाणी की अधिष्ठात्री देवि ! भक्तों को अभीष्ट देने वाली कल्पलते ! सर्वार्थसिद्धियों की स्वामिनि ! गद्य और प्राकृतपद्यरचना में सर्वार्थसिद्धि देने वाली, नीले कमलों के समान तीन नेत्रों वाली, करुणापारावारे ! हे मातः, तुम मेरे सौभाग्यामृत को बढ़ाते हुए अपनी करुणा-दृष्टि से मेरे–जैसे दीन की ओर देखो ॥ २ ॥

---

१. 'लोचनत्रययुते' इत्यपि पाठः । २. 'सिद्धिप्रदे' इति पाठान्तरम् ।
३. 'सर्वात्मसिद्धिप्रदे' इति वा पाठः । ४. 'वर्षणेन' इत्यपि पाठः ।

खर्वे गर्वसमूह-पूरिततनौ सर्पादिवेषोज्ज्वले
व्याघ्रत्वक्-परिवीत-सुन्दरकटि-व्याधूत-घण्टाङ्किते ।
सद्यःकृत्तगलद्-रजःपरिमिलन्-मुण्डद्वयीमूर्द्धज-
ग्रन्थिश्रेणि-नृमुण्डदाम-ललिते भीमे भयं नाशय ॥ ३ ॥
मायानङ्ग-विकाररूप-ललना बिन्द्वर्द्धचन्द्राम्बिके[1]
हूँफट्कारमयि त्वमेव शरणं मन्त्रात्मिके मादृशः ।
मूर्तिस्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलातिसूक्ष्मा परा
वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नुतामाश्रये ॥ ४ ॥
त्वत्पादाम्बुजसेवया सुकृतिनो गच्छन्ति सायुज्यतां
तस्याः श्रीःपरमेश्वर-त्रिनयन-ब्रह्मादि-साम्यात्मनः ।

गायत्रीस्वरूपिणि अथवा कुबेरनिधिरूपे, अपने जवानी के उमङ्ग से परिपूर्ण शरीर में, श्वेत सर्पों के लिपटे रहने के कारण उज्ज्वल वेष धारिणि, व्याघ्रचर्माम्बर से आवृत कटि में, मनोहरक्षुद्रघण्टिका के शब्दों से विराजमान और सद्यः काटे गये रक्तानुलिप्त दो मुण्डों के केश की ग्रन्थि से युक्त, नृमुण्डमाला धारण करने से अत्यन्त सुशोभित, हे भीमे ! भय को दूर करो ॥ ३ ॥

माया बीज (ह्रीं) कामबीज क्रीं इस पर बिन्द्वर्ध रूप अर्द्धचन्द्र देने से 'ह्रीं क्रीं' हुआ, तदनन्तर 'हुं फट्' लगा देनेसे 'ह्रीं क्रीं हुँ फट् स्वरूप मन्त्रात्मिके ! मेरे-जैसे अनाथ को तुम्हीं शरण देने वाली हो । हे मातः ! स्थूल, अतिसूक्ष्म तथा परा रूप से तुम तीन प्रकार की हो, तुम्हें वेद भी जानने में असमर्थ हैं । इस प्रकार उपासक प्राज्ञों से किसी-किसी प्रकार नमन की जाने वाली मातः ! मैं तुम्हारा आश्रय ग्रहण करता हूँ ॥४॥

हे मातः ! भाग्यवान् लोग तुम्हारे चरण-रज की सेवा करने से सायुज्य पदवी प्राप्त करते हैं । विष्णु, ब्रह्मा तथा शिव में उसी देवी की

---

१. 'इङ्गिते' इति पाठान्तरम् ।

संसाराम्बुधि-मज्जनेऽपटुतनुर्देवेन्द्रमुख्यान् सुरान्
मातस्त्वत्पदसेवने हि विमुखान् किं मन्दधीः सेवते ॥५॥
मातस्त्वत्पदपङ्कजद्वयरजो मुद्राङ्ककोटीरिणः-
स्ते देवा जयसङ्गरे विजयिनो निश्शङ्कमङ्के गताः ।
देवोऽहं भुवने न मे सम इति स्पर्द्धां वहन्तः परा-
स्तत्तुल्यां नियतं यथाशुचिरवी नाशं व्रजन्ति स्वयम् ॥६॥
त्वन्नामस्मरणात् पलायनपरा द्रष्टुं च शक्ता न ते
भूत-प्रेत-पिशाच-राक्षसगणा यक्षाश्च नागाधिपाः ।
दैत्या दानव-पुङ्गवाश्च खचरा व्याघ्रादिका जन्तवो
डाकिन्यः कुपितान्तकश्च मनुजो मातः क्षणं भूतले ॥७॥

श्री विद्यमान है, किन्तु हे मातः ! संसाररूपी समुद्र में डूबते हुए मूर्ख मन्दधी प्राणी तुम्हारी सेवा से विमुख रहने वाले इन्द्रादि देवताओं की व्यर्थ में सेवा करते रहते हैं ॥ ५ ॥

हे मातः ! तुम्हारे दोनों चरण-कमल के रज की मुद्रा से अङ्कित देवगण जब संग्राम में विजयी हो गये और तुम्हारी शरण में रहने से सर्वथा निःशङ्क हो गये तब उन्हें गर्व हो गया कि हम देवता हैं और हमारे समान अन्य कोई नहीं है, ऐसी स्पर्धा करते हुए वे जिस समय तुम्हारी समता करने लगे, उसी समय वे इस प्रकार नष्ट हो गये, जिस प्रकार वर्षा काल में सूर्य अदृश्य हो जाते हैं ॥ ६ ॥

हे मातः ! तुम्हारे नाम-स्मरण मात्र से क्षण मात्र में भूत, प्रेत, पिशाच, राक्षस, यक्ष, सर्प, दैत्य, दानव, आकाशचारी, व्याघ्रादिक जन्तु एवं डाकिनी बहुत क्या कहें, कुपित मृत्यु के समान भयानक मनुष्य भी बहुत दूर भाग जाते हैं और तुम्हारे नाम लेने वाले की ओर वे देख भी नहीं सकते ॥ ७ ॥

लक्ष्मीः सिद्धिगणश्च पादुकमुखाः सिद्धास्तथा वैरिणां
स्तम्भश्चाऽपि वराङ्गने गजघटास्तम्भस्तथा मोहनम् ।
मातस्त्वत्पदसेवया खलु नृणां सिद्ध्यन्ति ते ते गुणाः
क्लान्तः कान्तमनोभवश्च भवति क्षुद्रोऽपि
वाचस्पतिः ॥ ८ ॥

ताराष्टकमिदं पुण्यं भक्तिमान् यः पठेन्नरः ।
प्रातर्मध्याह्नकाले च सायाह्ने नियतः शुचिः ॥ ९ ॥
लभते कवितां विद्यां सर्वशास्त्रार्थवित् भवेत् ।
लक्ष्मीमनश्वरां प्राप्य भुक्त्वा भोगान् यथेप्सितान् ॥१०॥
कीर्तिं कान्तिं च नैरुज्यं प्राप्यान्ते मोक्षमाप्नुयात् ॥११॥

इति तारा-रहस्ये नीलतन्त्रोक्तं तारास्तोत्रं समाप्तम् ।

*

हे मातः ! तुम्हारे चरण-कमल की सेवा से मनुष्यों के कौन-कौन मनोरथ सिद्ध नहीं होते, उसे लक्ष्मी प्राप्त हो जाती हैं, सभी सिद्धियाँ मिल जाती हैं, उसके वैरियों का तथा वैरियों के हस्ति-समूहों का स्तम्भन हो जाता है, वह सब को मोहित कर लेता है, कुरूप भी तुम्हारी सेवा से कामदेव के समान कान्तिमान् हो जाता है और मूर्ख भी वाचस्पति हो जाता है ॥ ८ ॥

जो मनुष्य पवित्र होकर नियम से भक्ति-युक्त हो इस पुण्यप्रद ताराष्टक का पाठ प्रातः, मध्याह्न तथा सायङ्काल में करता है, उसे कविता और विद्या प्राप्त होती है और वह सर्वशास्त्रवेत्ता हो जाता है। उसे कभी नष्ट न होने वाली लक्ष्मी प्राप्त होती हैं और मनोभिलषित भोग प्राप्त होते रहते हैं। वह कीर्त्ति, कान्ति तथा नैरुज्य प्राप्त कर अन्त में मुक्त हो जाता है ॥ ९-११ ॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्या सहित तारा-रहस्य में
नीलतन्त्रोक्त तारास्तोत्र समाप्त ।

ताराकवचम्

ईश्वर उवाच

कोटितन्त्रेषु गोप्या हि विद्यातिभयमोचिनी ।
दिव्यं हि कवचं तस्याः शृणुष्व सर्वकामदम् ॥ १ ॥

विनियोगः

ॐ ताराकवचस्याऽक्षोभ्य ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दो भगवती तारादेवता सर्वमन्त्रसिद्धये विनियोगः ।

ॐ प्रणवो मे शिरः पातु ब्रह्मारूपा महेश्वरी ।
ह्रींकारः पातु ललाटे बीजरूपा महेश्वरी ॥ २ ॥
स्त्रींकारः पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी ।
हूँकारः पातु हृदये भवानीशक्तिरूपधृक् ॥ ३ ॥

ईश्वर बोले हे—हे पार्वति ! करोड़ों मन्त्रों में गोपनीय जो विद्या अत्यन्त भय से मनुष्यों को मुक्त करती है वह भगवती तारा का दिव्य कवच है, उसके पाठ से सारी कामनाएँ पूर्ण होती हैं, अतः तुम उसे सुनो ॥ १ ॥

विनियोग-तारा कवच के पाठ से पूर्व 'ॐ ताराकवचस्य' से लेकर 'सर्व मन्त्रसिद्धये विनियोगः' पर्यन्त मन्त्र पढ़ कर जल को पृथ्वी पर गिरा देना चाहिए ।

कवच —ॐ प्रवण, जो ब्रह्मरूपा महेश्वरी का रूप है, मेरे शिर की रक्षा करे, ह्रींकार जो महेश्वरी का बीज मन्त्र स्वरूप, है, वह मेरे ललाट की रक्षा करे ॥ २ ॥

स्त्रींकार जो महेश्वरी का लज्जा स्वरूप है, वह मेरे मुख की रक्षा करे, भवानी की शक्ति को धारण करने वाला हूँकार मेरे हृदय की रक्षा करे ॥ ३ ॥

फट्कारः पातु सर्वाङ्गे सर्वसिद्धिफलप्रदा ।
खर्वा मां पातु देवेशी भ्रूमध्ये सर्वसिद्धिदा ॥ ४ ॥
नीला मां पातु देवेशी गण्डयुग्मे भयापहा ।
लम्बोदरी सदा पातु कर्णयुग्मं भयापहा ॥ ५ ॥
व्याघ्रचर्मावृतकटिः पातु देवी शिवप्रिया ।
पीनोन्नतस्तनी पातु पार्श्वयुग्मे महेश्वरी ॥ ६ ॥
रक्तवर्तुलनेत्रा च कटिदेशे सदाऽवतु ।
ललज्जिह्वा सदा पातु नाभौ मां भुवनेश्वरी ॥ ७ ॥
कराळास्या सदा पातु लिङ्गे देवी हरप्रिया ।
पिङ्गोग्रैकजटा पातु जङ्घायां विघ्ननाशिनी ॥ ८ ॥

सर्वसिद्धिफलप्रदा भगवती देवेशी का फट्कार स्वरूप में सर्वाङ्ग की रक्षा करे, और सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाली देवेशी, जो गायत्री-स्वरूपा अथवा कुबेर की निधिस्वरूपा है वह दोनों भ्रुवों के मध्य-भाग की रक्षा करे ॥ ४ ॥

भयहरण करने वाली देवेशी नीला मेरे दोनों गण्डस्थलों की रक्षा करें। भयापहा लम्बोदरी देवी सर्वदा मेरे दोनों कानों की रक्षा करें ।५।

कटिप्रदेश में व्याघ्रचर्म धारण करने वाली शिवप्रिया मेरी रक्षा करें। मोटे और ऊँचे स्तनों वाली महेश्वरी मेरे दोनों पार्श्व की रक्षा करें ।।६।

रक्त और गोल नेत्र वाली मेरे कटिप्रदेश की रक्षा करें। लपलपाती जीभवाली भुवनेश्वरी मेरी नाभि की रक्षा करें ॥ ७ ॥

करालमुख वाली हरप्रिया देवी सर्वदा मेरे लिङ्ग की रक्षा करें, पिङ्गाग्रभाग जटा वाली विघ्ननाशिनी जङ्घा की रक्षा करें ॥ ८ ॥

खड्गहस्ता महादेवी जानुचक्रे महेश्वरी ।
नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम ॥ ९ ॥
नागकुण्डलधर्त्री च पातु पादयुगे ततः ।
नागहारधरा देवी सर्वाङ्गं पातु सर्वदा ॥ १० ॥
न गाङ्गधरा देवी पातु पाण्डवदेशतः ।
चतुर्भुजा सदा पातु गमने शत्रुनाशिनी ॥ ११ ॥
खड्गहस्ता महादेवी पातु मां विजयप्रदा ।
नीलाम्बरधरा देवी पातु मां विघ्ननाशिनी ॥ १२ ॥
कर्तृहस्ता सदा पातु विवादे शत्रुमध्यतः ।
ब्रह्मरूपधरा देवी सङ्ग्रामे पातु सर्वदा ॥ १३ ॥

हाथ में खड्ग धारण करने वाली महादेवी महेश्वरी मेरे जानुचक्र की रक्षा करें। नीलवर्ण वाली सर्वदा मेरे दोनों जानुओं की रक्षा करें ॥ ९ ॥

नागों का कुण्डल धारण करने वाली देवी मेरे दोनों पैरों की रक्षा करें, नागों का हार धारण करने वाली देवी सर्वदा मेरे सर्वाङ्गों की रक्षा करें ॥ १० ॥

अङ्गों में नाग धारण करने वाली देवी वन में हमारी रक्षा करें, चार भुजा वाली शत्रुनाशिनी देवी यात्राकालमें हमारी रक्षा करें॥११॥

खड्गहस्ता, विजयप्रदा महादेवी मेरी रक्षा करें, नीलाम्बर धारण करने वाली विघ्ननाशिनी देवी मेरी रक्षा करें ॥ १२ ॥

शत्रु से विवाद होने पर छुरी हाथ में धारण करने वाली देवी मेरी सदा रक्षा करें। ब्रह्मरूपधारिणी संग्राम में मेरी सर्वदा रक्षा करें॥१३॥

नागकङ्कणधात्री च भोजने पातु सर्वदा ।
शवकर्णा महादेवी शयने पातु सर्वदा ॥ १४ ॥
वीरासनधरा देवी निद्रायां पातु सर्वदा ॥ १५ ॥
धनुर्बाणधरा देवी पातु मां विघ्नसङ्कुले ।
नागाञ्चितकटिः पातु देवी मां सर्वकर्मसु ॥ १६ ॥
छिन्नमुण्डधरा देवी कानने सर्वदाऽवतु ।
चितामध्यस्थिता देवी मारणे पातु सर्वदा ॥ १७ ॥
द्वीपिचर्मधरा देवी पुत्र-दार-धनादिषु ।
अलङ्कारान्विता देवी पातु मां हरवल्लभा ॥ १८ ॥
रक्ष रक्ष नदीकुञ्जे हूँ हूँ हूँ फट्समन्विते ।
बीजरूपा महादेवी पर्वते पातु सर्वदा ॥ १९ ॥

नागों का कङ्कण धारण करने वाली देवी भोजन काल में हमारी रक्षा करें। कानों में शव का आभूषण धारण करने वाली देवी शयन काल में हमारी रक्षा करें ॥ १४ ॥

वीरासन से स्थित रहने वाली देवी निद्रा में हमारी रक्षा करें।१५।

विघ्न उपस्थित होने पर धनुषबाण धारण करने वाली देवी हमारी रक्षा करें। नागों की करधनी से विभूषित देवी सभी कर्मों में हमारी रक्षा करें ॥ १६ ॥

छिन्नमुण्डमाला वाली देवी वन में हमारी रक्षा करें, चितामध्य में रहने वाली देवी मारते समय हमारी रक्षा करें ॥ १७ ॥

चित्ते का चर्म धारण करने वाली देवी मेरे पुत्र, दार और धन की रक्षा करें। अलङ्कारों को धारण करने वाली हरवल्लभा मेरी रक्षा करें ॥ १८ ॥

हूँ हूँ हूँ फट्समन्विते देवि ! आप नदी और कुञ्ज में हमारी रक्षा करो। बीजरूपा महादेवी पर्वत पर हमारी रक्षा करें ॥ १९ ॥

मणिधरि वज्रिणी देवी महाप्रतिसरे तथा ।
रक्ष रक्ष सदा हूँ हूँ ॐ ह्रीं स्वाहा महेश्वरी ॥२०॥
पुष्पकेतुराजार्हते कानने पातु सर्वदा ।
ॐ वज्रपुष्पे हूँफट् च पाण्डवे पातु सर्वदा ॥२१॥

पुष्पे ! पुष्पे ! महापुष्पे ! पातु पुत्रान् महेश्वरि ! ।
ॐ स्वाहाशक्तिसंयुक्ता दारान् रक्षतु सर्वदा ॥२२॥
ॐ पवित्रवज्रभूमे हूँफट्-स्वाहा-समन्विता ।
पूरिका पातु मां देवी सर्वविघ्नविनाशिनी ॥२३॥
आसुरेखे वज्ररेखे हूँफट्-स्वाहा-समन्विता ।
पाताले पातु मां देवी नागिनी मानसञ्चिता ॥२४॥

मणिधरि वज्रिणी देवी महान् यात्राकालमें हमारी रक्षा करें । हूँ हूँ ॐ ह्रीं स्वाहा-स्वरूपा महेश्वरी मेरी सर्वदा रक्षा करें ॥ २० ॥

पुष्पकेतु राजा से पूजी जाने वाली देवी कानन में हमारी रक्षा करें । ॐ वज्रपुष्पे हूँफट्-स्वरूपा देवी पाण्डवस्थान में हमारी रक्षा करें ॥ २१ ॥

पुष्पे, हे पुष्पे, हे महापुष्पे ! हे महेश्वरि, मेरे पुत्रों की रक्षा करो । स्वाहा शक्ति से संयुक्त देवी मेरी स्त्री की रक्षा करें ॥ २२ ॥

ॐ पवित्रवज्रभूमे ! हुँफट्–स्वाहा–समन्विते देवी, चारों ओर मेरी रक्षा करें । सम्पूर्ण विघ्नों का नाश करने वाली और कार्यों को पूर्ण करने वाली पूरिका देवी मेरी रक्षा करें ॥ २३ ॥

असुरेखे, वज्ररेखे हुँ फट् स्वाहा-समन्विता नागिनी मनसा देवी पाताल में हमारी रक्षा करें ॥ २४ ॥

ह्रींकारी पातु पूर्वे मां शक्तिरूपा महेश्वरी ।
स्त्रींकारी दक्षिणे पातु स्त्रीरूपा परमेश्वरी ॥२५॥

हूँस्वरूपा महामाया पातु मां क्रोधरूपिणी ।
कस्वरूपा महामाया पश्चिमे पातु सर्वदा ॥२६॥

उत्तरे पातु मां देवी ढस्वरूपा हरप्रिया ।
मध्ये मां पातु देवेशी हूँस्वरूपा नगात्मजा ॥२७॥

नीलवर्णा सदा पातु सर्वत्र वाग्भवी सदा ।
तारिणी पातु भवने सर्वैश्वर्यप्रदायिनी ॥२८॥

विद्यादानरता देवी पातु वक्त्रे सरस्वती ।
शास्त्रे वादे च सङ्ग्रामे जले च विषमे गिरौ ॥२९॥

पूर्व में ह्रींकारी, शक्तिस्वरूपा माहेश्वरी हमारी रक्षा करें। स्त्रींकारी स्त्रीरूपा परमेश्वरी दक्षिण दिशा में हमारी रक्षा करें ॥२५॥

हूँस्वरूपा क्रोधरूपिणी महामाया हमारी रक्षा करें। कस्वरूपा महमाया देवी पश्चिम में हमारी रक्षा करें ॥२६॥

ढकारस्वरूपा हरप्रिया देवी उत्तर में मेरी रक्षा करें। हूँस्वरूपा नागत्मजा देवी मध्य में हमारी रक्षा करें ॥२७॥

नीलवर्णा सरस्वती देवी हमारी सर्वदा रक्षा करें। ऐश्वर्यप्रदायिनी तारिणी देवी भवन में हमारी रक्षा करें ॥२८॥

विद्या-दान में निरत रहने वाली सरस्वती देवी मुख में, शास्त्र में, शास्त्रार्थ में, सङ्ग्राम में, जल में तथा विषमस्थल में हमारी रक्षा करें ॥२९॥

भीमरूपा सदा पातु श्मशाने भयनाशिनी ।
भूतप्रेतालये घोरे दुर्गे भीषणाऽवतु ॥३०॥
पातु नित्यं महेशानी सर्वत्र शिवदूतिका ।
कवचस्य च माहात्म्यं नाऽहं वर्षशतैरपि ॥३१॥
शक्नोमि कथितुं देवि ! भवेत्तस्य फलं तु यत् ।
पुत्रदारेषु बन्धूनां सर्वदेशे च सर्वदा ॥३२॥
न विद्यते भयं तस्य नृपपूज्यो भवेच्च सः ।
शुचिर्भूत्वाऽशुचिर्वाऽपि कवचं सर्वकामदम् ॥३३॥
प्रपठन् वा स्मरन् मर्त्यो दुःख-शोक-विवर्जितः ।
सर्वशास्त्रे महेशानि ! कविराड् भवति ध्रुवम् ॥३४॥

भयनाशिनी भीमा देवी श्मशान में हमारी रक्षा करें। भीषणा देवी भूत-प्रेत युक्त स्थान में तथा घोर सङ्कट में हमारी रक्षा करें ॥ ३० ॥

शिवदूतिका महेश्वरी हमारी नित्य रक्षा करें। हे देवि ! मैं इस तारा-कवच के माहात्म्य का जितना फल होता है, उसे सैकड़ों वर्षों तक कहने में भी समर्थ नहीं हूँ। इस कवच का पाठ करने वाले पुरुष के पुत्र, स्त्री और बन्धुओं को किसी भी स्थान में किसी प्रकार का भय नहीं होता और वह राजपूज्य होता है, चाहे पवित्र रहे अथवा अपवित्र रहे, किसी भी अवस्था में सम्पूर्ण अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाले इस कवच का पाठ करने वाला अथवा स्मरण करने वाला पुरुष दुःख, शोक से रहित हो जाता है। और सम्पूर्ण शास्त्रों का वह ज्ञाता तथा कवि-सम्राट् होता है ॥३१-३४॥

सर्ववागीश्वरो मर्त्यो लोकवश्यो धनेश्वरः ।
रणे द्यूते विवादे च जयस्तस्य भवेत् ध्रुवम् ॥३५॥

पुत्र-पौत्रान्वितो मर्त्यो विलासी सर्वयोषिताम् ।
शत्रवो दासतां यान्ति सर्वेषां वल्लभः सदा ॥३६॥

गर्वी खर्वी भवत्येव वादी ज्वलति दर्शनात् ।
मृत्युश्च वशतां याति दासस्तस्याऽवनीश्वरः ॥३७॥

प्रसङ्गात् कथितं सर्वं कवचं सर्वकामदम् ।
प्रपठन् वा स्मरन् मर्त्यः शापानुग्रहणे क्षमः ॥३८॥

आनन्दवृन्द-सिन्धूनामधिपः कविराड् भवेत् ।
सर्वयोगीश्वरो मर्त्यो लोकबन्धुः सदा सुखी ॥३९॥

इस कवच का पाठ करने वाला सर्ववागीश्वर, लोक को अपने वश में करने वाला कुबेर के समान धनवान् होता है और युद्ध में, जूए में, विवाद में उसकी विजय निश्चित है ॥३५॥

वह पुत्र-पौत्रादि से युक्त, सभी स्त्रियों का प्रिय होता है। उसके शत्रु उसके दास बन जाते हैं और वह सर्वदा सबका प्रिय हो जाता है ॥३६॥

इस कवच का पाठ करने वाले पुरुष के दर्शन मात्र से अहङ्कारी का अहङ्कार तथा प्रतिपक्षी भस्म हो जाते हैं। मृत्यु वश में हो जाती है और राजा लोग उसका दास बन जाते हैं ॥३७॥

शिवजी कहते हैं—हे देवि! इस प्रकार मैंने प्रसंगवश सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाला कवच तुमसे कह दिया। इसका पाठ करने वाला अथवा स्मरण करने वाला पुरुष शापदान तथा अनुग्रह दोनों कार्यों में समर्थ हो जाता है ॥३८॥

गुरोः प्रसादमासाद्य विद्यां प्राप्य सुगोपिताम् ।
तत्राऽपि कवचं देवि ! दुर्लभं भुवनत्रये ॥४०॥

गुरुर्देवो हरः साक्षात् पत्नी तस्य हरप्रिया ।
अभेदेन यजेद् यस्तु तस्य सिद्धिरदूरतः ॥४१॥

मन्त्राचारा महेशानि ! कथिताः पूर्वतः प्रिये ! ।
नाभौ ज्योतिस्तथा वक्त्रे हृदये परिचिन्तयेत् ॥४२॥

ऐश्वर्यं सुकवित्वं च रुद्रश्च सिद्धिदायकः ।
तं दृष्ट्वा साधकं देवि ! लज्जायुक्ता भवन्ति ते ॥४३॥

वह आनन्दसमुद्र का स्वामी, कविराट्, योगीश्वर, लोक-बन्धु तथा सदा सुखी रहता है ॥३९॥

गुरु को प्रसन्न कर गुप्त-से-गुप्त विद्या प्राप्त की जा सकती है। किन्तु हे देवि ! यह तारा-कवच तीनों लोक में सर्वथा अप्राप्य है ॥४०॥

जो अपने गुरु को साक्षात् महेश्वर और गुरुपत्नी को पार्वती समझकर अभेद-बुद्धि से सेवा करता है, उसे शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है ॥४१॥

हे प्रिये, हे महेशानि ! मन्त्र की सिद्धि के समस्त उपाय मैंने पहले कह दिया है, उस देवी का ध्यान नाभि, ज्योति में, मुख में तथा हृदयप्रदेश में करना चाहिए ॥४२॥

उसे नित्यैश्वर्य की प्राप्ति होती है और भगवान् रुद्र उसे सिद्धि प्रदान करते हैं। ऐसे साधक को देखकर अन्य लोग लज्जित हो जाते हैं ॥४३॥

स्वर्गे मर्त्ये च पाताले ये देवाः सुरसत्तमाः ।
प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥४४॥

विघ्नात्मानश्च ये देवाः स्वर्गे मर्त्ये रसातले ।
प्रशंसन्ति सदा सर्वे तं दृष्ट्वा साधकोत्तमम् ॥४५॥

इति ते कथितं देवि ! मया सम्यक् प्रकीर्तितम् ।
भुक्ति-मुक्तिकरं साक्षात् कल्पवृक्षस्वरूपकम् ॥४६॥

आसाद्याद्य गुरुं प्रसाद्य य इदं कल्पद्रुमालम्बनं
मोहेनापि मदेन वा न हि जनो जाड्येन वा मुह्यति ।
सिद्धोऽसौ भुवि सर्वदुःख-विपदां पारं प्रयात्यन्तके
मित्रं तस्य नृपश्च देवि ! विपदो नश्यन्ति तस्याशु च॥४७॥

देवता तथा देवेन्द्र सभी उस उत्तम साधक को देखकर स्वर्ग, मृत्युलोक तथा पाताल में उसकी प्रशंसा करते हैं ॥४४॥

हे देवि ! बहुत क्या कहें, विघ्न करने वाले देवता भी ऐसे उत्तम साधक को देखकर स्वर्ग, मृत्युलोक तथा पाताल लोक में सर्वत्र उसकी प्रशंसा करते हैं ॥४५॥

हे देवि ! इस प्रकार भोग, मोक्ष देने वाला साक्षात् कल्पवृक्ष के समान यह तारा-कवच अच्छी प्रकार से मैंने तुमसे कहा ॥४६॥

जो गुरु को प्रसन्न कर कल्पवृक्ष के समान मनोरथ को पूर्ण करने वाले इस कवच को प्राप्त कर लेता है, वह पुरुष मोह, मद अथवा जड़ता से कभी मोहित नहीं होता । वह सिद्ध समस्त विपत्तियों को पार कर जाता है, और हे देवि ! राजा लोग उसके मित्र हो जाते हैं एवं शीघ्रता से उसकी विपत्ति नष्ट हो जाती है ॥४७॥

तद्गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि वै भुवि ।
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम् ॥४८॥

इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो भजते नरः ।
अल्पायुर्निर्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥४९॥

लिखित्वा धारयेद् यस्तु कण्ठे वा मस्तके भुजे ।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् यद्यन्मनसि वर्तते ॥५०॥

गोरोचनाकुङ्कुमेन रक्तचन्दनकेन वा ।
यावकैर्वा महेशानि लिखेन् मन्त्रं विशेषतः ॥५१॥

अष्टम्यां मङ्गलदिने चतुर्दश्यामथाऽपि वा ।
सन्ध्यायां देवदेवेशि ! लिखेन् मन्त्रं समाहितः ॥५२॥

ब्रह्मास्त्र-जैसे भयानक शस्त्र उसके शरीर में निवास करते हैं, उसके घर में स्थिर लक्ष्मी और मुख में सर्वदा सरस्वती का वास होता है ॥४८॥

जो इस कवच को बिना जाने ही तारा की पूजा करता है, वह अल्पायु, निर्धन और मूर्ख हो जाता है, इसमें संशय नहीं ॥४९॥

जो इस कवच को लिख कर शिर, कण्ठ अथवा हाथ में धारण करता है, वह मन में जो भी मनोरथ करता है वे सभी पूर्ण हो जाते हैं ॥५०॥

हे महेश्वरि ! गोरोचन, कुंकुम (रोरी), रक्तचन्दन अथवा विशेष कर यावक (लाख) से तारा मन्त्र को लिखना चाहिए ॥५१॥

अष्टमी के दिन, मङ्गलवार को, चतुर्दशी में या सन्ध्या काल में शुद्धचित्त हो तारामन्त्र लिखना चाहिए ॥५२॥

मघायां श्रवणायां वा रेवत्यां च विशेषतः।
सिंहराशौ गते चन्द्रे कर्कटस्थे दिवाकरे ॥५३॥
मीनराशौ गुरौ याते वृश्चिकस्थे शनैश्चरे।
लिखित्वा धारयेद् यस्तु साधको भक्तिभावतः।
अचिरात् तस्य सिद्धिः स्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा ॥५४॥
वादी मूकति दूषकः स्तवयति क्षोणीपतिर्दासति
गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति वैश्वानरः शीतति।
आचाराद् भवसिद्धिरूपमपरं सिद्धो भवेद् दुर्लभं
त्वां वन्दे भव-भीति-भञ्जनकरीं नीलां गिरीशप्रियाम् ॥५५॥

इति तारा-रहस्ये नीलतन्त्रोक्तं परमरहस्यकमुग्रताराकवचं समाप्तम्।

मघा, श्रवण विशेषकर रेवती नक्षत्र मे, सिंहराशि पर चन्द्रमा के रहने पर अथवा कर्क राशि के सूर्य होने पर, मीन राशिके बृहस्पति, वृश्चिक के शनि होने पर भक्तिभावपूर्वक साधक को तारा मन्त्र लिख कर धारण करने से शीघ्र ही सिद्धि प्राप्त हो जाती है, इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है ॥५३-५४॥

तारा मन्त्र को धारण करने से गर्वी का गर्व नष्ट हो जाता है, वह सर्ववेत्ता हो जाता है। उसके सामने वादी मूक हो जाते हैं, निन्दा करने वाला स्तुति करने लगता है, राजा लोग उसके दास हो जाते हैं, अग्नि का भी तेज शान्त हो जाता है। तारा मन्त्र के अनुष्ठान से संसार में शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है और प्रकार से सिद्ध होना सर्वथा दुर्लभ है। मैं संसार के भय को मिटाने वाली महादेव की प्रिया ऐसी नीलाको नमस्कार करता हूँ ॥५५॥

इस प्रकार तारा-रहस्य में, 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका सहित नील तन्त्र में कहा गया, परमगोपनीय उग्रताराकवच समाप्त।

□

तारा-हृदयम्

श्रीशिव उवाच

शृणु पार्वति ! भद्रं ते लोकानां हितकारकम् ।
कथ्यते सर्वदा गोप्यं ताराहृदयमुत्तमम् ॥ १ ॥

श्रीपार्वत्युवाच

स्तोत्रं कथं समुत्पन्नं कृतं केन पुरा प्रभो ! ।
कथ्यतां सर्व-सद्-वृत्तं कृपां कृत्वा ममोपरि ॥ २ ॥

श्रीशिव उवाच

रणे देवासुरे पूर्वं कृतमिन्द्रेण सुप्रिये ! ।
दुष्ट-शत्रु-विनाशार्थं बल-वृद्धि-यशस्करम् ॥ ३ ॥

श्री सदाशिव बोले—हे पार्वती ! तुम्हारा कल्याण हो, अब मैं जो लोकहितकारी किन्तु सर्वदा परमगोपनीय सर्वोत्तम तारा-हृदय कहता हूँ, उसे सुनो ॥१॥

श्रीपार्वती बोलीं—हे प्रभो ! यह तारा-हृदय नामक स्तोत्र कैसे उत्पन्न हुआ और सर्वप्रथम इसे किसने किया ? आप मेरे ऊपर कृपा कर इसका सारा वृत्तान्त सुनाइए ? ॥२॥

श्री शिवजी बोले—हे प्रिये ! पूर्वकाल में जब देवासुर-संग्राम हो रहा था, उस समय अपने दुष्ट शत्रुओं के विनाश करने के लिए तथा अपने बल की वृद्धि एवं यशः-प्राप्ति के लिए इस स्तोत्र को इन्द्र ने किया था ॥३॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीमदुग्र-ताराहृदय-स्तोत्रमन्त्रस्य श्रीभैरव ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, श्रीमदुग्रतारा देवता, स्त्रींबीजं, हूँशक्तिः, नमः कीलकं, सकलशत्रुविनाशार्थे पाठे विनियोगः।

हृदयादिन्यासः

ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः। ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ हूँ शिखायै वषट्। ॐ त्रीं कवचाय हूम्। ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हंसः अस्त्राय फट्।

ताराध्यानम्

ध्यायेत् कोटि-दिवाकर-द्युतिनिभां बालेन्दु-युक्-छेखरां
रक्ताङ्गीं रसनां सुरक्तवसनां पूर्णेन्दुविम्बाननां
पाशं कर्तृ-महाङ्कुशादि दधतीं दोर्भिश्चतुर्भिर्युतां
नानाभूषण-भूषितां भगवतीं तारां जगत्तारिणीम् ॥

विनियोग—ताराहृदय के पाठ से पूर्व 'ॐ अस्य०' से लेकर 'पाठ विनियोगः' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर थोड़ा जल पृथ्वी पर गिरा देवे।

पुनः 'ॐ स्त्रीं हृदयाय नमः' पढ़कर हृदय का, 'ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा' से शिर का, 'ॐ शिखायै वषट्' पढ़कर शिखा का, 'ॐ त्रीं कवचाय हूम्' पढ़कर दोनों बाहुओं का, 'ॐ ऐं नेत्रत्रयाय वौषट्' पढ़कर दोनों नेत्रों का स्पर्श करे। तत्पश्चात् 'ॐ हंसः अस्त्राय फट्' पढ़कर चारों ओर चुटकी बजावे।

तारा-ध्यान—करोड़ों सूर्य के समान देदीप्यमान कान्ति से युक्त, मस्तक पर बालचन्द्र धारण करने वाली, रक्तवर्णा, रसना युक्त, लाल वर्ण का वस्त्र धारण किये हुए, पूर्ण चन्द्रानना, अपने चारों हाथों में पाश, कर्त्तरिका, महाङ्कुशादि को धारण करने वाली, नाना

एवं ध्यात्वा शुभां तारां ततस्तु हृदयं पठेत् ।
तारिणीतत्त्वनिष्ठानां सर्वतत्त्वप्रकाशिका ॥१॥
रामाभिन्ना पराशक्तिः शत्रुनाशं करोतु मे ।
सर्वदा शत्रुसंघम्भे तारा मे कुरुतां जयम् ॥२॥
स्त्रींत्रींस्वरूपिणी देवी त्रिषु लोकेषु विश्रुता ।
तव स्नेहान् मयाख्यातं न पशूनां प्रकाश्यताम् ॥३॥
शृणु देवि ! तव स्नेहात् तारानामानि तत्त्वतः ।
वर्णयिष्यामि गुप्तानि दुर्लभानि जगत्त्रये ॥४॥
तारिणी तरला तारा त्रिरूपा तरणिप्रभा ।
सत्त्वरूपा महासाध्वी सर्वसज्जनपालिका ॥५॥

प्रकार के आभूषणों से अलंकृत, जगत्तारिणी भगवती तारा का ध्यान करना चाहिए।

इस प्रकार कल्याण कारिणी तारा का ध्यान कर तत्पश्चात् तारा-हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। जो तारा-तत्त्वज्ञ पुरुषों को तारने वाली, समस्त तत्त्वों को प्रकाशित करने वाली है ॥१॥

जो राम से अभिन्न पराशक्ति हैं, वे हमारे शत्रुओं का नाश करें। शत्रुओं से सघर्षकाल मे तारा हमारी सर्वदा विजय करती रहें ॥२॥

स्त्रीं-त्रीं-स्वरूपिणी, तीनों लोकों में विख्यात तारा देवी का यह स्तोत्र मैं तुम्हारे स्नेह वश प्रकाशित करता हूँ, इसे मूर्ख जनों में प्रकाशित नहीं करना चाहिए ॥३॥

हे देवि ! तुम्हारे स्नेह से तीनों लोकों में दुर्लभ परम गोपनीय इस तारा नाम को मैं प्रकाशित करता हूँ तुम सुनो ॥४॥

तारिणी, तरला, तारा, त्रिरूपा, तरणिप्रभा, सत्त्वरूपा, महासाध्वी, सर्वसज्जन-पालिका ॥५॥

रमणीया रजोरूपा जगत्सृष्टिकरी परा ।
तमोरूपा महामाया घोररावा भयानका ॥६॥
कालरूपा कालिकाख्या जगद्विध्वंसकारिका ।
तत्त्वज्ञानपरानन्दा तत्त्वज्ञानप्रदानघा ॥७॥
रक्ताङ्गी रक्तवस्त्रा च रक्तमाला प्रशोभिता ।
सिद्धिलक्ष्मीश्च ब्रह्माणी महाकाली महालया ॥८॥
नामान्येतानि ये मर्त्याः सर्वदैकाग्रमानसाः ।
प्रपठन्ति प्रिये ! तेषां किङ्करत्वं करोम्यहम् ॥९॥
तारां तारपरां देवीं तारकेश्वरपूजिताम् ।
तारिणीं भवपाथोधरुग्रतारां भजाम्यहम् ॥१०॥
स्त्रीं-ह्रीं-हूँ-त्रीं-फट्मन्त्रेण जलं जप्त्वाऽभिषेचयेत् ।
सर्वे रोगाः प्रणश्यन्ति सत्यं सत्यं वदाम्यहम् ॥११॥

रमणीया, रजोरूपा, जगत्सृष्टिकरी, परा, तमोरूपा, महामाया, घोररावा, भयानका, ॥६॥

कालरूपा, कालिका, जगद्विध्वंसकारिणी, तत्त्वज्ञान-परानन्दा, तत्त्वज्ञानप्रदा, अनघा, ॥७॥

रक्ताङ्गी, रक्तवस्त्रा, रक्तमाला, प्रशोभिता सिद्धि-लक्ष्मी, ब्रह्माणी, महाकाली, महालया, ॥८॥

हे देवि ! तारा के इन नामों को जो पुरुष समाहित चित्त होकर निरन्तर पढ़ते हैं, मैं उनका दास बन जाता हूँ ॥९॥

तारा, तारपरा, देवी, तारकेश्वरपूजिता, ससार-समुद्र से पार करने वाली उग्रतारा का मैं भजन करता हूँ ॥१०॥

'स्त्रीं ह्रीं हूं त्रीं फट्' इस मन्त्र को पढ़कर यदि रोगी पर जल

त्रीं स्वाहान्तैर्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः ।
तिलकं कुरुते प्राज्ञो लोको वश्यो भवेत् प्रिये ! ॥१२॥
स्त्रीं-ह्रीं त्रीं-स्वाहा-मन्त्रेण श्मशानं भस्म मन्त्रयेत् ।
शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्ता शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति ॥१३॥
ह्रीं-हूँ-स्त्रीं-फडन्तमन्त्रैः पुष्पं संशोध्य सप्तधा ।
उच्चाटनं नयत्याशु रिपूणां नैव संशयः ॥१४॥
स्त्रीं-त्रीं ह्रीं-मन्त्र-वर्य्येण अक्षताश्चाऽभिमन्त्रिताः ।
तत्प्रतिक्षेपमात्रेण शीघ्रमायाति मानिनी ॥१५॥
(हंसः ओं ह्रीं स्त्रीं हूं हूं सः)
इति मन्त्रेण जप्तेन शोधितं कज्जलं प्रिये ! ।
तस्यैव तिलकं कृत्वा जगन्मोहं समाचरेत् ॥१६॥

छिड़क दिया जाय, तो उसके सारे रोग नष्ट हो जाते हैं, यह मैं सत्य-सत्य कहता हूँ ॥११॥

'त्रीं स्वाहा' इस मन्त्र को पढ़कर चन्दन घिसे और उसका तिलक लगाने से हे प्रिये ! सारा संसार उसके वशमें हो जाता है ॥१२॥

'स्त्रीं ह्रीं त्रीं स्वाहा' मन्त्र पढ़कर श्मशानस्थ भस्म का अभिमन्त्रण करे और उसे शत्रु के घर में फेंक दे तो शत्रु की मृत्यु हो जाती है ॥१३॥

'ह्रीं हूँ स्त्रीं फट्' इस मन्त्र से सात बार पुष्प अभिमन्त्रित करे और शत्रु पर उसे फेंक दे तो शत्रु का शीघ्र उच्चाटन हो जाता है, इसमें संशय नहीं ॥१४॥

'स्त्रीं त्रीं ह्रीं' इस श्रेष्ठ मन्त्र से अक्षतों को अभिमन्त्रित कर, उन अक्षतों को किसी भी स्त्री पर फेंक दे तो वह चाहे कितनी भी मानिनी क्यों न हो शीघ्र ही वश में हो जाती है ॥१५॥

तारायाः हृदयं देवि ! सर्वपापप्रणाशनम् ।
वाजपेयादि-यज्ञानां कोटि-कोटिगुणोत्तरम् ॥१७॥
गङ्गादिसर्वतीर्थानां फलं कोटिगुणं स्मृतम् ।
महादुःखे महारोगे सङ्कटे प्राणसंशये ॥१८॥
महाभये महाघोरे पठेत् स्तोत्रं महोत्तमम् ।
सत्यं सत्यं मयोक्तं ते पार्वति प्राणवल्लभे ! ॥१९॥
गोपनीयं प्रयत्नेन न प्रकाश्यमिदं क्वचित् ॥२०॥

इति तारा-रहस्ये श्रीभैरवीतन्त्रे शिव-पार्वती-संवादे
श्रीमदुग्रतारा-हृदयं सम्पूर्णम् ।

'हंसः ओं ह्रीं स्त्रीं हूं हूं सः' इस मन्त्र को जपते हुए काजल का निर्माण करे और उससे तिलक करे तो हे प्रिये ! सारा संसार उसके ऊपर मोहित हो जाता है ॥१६॥

हे देवि ! इस प्रकार यह तारा-हृदय समस्त पापों को दूर करने वाला है, वाजपेयादियज्ञों की अपेक्षा तो यह करोड़ों गुना अच्छा है ॥१७॥

इसके पढ़ने से गङ्गादि समस्त तीर्थों के स्नान से करोड़ गुना फल कहा गया है। महान् दुःख में, महान् रोग में, भारी संकट में, प्राण-बाधा में, महाभय उपस्थित होने पर, महाघोर स्थिति में इस सर्वश्रेष्ठ स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ॥१८-१९॥

हे पार्वती ! हे प्राणवल्लभे, यह तारा-हृदय प्रयत्न से गोपनीय रखना चाहिए, कभी भी इसे प्रकाशित नहीं करना चाहिए ॥२०॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीटीका सहित तारा-रहस्य में श्रीभैरवीतन्त्र में शिव-पार्वती संवादरूप से वर्णित श्रीमदुग्रतारा-हृदय स्तोत्र समाप्त ।

*

तारोपनिषत

ॐ तत्सद्-ब्रह्मतद्रूपं प्रकृतिपरं गगनाभं तत्परम्परमं महत्सत्यं तदहं ह्रींकारं रक्तवर्णं नानाभिस्त्रींकारं पिङ्गलाभं हूङ्कारं विशदाभं मद्-हृदयरूपं भूमण्डलं, फट्कार-धूम्रवर्णं मत्खड्ग-मोङ्कारज्वलद्रूपं मन्मस्तकं वेदा मद्धस्ताश्चन्द्रार्कानला मन्नेत्रा दिवानक्तं मत्पादौ सन्ध्या मत्कर्णौ संवत्सरो मदुदरो मद्दंष्ट्रा पङ्क्तौ मत्पार्श्वौ वारर्तवो मदङ्गुल्यो विद्या मन्नखाः पावको मन्मुखं महीमद्रसना द्यौर्मन्मुखं गगनं मद्धृदयं भक्तिर्मम चर्मरसं मद्रुधिरं वाऽन्नं वासांसि फलानि निरहङ्कारा अस्थीनि, सुधामन्मज्जा, स्थावराणि मद्रोमाणि, पातालादिलोकौ मत्कुचौ, ब्रह्मनादं मन्नाडयं, ज्ञानं मन्मनः, क्षमाबुद्धिः, शून्यं मदासनं, नक्षत्राणि मद्भूषणानि ।

'ॐ तत्सद्' यही ब्रह्म का स्वरूप है, जो प्रकृति से परे आकाश स्वरूप है, वह परे से भी परे है, महत्सत्य है, वही मैं हूँ, ह्रींकार-स्वरूपा, नानाभिस्त्रींकार, पिङ्गल वर्णवाला हूँकार, स्वच्छवर्ण वाला मेरा हृदय, सारा भूमण्डल है, फट्कार धूम्रवर्ण वाला मेरा खड्ग है, ॐकार से प्रज्वलित मेरा मस्तक है, वेद हमारे हाथ हैं, सूर्य-चन्द्रमा और अग्नि ये मेरे तीन नेत्र हैं, दिन-रात मेरे पैर हैं, सन्ध्या मेरे कान हैं, संवत्सर मेरा उदर और दाँत हैं, पङ्क्ति मेरे पार्श्व हैं, बार, ऋतु मेरी अङ्गुलियाँ हैं, अविद्या मेरे नख हैं, अग्नि मेरा मुख है, पृथ्वी मेरी जिह्वा है, द्यौलोक मेरा मुख है, आकाश मेरा हृदय है, भक्ति मेरी ढाल है, रस मेरा रुधिर है, अन्न मेरे वस्त्र हैं। फल

एतद् वैराटकं मद्वपुः मज्जलं सत्त्वं विन्दुस्वरूपं महाकारस्वरूपं ज्योतिर्मयं विद्धि, शिरः-उग्रतारां महोग्रां नीलां धनामेकजटां महामायां प्रकृतिं मां विदित्वा यो जपति मद्रूपाणि यो वेत्ति मन्मन्त्रं यो जपति मद्रूपकल्पितां यो जपति भगं भजति निर्विकल्पः साधकः सदा मद्रूपो भवति ।

सर्वाणि कर्माणि साध्यानि निर्भयो भवति गुरुं नत्वा स्तुत्वा, वस्त्रभूषणानि दत्त्वा, इमामुपनिषद्-विद्यां प्राप्य, मां यो जपति स जीवन्मुक्तो भवति ।

इति तारा-रहस्येऽथर्वणवेदे सौभाग्यकाण्डे तारोपनिषत् समाप्ता ।

मेरी अस्थियाँ हैं, सुधा मेरी मज्जा है, स्थावर-वृक्षादि मेरे रोम हैं, पातालादि लोक मेरे कुचमण्डल हैं, ब्रह्मनाद मेरी नाड़ियाँ हैं, ज्ञान मेरा मन है, क्षमा, बुद्धि और शून्य मेरा आसन है और नक्षत्र मेरे स्वरूप हैं ।

यही मेरा विराट् स्वरूप है, सत्त्व ही मेरा जल है, विन्दुस्वरूप महाकार स्वरूप, ज्योतिर्मय मेरा शिर है । उग्रतारा, महोग्रा, नीला, घना, एकजटा, महामाया और प्रकृतिस्वरूपा मुझे जानकर, जो मेरा जप करता है, मेरा रूप जानता है, मेरे मन्त्र का जप करता है, अथवा ऊपर के कल्पित रूप का ध्यान करता है, उसे समस्त ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं और निर्विकल्प साधक तो जप करने से मेरा स्वरूप ही हो जाता है।

गुरु को नमस्कार कर, उनकी स्तुति कर, उन्हें वस्त्राभूषण प्रदान कर, जो इस उपनिषद् विद्या को प्राप्त करता है, तदनन्तर मेरा जप करता है, उसके सारे कर्म सिद्ध हो जाते हैं । वह निर्भय हो जाता है और वह जीवन्मुक्त हो जाता है ।

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्या सहित तारा-रहस्य में अथर्ववेद के सौभाग्यकाण्ड में वर्णित तारोपनिषत् समाप्त ।

तारा-शतनाम-स्तोत्रम्

श्रीशिव उवाच

तारिणी तरला तन्वी तारा तरुणवल्लरी ।
तीररूपा तरी श्यामा तनुक्षीणपयोधरा ॥१॥

तुरीया तरला तीव्रगमना नीलवाहिनी ।
उग्रतारा जया चण्डी श्रीमदेकजटाशिरा ॥२॥

तरुणी शाम्भवी छिन्नभाला च भद्रतारिणी ।
उग्रा उग्रप्रभा नीला कृष्णा नीलसरस्वती ॥३॥

द्वितीया शोभना नित्या नवीना नित्यनूतना ।
चण्डिका विजयाराध्या देवी गगनवाहिनी ॥४॥

श्रीशिव जी बोले—(१) तारिणी, (२) तरला, (३) तन्वी, (४) तारा, (५) तरुणवल्लरी (६) तीररूपा, (७) तरी, (८) श्यामा, (९) तनुक्षीणपयोधरा ॥ १ ॥

(१०) तुरीया, (११) तरला, (१२) तीव्रगमना, (१३) नीलवाहिनी, (१४) उग्रतारा, (१५) जया, (१६) चण्डी, (१७) श्रीमदेकजटाशिरा ॥२॥

(१८) तरुणी, (१९) शाम्भवी, (२०) छिन्नभाला, (२१) भद्रतारिणी, (२२) उग्रा (२३) उग्रप्रभा, (२४) नीला, (२५) कृष्णा, (२६) नीलसरस्वती, ॥ ३ ॥

(२७) द्वितीया (२८) शोभना, (२९) नित्या, (३०) नवीना, (३१) नित्यनूतना, (३२) चण्डिका, (३३) विजयाराध्या, (३४) देवी, (३५) गगनवाहिनी ॥ ४ ॥

अट्टहास्या करालास्या चरास्यादितिपूजिता ।
सगुणाऽसगुणाराध्या हरीन्द्रदेवपूजिता ॥५॥
रक्तप्रिया च रक्ताक्षी रुधिरास्यविभूषिता ।
बलिप्रिया बलिरता दुर्द्धा बलवती बला ॥६॥
बलप्रिया बलरता बलरामप्रपूजिता ।
ऊर्द्ध्वकेशेश्वरी केशा केशवा सविभूषिता ॥७॥
पद्ममाला च पद्माक्षी कामाख्या गिरिनन्दिनी ।
दक्षिणा चैव दक्षा च दक्षजा दक्षिणेरता ॥८॥
वज्रपुष्पप्रिया रक्तप्रिया कुसुमभूषिता ।
माहेश्वरी महादेवप्रिया पञ्चविभूषिता ॥९॥

---

(३६) अट्टहास्या, (३७) करालास्या, (३८) चरास्या, (३९) अदितिपूजिता, (४०) सगुणा, (४१) असगुणा, (४२) आराध्या, (४३) हरीन्द्रदेवपूजिता, ॥ ५ ॥

(४४) रक्तप्रिया, (४५) रक्ताक्षी, (४६) रुधिरास्यविभूषिता, (४७) बलिप्रिया, (४८) बलिरता, (४९) दुर्द्धा, (५०) बलवती, (५१) बला, ॥६॥

(५२) बलप्रिया, (५३) बलरता, (५४) बलरामप्रपूजिता, (५५) ऊर्द्ध्वकेशेश्वरी (५६) ऊर्द्ध्वकेशा, (५७) केशवा, (५८) सविभूषिता ॥७॥

(५९) पद्ममाला, (६०) पद्माक्षी, (६१) कामाख्या, (६२) गिरिनन्दिनी, (६३) दक्षिणा, (६४) दक्षा, (६५) दक्षजा, (६६) दक्षिणेरता, ॥८॥

(६७) वज्रपुष्पप्रिया, (६८) रक्तप्रिया, (६९) कुसुमभूषिता, (७०) माहेश्वरी, (७१) महादेवप्रिया, (७२) पञ्चविभूषिता, ॥९॥

ईडा च पिङ्गला चैव सुषुम्णाप्राणरूपिणी ।
गान्धारी पञ्चमी पञ्चाननादि-परिपूजिता ॥१०॥
तथ्यविद्या तथ्यरूपा तथ्यमार्गानुसारिणी ।
तत्त्वरूपा तत्त्वप्रिया तत्त्वज्ञानात्मिकाऽनघा ॥११॥
ताण्डवाचार-सन्तुष्टा ताण्डवप्रियकारिणी ।
तालदानरता क्रूरतापिनी तरणिप्रभा ॥१२॥
त्रपायुक्ता त्रपामुक्ता तर्पिता तृप्तिकारिणी ।
तारुण्यभावसन्तुष्टा शक्तिभक्तानुरागिणी ॥१३॥
शिवासक्ता शिवरतिः शिवभक्तिपरायणा ।
ताम्रद्युतिस्ताम्ररागा ताम्रपात्रप्रभोजिनी ॥१४॥

---

(७३) ईडा, (७४) पिङ्गला, (७५) सुषुम्णाप्राणरूपिणी, (७६) गान्धारी, (७७) पञ्चमी, (७८) पञ्चाननादिपरिपूजिता, ॥१०॥

(७९) तथ्यविद्या, (८०) तथ्यरूपा, (८१) तथ्यमार्गानुसारिणी, (८२) तत्त्वरूपा, (८३) तत्त्वप्रिया, (८४) तत्त्वज्ञानात्मिका, (८५) अनघा, ॥११॥

(८६) ताण्डवाचारसन्तुष्टा, (८७) ताण्डवप्रियकारिणी, (८८) तालदानरता, (८९) क्रूरतापिनी, (९०) तरणिप्रभा, ॥१२॥

(९१) त्रपायुक्ता, (९२) त्रपामुक्ता, (९३) तर्पिता, (९४) तृप्तिकारिणी, (९५) तारुण्यभावसन्तुष्टा, (९६) शक्तिभक्तानुरागिणी, ॥१३॥

(९७) शिवासक्ता, (९८) शिवरति, (९९) शिवभक्तिपरायणा, (१००) ताम्रद्युति, (१०१) ताम्ररागा, (१०२) ताम्रपात्रप्रभोजिनी, ॥१४॥

बलभद्रप्रेमरता बलिभुग्बलिकल्पिनी ।
रामरूपा रामशक्ती रामरूपानुकारिणी ॥१५॥
इत्येतत् कथितं देवि ! रहस्यं परमाद्भुतम् ।
श्रुत्वा मोक्षमवाप्नोति तारादेव्याः प्रसादतः ॥१६॥
य इदं पठति स्तोत्रं तारास्तुतिरहस्यकम् ।
सर्वसिद्धियुतो भूत्वा विहरेत् क्षितिमण्डले ॥१७॥
तस्यैव मन्त्रसिद्धिः स्यान्मम सिद्धिरनुत्तमा ।
भवत्येव महामाये सत्यं सत्यं न संशयः ॥१८॥
मन्दे मङ्गलवारे च यः पठेन्निशि संयतः ।
तस्यैव मन्त्रसिद्धिः स्याद् गाणपत्यं लभेत सः ॥१९॥

---

(१०३) बलभद्रप्रेमरता, (१०४) बलिभुक्, (१०५) बलिकल्पिनी, (१०६) रामरूपा, (१०७) रामशक्ती, (१०८) रामरूपानुकारिणी ॥१५॥

हे देवि ! इस प्रकार मैंने यह अद्भुत रहस्य कहा, जिसे सुनने मात्र से तारा देवी के प्रसाद से मनुष्य मुक्त हो जाता है ॥१६॥

जो इस परम गोपनीय तारास्तुति को पढ़ता है, वह सम्पूर्ण सिद्धियों से युक्त हो पृथ्वीमण्डल पर विहार करता है ॥१७॥

इस शतनाम स्तोत्र का पाठ करने वाले को सिद्धि प्राप्त हो जाती है । इस स्तोत्र के पाठ से मुझे भी सर्वश्रेष्ठ सिद्धि प्राप्त हुई है । हे पार्वति, हे महामाये ! यह मैं सत्य-सत्य कह रहा हूँ, इसमें संशय नहीं ॥१८॥

शनिवार अथवा मङ्गल के दिन रात्रि के समय जो संयमपूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करता है, उसे मन्त्रसिद्धि तो होती ही है गाणपत्य पद भी प्राप्त हो जाता है ॥१९॥

श्रद्धयाऽश्रद्धया वाऽपि पठेत् तारा-रहस्यकम् ।
सोऽचिरेणैव कालेन जीवन्मुक्तः शिवो भवेत् ॥२०॥

सहस्रावर्तनाद् देवि ! पुरश्चर्याफलं लभेत् ।
एवं सततयुक्ता ये ध्यायन्तस्त्वामुपासते ॥
ते कृतार्था महेशानि ! मृत्युसंसारवर्त्मनः ॥२१॥

इति तारा-रहस्ये स्वर्णमालातन्त्रोक्तं तारणीशतनामस्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रद्धा से अथवा अश्रद्धा से जो इस तारा-रहस्य का पाठ करता है, वह थोड़े ही समय में जीवन्मुक्त शिव हो जाता है ॥२०॥

इस स्तोत्र का सहस्रावृत्ति (हजार बार) पाठ करने से पुरश्चरण का फल प्राप्त होता है। इस प्रकार हे महेशानि ! तुम्हारा ध्यान करते हुए जो निरन्तर, तुम्हारी उपासना करते हैं, उन्हींका जीवन इस संसार में कृतकृत्य है ॥२१॥

इस प्रकार 'शिवदत्ती' हिन्दी व्याख्यासहित तारा-रहस्य में स्वर्णमाला-तन्त्रोक्त-तारणीशतनामस्तोत्र सम्पूर्ण ।

*

ताराशतनामावली

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीताराशतनामस्तोत्रस्य श्रीशिवऋषिः, तारादेवी, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीताराप्रीत्यिद्वारा समस्ताभिलषित-प्राप्त्यर्थं ताराशतनामस्तोत्रप्रोक्तेन प्रत्येकनाम्नां नमोऽन्तेन कर्पूर-अगुरु-कस्तूरीचन्दन-जलैः, एवं सङ्कलनया ताराऽष्टोत्तरशतनामभिः पूजने विनियोगः ।

हृदयादिन्यासः—ह्रां हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा । ह्रूं शिखायै वषट् । ह्रैं कवचाय हूम् । ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् । ह्रः अस्त्राय फट् ।

करन्यासः—ह्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ह्रूं मध्यमाभ्यां वषट् । ह्रैं अनामिकाभ्यां हूम् । ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । ह्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

देवी-ध्यानम्

विश्वव्यापक-वारिमध्य-विलसच्छ्वेताम्बु-जन्मास्थितां
कर्त्रीं खड्ग-कपाल-नीलनलिनै राजत्करामिन्दुभाम् ।
काञ्ची-कुण्डल-हार-कङ्कणलसत्-केयूर-मञ्जीरता-
मापैर्नागवरै-र्विभूषित-तनूमारक्त-नेत्रत्रयाम् ॥

❀ नामावली ❀

१ ॐ तारिण्यै नमः
२. ॐ तरलायै नमः
३. ॐ तन्व्यै नमः
४. ॐ तारायै नमः
५. ॐ तरुणीवल्लर्यै नमः
६. ॐ तीररूपायै नमः
७. ॐ तर्यै नमः
८. ॐ श्यामायै नमः
९. ॐ तनुक्षीणपयोधरायै नमः
१०. ॐ तुरीयायै नमः
११. ॐ तरलायै नमः
१२. ॐ तीव्रगमनायै नमः
१३. ॐ नीलवाहिन्यै नमः
१४. ॐ उग्रतारायै नमः
१५. ॐ जयायै नमः
१६. ॐ चण्डयै नमः
१७. ॐ श्रीमदेकजटाशिरायै नमः
१८. ॐ तरुण्यै नमः
१९. ॐ शाम्भव्यै नमः
२०. ॐ छिन्नभालायै नमः
२१. ॐ भद्रतारिण्यै नमः
२२. ॐ उग्रायै नमः
२३. ॐ उग्रप्रभायै नमः
२४. ॐ नीलायै नमः
२५. कृष्णायै नमः
२६. ॐ नीलसरस्वत्यै नमः
२७. ॐ द्वितीयायै नमः
२८. ॐ शोभनाय नमः
२९. ॐ नित्यायै नमः
३०. ॐ नवीनायै नमः
३१. ॐ नित्यनूतनायै नमः
३२. ॐ चण्डिकायै नमः
३३. ॐ विजयाराध्यायै नमः
३४. ॐ देव्यै नमः
३५. ॐ गगनवाहिन्यै नमः
३६. ॐ अट्टहास्यायै नमः
३७. ॐ करालास्यायै नमः
३८. ॐ चरास्यायै नमः
३९. ॐ अदितिपूजितायै नमः
४०. ॐ सगुणायै नमः
४१. ॐ असगुणायै नमः
४२. ॐ आराध्यायै नमः
४३. ॐ हरीन्द्रदेवपूजितायै नमः
४४. ॐ रक्तप्रियायै नमः
४५. ॐ रक्ताक्ष्यै नमः
४६. ॐ रुधिरास्यविभूषितायै नमः
४७. ॐ बलिप्रियायै नमः
४८. ॐ बलिरतायै नमः
४९. ॐ दुर्द्धायै नमः
५०. ॐ बलवत्यै नमः
५१. ॐ बलायै नमः
५२. ॐ बलप्रियायै नमः
५३. ॐ बलरतायै नमः

५४. ॐ बलरामपूजितायै नमः
५५. ॐ ऊर्ध्वकेशेश्वर्यै नमः
५६. ॐ ऊर्ध्वकेशायै नमः
५७. ॐ केशवायै नमः
५८. ॐ सविभूषिताय नमः
५९. ॐ पद्ममालायै नमः
६०. ॐ पद्माक्ष्यै नमः
६१. ॐ कामाख्यायै नमः
६२. ॐ गिरिनन्दिन्यै नमः
६३. ॐ दक्षिणायै नमः
६४. ॐ दक्षायै नमः
६५. ॐ दक्षजायै नमः
६६. ॐ दक्षिणेरतायै नमः
६७. ॐ वज्रपुष्पप्रियायै नमः
६८. ॐ रक्तप्रियायै नमः
६९. ॐ कुसुमभूषितायै नमः
७०. ॐ महेश्वर्यै नमः
७१. ॐ महादेवप्रियायै नमः
७२. ॐ पञ्चविभूषितायै नमः
७३. ॐ ईडायै नमः
७४. ॐ पिङ्गलायै नमः
७५. ॐ सुषुम्णाप्राणरूपिण्यै नमः
७६. ॐ गान्धार्यै नमः
७७. ॐ पञ्चम्यै नमः
७८. ॐ पञ्चाननादिपरिपूजितायै नमः
७९. ॐ तथ्यविद्यायै नमः
८०. ॐ तथ्यरूपायै नमः
८१. ॐ तथ्यमार्गानुसारिण्यै नमः
८२. ॐ तत्त्वरूपायै नमः
८३. ॐ तत्त्वप्रियायै नमः
८४. ॐ तत्त्वज्ञानात्मिकायै नमः
८५. ॐ अनघायै नमः
८६. ॐ ताण्डवाचारसन्तुष्टायै नमः
८७. ॐ ताण्डवप्रियकारिण्यै नमः
८८. ॐ तालज्ञानरतायै नमः
८९. ॐ क्रूरतापिन्यै नमः
९०. ॐ तरणिप्रभायै नमः
९१. ॐ अपायुक्तायै नमः
९२. ॐ अपामुक्तायै नमः
९३. ॐ तर्पितायै नमः
९४. ॐ तृप्तिकारिण्यै नमः
९५. ॐ तारुण्यभावसन्तुष्टायै नमः
९६. ॐ शक्तिभक्तानुरागिण्यै नमः
९७. ॐ शिवासक्तायै नमः
९८. ॐ शिवरत्यै नमः
९९. ॐ शिवभक्तिपरायणायै नमः
१००. ॐ ताम्रद्युत्यै नमः
१०१. ॐ ताम्ररागायै नमः
१०२. ॐ ताम्रगात्रप्रभोजिन्यै नमः
१०३. ॐ बलभद्रप्रेमरतायै नमः
१०४. ॐ बलिभुजे नमः
१०५. ॐ बलिकल्पिन्यै नमः
१०६. ॐ रामरूपायै नमः
१०७. ॐ रामशक्त्यै नमः
१०८. ॐ रामरूपानुकारिण्यै नमः

इति आचार्य पण्डित-शिवदत्तमिश्रशास्त्रिकृत-तारा-रहस्ये
ताराशतनामावली समाप्ता ।

*

तारा-तकारादि सहस्रनामस्तोत्रम्

वसिष्ठ उवाच

नाम्नां सहस्रं तारायाः मुखाम्भोजाद् विनिर्गतम् ।
मन्त्रसिद्धिकरं प्रोक्तं तन्मे वद पितामह ! ॥ १ ॥

ब्रह्मोवाच

शृणु वत्स प्रवक्ष्यामि रहस्यं सर्वसिद्धिदम् ।
यस्योपदेशमात्रेण तव सिद्धिर्भविष्यति ॥ २ ॥
महाप्रलयकालादौ नष्टे स्थावर-जङ्गमे ।
महाकारं समाकर्ण्य कृपया संहृतं तनौ ॥ ३ ॥
नाम्ना तेन महातारा ख्याता सा ब्रह्मरूपिणी ।
महाशूलत्रयं कृत्वा तत्र चैकाकिनी स्थिता ॥ ४ ॥

वसिष्ठ जी बोले-हे पितामह ! तारासहस्रनाम जो सभी सिद्धियों को देने वाला है, और उनके मुख-कमल से जो स्वयं कहा गया है, उसे कहिए ॥ १ ॥

ब्रह्मदेव बोले—हे वत्स ! सम्पूर्ण सिद्धियों को देने वाला, परम गोपनीय तारा-सहस्र नाम तुम से कहता हूँ, जिसके उपदेशमात्र से तुम्हें सिद्धि प्राप्त हो जायेगी ॥ २ ॥

महाप्रलय काल में जब सभी स्थावर, जङ्गम नष्ट हो गये तो शिवजी ने इस तारा सहस्र नाम को सुनकर सारी सृष्टि अपने शरीर में समेट ली ॥ ३ ॥

इसीलिए जीवानां तारणात्' वे तारा नाम से विख्यात हुईं, वही ब्रह्मस्वरूपा भी हैं। उन्होंने स्वयं त्रिशूल का निर्माण किया और उस पर अकेले स्थित रहीं ॥ ४ ॥

पुनः सृष्टेश्चिकीर्षाऽभूद् दिव्यसाम्राज्यसंज्ञकम् ।
नाम्नां सहस्रमस्यास्तु तकाराद्यं मया स्मृतम् ॥ ५ ॥
तत्प्रभावेण ब्रह्माण्डं निर्मितं सुदृढं महत् ।
आविर्भूता वयं तत्र यन्त्रैस्तस्याः पुरा द्विज ! ॥ ६ ॥
स्वस्य कार्यार्थिनस्तत्र भ्रान्ता भूम्यां यथा वयम् ।
तवोपदिष्टाः कृपया भवामः सृष्टिकारकाः ॥ ७ ॥
तस्याः प्रसादाद् विप्रेन्द्र ! त्रयो ब्रह्माण्डनायकाः ।
अन्ये सुरगणाः सर्वे तस्याः पादप्रसेवकाः ॥ ८ ॥
पठनाद् धारणात् सृष्टेः कर्त्ताऽहं पालको हरिः ।
तत्त्वाक्षरोपदेशेन संहर्त्ता शङ्करः स्वयम् ॥ ९ ॥

तदनन्तर प्रलय के बाद जब मुझे सृष्टि की चिकीर्षा अर्थात् सृष्टि करने की इच्छा हुई तब मैंने दिव्य साम्राज्य संज्ञक तारासहस्र नाम का, जिसके प्रत्येक नाम के आदि में 'तकार' वर्ण का प्रयोग है, उसे स्मरण किया ॥ ॥

उस सहस्रनाम के प्रभाव से मैंने इस सुदृढ़ ब्रह्माण्ड की रचना की। हे वशिष्ठ जी ! पूर्वकाल मे हम सभी उनके यन्त्र से उत्पन्न हुए हैं॥६॥

पुनः अपने कार्य की सिद्धि के लिए पृथ्वी पर घूमने के समान इधर-उधर घूमने लगे। फिर जब उसने कृपापूर्वक इस सहस्र नाम का हम लोगों को उपदेश किया तब हम सृष्टि करने में समर्थ हुए ॥ ७ ॥

हे विप्रेन्द्र ! यह उसी की कृपा है कि, हम तीन ही इस ब्रह्माण्ड के नायक हुए और अन्य देवता उसके सेवक हुए ॥ ८ ॥

इसके पढ़ने और धारण करने से मैं सृष्टिकर्त्ता, विष्णु सृष्टि-पालक तथा उसी अक्षरोपदेश से सदाशिव स्वयं सृष्टि के संहारक हो गये ॥ ९ ॥

ऋषिच्छन्दादिकं ध्यानं मूलवत् परिकीर्त्तितम् ।
नियोगो मात्रसिद्धौ च पुरुषार्थचतुष्टये ॥१०॥
तारा तारादिपञ्चार्णा तारान्यावेदवीर्यजा ।
तारा तारहितावर्णा ताराद्या तारूपिणी ॥११॥
तारारात्रिसमुत्पन्ना तारारात्रिवरोद्यता ।
तारारात्रिजपासक्ता तारारात्रिस्वरूपिणी ॥१२॥
तारराज्ञीस्वसन्तुष्टा तारराज्ञीवरप्रदा ।
तारराज्ञीस्वरूपा च तारराज्ञी-प्रसिद्धिदा ॥१३॥
ताराहृत्पङ्कजागारा ताराहृत्पङ्कजापरा ।
ताराहृत्पङ्कजाधारा ताराहृत्पङ्कजा तथा ॥१४॥
तारेश्वरी च ताराभा तारागणस्वरूपिणी ।
तारागणसमाकीर्णा तारागणनिषेविता ॥१५॥

इस सहस्रनाम के देवता, ऋषि, छन्द तथा ध्यान हम मूल में पहले कह आये हैं। मातृसिद्धि और पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति के लिए इसका विनियोग करना चाहिए ॥ १० ॥

१. तारा, २. तारादिपञ्चार्णा, ३. तारान्यावेदवीर्यजा, ४. तारा, ५. तारहितावर्णा, ६. ताराद्या, ७. तारूपिणी, ॥ ११ ॥ ८. तारारात्रिसमुत्पन्ना, ९. तारारात्रिवरोद्यता, १०. तारारात्रिजपासक्ता, ११. तारारात्रिस्वरूपिणी, ॥ १२ ॥ १२. तारराज्ञीस्वसन्तुष्टा, १३. तारराज्ञीवरप्रदा, १४. तारराज्ञीस्वरूपा, १५. तारराज्ञी-प्रसिद्धिदा, ॥ १३ ॥

१६. ताराहृत्पङ्कजागारा, १७. ताराहृत्पङ्कजापरा, १८. ताराहृत्पङ्कजाधारा, १९. ताराहृत्पङ्कजा, ॥ १४ ॥ २०. तारेश्वरी, २१. ताराभा, २२. तारागणस्वरूपिणी, २३. तारागणसमाकीर्णा, २४.

तारा तारान्विता तारारत्नान्वितविभूषणा ।
तारागणरणासन्ना तारा कृत्यप्रपूजिता ॥१६॥
तारागणकृताहारा तारागणकृताश्रया ।
तारागणकृतागारा तारागणनतत्परा ॥१७॥
तारागुणगणाकीर्णा तारागुणगणप्रदा ।
तारागुणगणासक्ता तारागुणगणालया ॥१८॥
तारेश्वरी तारपूज्या ताराजप्या तु तारणा ।
तारमुख्या तु ताराख्या तारदक्षा तु तारिणी ॥१९॥
तारागम्या तु तारस्था तारामृततरङ्गिणी ।
तारभव्या तु तारार्णा तारहव्या तु तारिणी ॥२०॥
तारका तारकान्तःस्था तारकाराशिभूषणा ।
तारकाहारशोभाढ्या तारकावेष्टिताङ्गणा ॥२१॥

तारागणनिषेविता,॥१५॥ २५. तारा, २६. तारान्विता, २७. तारारत्नान्वितभूषणा, २८. तारागणरणासन्ना, २९. तारा कृत्यप्रपूजिता ॥१६॥ ३०. तारागणकृताहारा, ३१. तारागणकृताश्रया, ३२. तारागणकृतागारा, ३३. तारागणनतत्परा, ॥ १७ ॥ ३४. तारागुणगणाकीर्णा, ३५. तारागुणगणप्रदा, ३६. तारागुणगणासक्ता, ३७. तारागुणगणालया, ॥ १८ ॥ ३८. तारेश्वरी, ३९. तारपूज्या, ४०. ताराजप्या, ४१. तारणा, ४२. तारमुख्या, ४३. ताराख्या, ४४. तारदक्षा, ४५. तारिणी, ॥ १९ ॥ ४६. तारागम्या, ४७. तारस्था, ४८. तारामृततरङ्गिणी, ४९. तारभव्या, ५०. तारार्णा, ५१. तारहव्या ५२. तारिणी,॥२०॥ ५३. तारका, ५४. तारकान्तःस्था, ५५. तारकाराशिभूषणा, ५६. तारकाहारशोभाढ्या, ५७. तारकावेष्टिताङ्गणा, ॥२१॥

तारकाहंसकाकीर्णा तारकाकृतभूषणा ।
तारकाङ्गदशोभाङ्गी तारकाश्रितकङ्कणा ॥२२॥
तारकाञ्चितकाञ्ची च तारकान्वितभक्षणा ।
तारकाचित्रवसना तारकासनमण्डला ॥२३॥
तारकाकीर्णमुकुटा तारकाश्रितकुण्डला ।
तारकान्वित-ताटङ्क-युग्मगण्डस्थलोज्ज्वला ॥२४॥
तारकाश्रित-पादाब्जा तारका-वरदायिका ।
तारकादत्तहृदया तारकाञ्चितसायका ॥२५॥
तारकान्यासकुशला तारकान्यासविग्रहा ।
तारकान्यास-सन्तुष्टा तारकान्यास-सिद्धिदा ॥२६॥
तारकान्यासनिलया तारकान्यासपूजिता ।
तारकान्यासंहृष्टा तारकान्याससिद्धिदा ॥२७॥
तारकान्यासंमग्ना तारकान्यासवासिनी ।
तारकान्याससम्पूर्ण-मन्त्रसिद्धि-विधायिनी ॥२८॥

---

५८. तारकाहंसकाकीर्णा ५९. तारकाकृतभूषणा, ६०. तारकाङ्गद-शोभाङ्गी, ६१. तारकाश्रितकङ्कणा, ॥२२॥ ६२. तारकाञ्चितकाञ्ची, ६३. तारकान्वितभक्षणा ६४. तारकाचित्रवसना, ६५. तारकासन-मण्डला, ॥२३॥

६६. तारकाकीर्णमुकुटा, ६७. तारकाश्रितकुण्डला ६८. तारकान्वित-ताटङ्क-युग्म-गण्डस्थलोज्ज्वला, ॥२४॥ ६९. तारकाश्रित-पादाब्जा, ७०. तारकावरदायिका, ७१. तारकादत्तहृदया, ७२. तारकाञ्चितसायका, ॥२५॥ ७३. तारकान्यासकुशला, ७४. तारकान्यास-विग्रहा, ७५. तारकान्यासंसन्तुष्टा, ७६. तारकान्याससिद्धिदा, ॥२६॥ ७७. तारकान्यासनिलया, ७८. तारकान्यासपूजिता, ७९. तारकान्यास-संहृष्टा, ८०. तारकान्याससिद्धिदा, ॥२७॥ ८१. तारकान्यासंमग्ना,

तारकोपासकप्राणा तारकोपासकप्रिया ।
तारकोपासकासाध्या तारकोपासकेष्टदा ॥२९॥
तारकोपासकासक्ता तारकोपासकार्थिनी ।
तारकोपासकाराध्या तारकोपासकाश्रया ॥३०॥
तारकासुरसन्तुष्टा तारकासुरपूजिता ।
तारकासुर-निर्माणकर्त्री तारकवन्दिता ॥३१॥
तारकासुरसम्मान्या तारकासुरमानदा ।
तारकासुरसंसिद्धा तरकासुरदेवता ॥३२॥
तारकासुरदेहस्था तारकासुरस्वर्गदा ।
तारकासुरसंसृष्टा तारकासुरगर्वदा ॥३३॥
तारकासुरसंहन्त्री तारकासुरमर्दिनी ।
तारकासुरसङ्ग्राम-नर्त्तकी तारकापहा ॥३४॥

---

८२. तारकान्यासवासिनी, ८३. तारकान्याससम्पूर्ण-मन्त्रसिद्धि-विधायिनी, ॥ २८ ॥ ८४. तारकोपासकप्राणा, ८५. तारकोपासकप्रिया, ८६. तारकोपासकसाध्या, ८७. तारकोपासकेष्टदा, ॥ २९ ॥ ८८. तारकोपासकासक्ता, ८९. तारकोपासकार्थिनी, ९०. तारकोपासकाराध्या, ९१. तारकोपासकाश्रया, ॥ ३० ॥ ९२. तारकासुरसन्तुष्टा, ९३. तारकासुरपूजिता, ९४. तारकासुरनिर्माणकर्त्री, ९५. तारकवन्दिता, ॥ ३१ ॥ ९६. तारकासुरसम्मान्या, ९७. तारकासुरमानदा, ९८. तारकासुरसंसिद्धा, ९९. तारकासुरदेवता, ॥३२॥ १००. तारकासुरदेहस्था, १०१. तारकासुरस्वर्गदा, १०२. तारकासुरसंसृष्टा, १०३. तारकासुरगर्वदा, ॥ ३३ ॥ १०४. तारकासुरसंहन्त्री, १०५. तारकासुरमर्दिनी, १०६. तारकासुरसंग्रामनर्त्तकी, १०७. तारकापहा, ॥३४॥

तारकासुरसङ्ग्रामकारिणी तारकारिभृत् ।
तारकासुरसङ्ग्राम-कबन्धवृन्द-वन्दिता ॥३५॥
तारकारि-प्रसूतारि-कारिमाता तु कारिका ।
तारकारी-मनोहारी-वस्त्रभूषानुशासिका ॥३६॥
तारकारी-विधात्री च तारकारि-निषेविता ।
तारकारीवचस्तुष्टा तारकारीसुशिक्षिता ॥३७॥
तारकारी-सुसन्तुष्टा तारकारिविभूषिता ।
तारकारिकृतोत्सङ्गी तारकारिप्रहर्षदा ॥३८॥
तमःसम्पूर्णसर्वाङ्गी तमोलिप्तकलेवरा ।
तमोव्याप्तस्थलासङ्गा तमःपटलसन्निभा ॥३९॥
तमोहन्त्री तमःकर्त्री तमःसञ्चारकारिणी ।
तमोगात्री तमोदात्री तमःपात्री तमोपहा ॥४०॥

---

१०८. तारकासुरसङ्ग्रामकारिणी, १०९. तारिकारिभृत्, ११०. तारकासुरसङ्ग्राम-कबन्धवृन्द-वन्दिता ॥ ३५ ॥ १११. तारकारिप्रसूता, ११२. तारकारिमाता, ११३. तारकारिकारिका, ११४. तारकारिमनोहारिवस्त्रभूषानुशासिका, ॥ ३६ ॥ ११५. तारकारिविधात्री, ११६. तारकारिनिषेविता, ११७. तारकारिवचस्तुष्टा, ११८. तारकारिसुशिक्षिता, ॥ ३७ ॥ २१९. तारकारिसुसन्तुष्टा, १२०. तारकारिविभूषिता, १२१. तारकारिकृतोत्सङ्गी, १२२. तारकारिप्रहर्षदा, ॥३८॥ १२३. तमःसम्पूर्णसर्वाङ्गी, १२४. तमोलिप्तकलेवरा, १२५. तमोव्याप्तस्थला, १२६. तमोसङ्गा, १२७. तमःपटलसन्निभा, ॥ ३९ ॥ १२८. तमोहन्त्री, १२९. तमःकर्त्री, १३०. तमःसञ्चारकारिणी, १३१. तमोगात्री, १३२. तमोदात्री, १३३. तमःपात्री, १३४. तमोपहा, ॥ ४० ॥

तमोराशि-पूर्णराशि-स्तमोराशि-विनाशिनी ।
तमोराशिकृतध्वंसी तमोराशिभयङ्करी ।।४१।।
तमोगुणप्रसन्नास्या तमोगुणसुसिद्धिदा ।
तमोगुणोक्त-मार्गस्था तमोगुणविराजिता ।।४२।।
तमोगुणस्तुतिपरा तमोगुणविवर्धिनी ।
तमोगुणाश्रितपरा तमोगुणविनाशिनी ।।४३।।
तमोगुणाक्षयकरी तमोगुणकलेवरा ।
तमोगुणध्वंसतुष्टा तमःपारेप्रतिष्ठिता ।।४४।।
तमोभवभवप्रीता तमोभवभवप्रिया ।
तमोभवभवाश्रद्धा तमोभवभवाश्रया ।।४५।।
तमोभवभवप्राणा तमोभवभवार्चिता ।
तमोभव-भवप्रीत्यालीढ-कुम्भस्थलस्थिता ।।४६।।

---

१३५. तमोराशिपूर्णराशि, १३६. तमोराशिविनाशिनी, १३७. तमोराशिकृतध्वंसी, १३८. तमोराशिभयङ्करी, । ४१ ।। १३९. तमोगुणप्रसन्नास्या, १४०. तमोगुणसुसिद्धिदा, १४१. तमोगुणोक्तमार्गस्था, १४२. तमोगुणविराजिता, ।। ४२ ।। १४३. तमोगुणस्तुतिपरा, १४४. तमोगुणविवर्धिनी, १४५. तमोगुणाश्रितपरा, १४६. तमोगुणविनाशिनी, ।।४३।। १४७. तमोगुणा, १४८. तमोक्षयकरी, १४९. तमोगुणकलेवरा, १५०. तमोगुणध्वंसतुष्टा, १५१. तमःपारेप्रतिष्ठिता, ।।४४।। १५२. तमोभवा, १५३. तमोभवप्रीता, १५४. तमोभवभवप्रिया, १५५. तमोभवभवाश्रद्धा, १५६. तमोभवभवाश्रया, ।। ४५ ।। १५७. तमोभवभवप्राणा, १५८. तमोभवभवार्चिता, १५९. तमोभवभवप्रीत्यालीढ-

तपस्विवृन्दसन्तुष्टा तपस्विवृन्दपुष्टिदा ।
तपस्विवृन्दसंस्तुत्या तपस्विवृन्दवन्दिता ॥४७॥
तपस्विवृन्दसम्पन्ना तपस्विवृन्दहर्षदा ।
तपस्विवृन्दसम्पूज्या तपस्विवृन्दभूषिता ॥४८॥
तपस्विचित्ततल्पस्था तपस्विचित्तमध्यगा ।
तपस्विचित्तचित्तार्हा तपस्विचित्तहारिणी ॥४९॥
तपस्विकल्पवल्ल्याभा तपस्विकल्पपादपी ।
तपस्विकामधेनुश्च तपस्विकामपूर्त्तिदा ॥५०॥
तपस्वित्राणनिरता तपस्विगृहसंस्थिता ।
तपस्विगृहराजश्री-स्तपस्विराज्यदायिका ॥५१॥
तपस्विमानसाराध्या तपस्विमानदायिका ।
तपस्वितापसंहर्त्री तपस्वितापशान्तिकृत् ॥५२॥

कुम्भस्थल-स्थिता, ॥४६॥ १६०. तपस्विवृन्दसन्तुष्टा, १६१. तपस्विवृन्दपुष्टिदा, १६२. तपस्विवृन्दसंस्तुता, १६३. तपस्विवृन्दवन्दिता, ॥ ४७ ॥ १६४. तपस्विवृन्दसम्पन्ना, १६५. तपस्विवृन्दहर्षदा, १६६. तपस्विवृन्दसम्पूज्या, १६७. तपस्विवृन्दभूषिता, ॥ ४८ ॥ १६८. तपस्विचित्ततल्पस्था, १६९. तपस्विचित्तमध्यगा, १७०. तपस्विचित्तचित्तार्हा, १७१. तपस्विचित्तहारिणी, ॥ ४९ ॥ १७२. तपस्विकल्पवल्ल्याभा, १७३. तपस्विकल्पपादपी, १७४. तपस्विकामधेनु, १७५. तपस्विकामपूर्त्तिदा, ॥५०॥ १७६. तपस्विवत्राणनिरता, १७७. तपस्विगृहसंस्थिता, १७८. तपस्विगृह-राजश्री, १७९. तपस्विराज्यदायिका, ॥ ५१ ॥ १८०. तपस्विमानसाराध्या, १८१. तपस्विमानदायिका, १८२. तपस्वितापसंहर्त्री, १८३. तपस्वितापशान्तिकृत्, ॥२५॥

तपस्विसिद्धिविद्या च तपस्विमन्त्रसिद्धिकृत् ।
तपस्विमन्त्रतन्त्रेशी तपस्विमन्त्ररूपिणी ॥५३॥
तपस्विमन्त्रनिपुणा तपस्विकर्मकारिणी ।
तपस्विकर्मसम्भूता तपस्विकर्मसाक्षिणी ॥५४॥
तपःसेव्या तपोभव्या तपोभाव्या तपस्विनी ।
तपोवश्या तपोगम्या तपोगेहनिवासिनी ॥५५॥
तपोधन्या तपोमान्या तपःकन्या तपोवृता ।
तपस्तथ्या तपोगोप्या तपोजप्या तपोऽनृता ॥५६॥
तपःसाध्या तपोराध्या तपोवन्द्या तपोमयी ।
तपःसन्ध्या तपोवन्ध्या तपःसान्निध्यकारिणी ॥५७॥
तपोध्येया तपोगेया तपस्तप्ता तपोबला ।
तपोलेया तपोदेया तपस्तत्त्वफलप्रदा ॥५८॥

---

१८४. तपस्विसिद्धि, १८५. तपस्विविद्या, १८६. तपस्विमन्त्रसिद्धिकृत्, १८७. तपस्विमन्त्रेशी, १८८. तपस्वितन्त्रेशी, १८९. तपस्विमन्त्ररूपिणी, ॥५३॥ १९०. तपस्विमन्त्रनिपुणा, १९१. तपस्विकर्मकारिणी, १९२. तपस्विकर्मसम्भूता, १९३. तपस्विकर्मसाक्षिणी, ॥५४॥ १९४. तपःसेव्या, १९५. तपोभव्या, १९६. तपोभाव्या, १९७. तपस्विनी, १९८. तपोवश्या, १९९. तपोगम्या, २००. तपोगेहनिवासिनी, ॥ ५५ ॥
२०१. तपोधन्या, २०२. तपोमान्या, २०३. तपःकन्या, २०४. तपोवृता, २०५. तपस्तथ्या, २०६. तपोगोप्या, २०७. तपोजप्या, २०८. तपोऽनृता, ॥५६॥ २०९. तपःसाध्या, २१०. तपोराध्या, २११. तपोवन्द्या, २१२. तपोमयी, २१३. तपःसन्ध्या, २१४. तपोवन्ध्या, २१५. तपःसान्निध्यकारिणी, ॥५७॥ २१६. तपोध्येया, २१७. तपोगेया, २१८. तपस्तप्ता,

तपोविघ्नवरघ्नी च तपोविघ्नविनाशिनी ।
तपोविघ्नचयध्वंसी तपोविघ्नभयङ्करी ॥५९॥
तपोभूमिवरप्राणा तपोभूमिपतिस्तुता ।
तपोभूमिपतिध्येया तपोभूमिपतीष्टदा ॥६०॥
तपोवनकुरङ्गस्था तपोवनविनाशिनी ।
तपोवनगतिप्रीता तपोवनविहारिणी ॥६१॥
तपोवनफलासक्ता तपोवनफलप्रदा ।
तपोवनसुसाध्या च तपोवनसुसिद्धिदा ॥६२॥
तपोवनसुसेव्या च तपोवननिवासिनी ।
तपोधनसुसंसेव्या तपोधनसुसाधिता ॥६३॥
तपोधनसुसल्लीना तपोधनमनोमयी ।
तपोधननमस्कारा तपोधनविमुक्तिदा ॥६४॥

---

२१९. तपोबला, २२०. तपोलेया, २२१. तपोदेया, २२२. तपस्तत्त्व-फलप्रदा ॥५८॥ २२३. तपोविघ्नवरघ्नी, २२४. तपोविघ्नविनाशिनी, २२५. तपोविघ्नचयध्वंसी, २२६. तपोविघ्नभयङ्करी, ॥५९॥ २२७. तपोभूमिवरप्राणा, २२८. तपोभूमिपतिस्तुता, २२९. तपोभूमिपतिध्येया, २३०. तपोभूमिपतीष्टदा ॥ ६० ॥ २३१. तपोवनकुरङ्गस्था, २३२. तपोवनविनाशिनी, २३३. तपोवनगतिप्रीता, २३४. तपोवनविहा-रिणी, ॥६१॥ २३५ तपोवनफलासक्ता, २३६. तपोवनफलप्रदा, २३७. तपोवनसुसाध्या, २३८. तपोवनसुसिद्धिदा, ॥६२॥ २३९. तपोवन-सुसेव्या, २४०. तपोवननिवासिनी, २४१. तपोधनसुसंसेव्या, २४२. तपोधनसुसाधिता, ॥६३॥ २४३. तपोधनसुसल्लीना, २४४. तपोधन-मनोमयी, २४५. तपोधननमस्कारा, २४६. तपोधनविमुक्तिदा, ॥६४॥

तपोधनधनासाध्या तपोधनधनात्मिका ।
तपोधनधनाराध्या तपोधनफलप्रदा ॥६५॥
तपोधनधनाढ्या च तपोधनधनेश्वरी ।
तपोधनधनप्रीता तपोधनधनालया ॥६६॥
तपोधनजनाकीर्णा तपोधनजनाश्रया ।
तपोधनजनाराध्या तपोधनजनप्रसूः ॥६७॥
तपोधनजनप्राणा तपोधनजनेष्टदा ।
तपोधनजनासाध्या तपोधनजनेश्वरी ॥६८॥
तरुणाऽसृक्प्रपानार्त्ता तरुणासृक्प्रतर्पिता ।
तरुणासृक्समुद्रस्था तरुणासृक्प्रहर्षदा ॥६९॥
तरुणासृक्सुसन्तुष्टा तरुणासृग्विलेपिता ।
तरुणासृङ्नदीप्राणा तरुणासृग्विभूषणा ॥७०॥
तरुणैणबलिप्रीता तरुणैणबलिप्रिया ।
तरुणैणबलिप्राणा तरुणैणबलीष्टदा ॥७१॥

---

२४७. तपोधनधनासाध्या, २४८. तपोधनधनात्मिका, २४९. तपोधनधनाराध्या, २५०. तपोधनफलप्रदा, ।६५॥ २५१. तपोधनधनाढ्या, २५२. तपोधनधनेश्वरी, २५३. तपोधनधनप्रीता, २५४. तपोधनधनालया, ॥६६॥ २५५. तपोधनजनाकीर्णा, २५६. तपोधनजनाश्रया, २५७. तपोधनजनाराध्या, २५८. तपोधनजनप्रसूः ॥६७॥ २५९. तपोधनजनप्राणा, २६०. तपोधनजनेष्टदा, २६१. तपोधनजनासाध्या, २६२. तपोधनजनेश्वरी, ॥६८॥ २६३. तरुणासृक्प्रपानार्त्ता, २६४. तरुणासृक्प्रतर्पिता, २६५. तरुणासृक्समुद्रस्था, २६६. तरुणासृक्प्रहर्षदा, ॥६९॥ २६७. तरुणासृक्सुसन्तुष्टा, २६८. तरुणासृग्विलेपिता, २६९. तरुणासृङ्नदीप्राणा,

तरुणाजबलिप्रीता तरुणाजबलिप्रिया ।
तरुणाजबलिघ्राणा तरुणाजबलिप्रभुक् ॥७२॥
तरुणादित्यसङ्काशा तरुणादित्यविग्रहा ।
तरुणादित्यरुचिरा तरुणादित्यनिर्मला ॥७३॥
तरुणादित्यनिलया तरुणादित्यमण्डला ।
तरुणादित्यललिता तरुणादित्यकुण्डला ॥७४॥
तरुणार्कसमज्योत्स्ना तरुणार्कसमप्रभा ।
तरुणार्कप्रतीकारा तरुणार्कप्रवर्द्धिता ॥७५॥
तरुणा - तरुणार्कनेत्रा च तरुणा - तरुणलोचना ।
तरुणा - तरुणनेत्रा च तरुणा - तरुणभूषणा ॥७६॥
तरुणीदत्तसङ्केता तरुणीदत्तभूषणा ।
तरुणीगणसन्तुष्टा तरुणी-तरुणीमणिः ॥७७॥

२७०.तरुणासृक्प्राणा, २७१, तरुणासृग्विभूषणा, ॥७०॥ २७२. तरुणैण-बलिप्रीता,२७३.तरुणैणबलिप्रिया,२७४.तरुणैणबलिप्राणा,२७५.तरुणैण-बलीष्टदा ॥७१॥ २७६. तरुणाजबलिप्रीता, २७७. तरुणाजबलिप्रिया, २७८.तरुणाजबलिघ्राणा, २७९.तरुणाजबलिप्रभुक् ॥७२॥ २८०.तरुणा-दित्यसङ्काशा, २८१.तरुणादित्यविग्रहा, २८२.तरुणादित्यरुचिरा, २८३.तरुणादित्यनिर्मला ॥ ७३ ॥ २८४. तरुणादित्यनिलया, २८५. तरुणा-दित्यमण्डला,२८६. तरुणादित्यललिता, २८७. तरुणादित्यकुण्डला,॥७४॥

२८८. तरुणार्कसमज्योत्स्ना, २८९. तरुणार्कसमप्रभा, २९०. तरुणार्कप्रतीकारा, २९१. तरुणार्कप्रवर्द्धिता, ॥७५॥ २९२. तरुणा-तरुणार्कनेत्रा, २९३. तरुणा-तरुणलोचना २९४. तरुणा-तरुणनेत्रा २९५. तरुणा-तरुणभूषणा, ॥७६॥ २९६. तरुणीदत्तसङ्केता, २९७. तरुणीदत्त-

तरुणीमणिसंसेव्या तरुणीमणिवन्दिता ।
तरुणीमणिसन्तुष्टा तरुणीमणिपूजिता ॥७८॥
तरुणीवृन्दसंवाद्या तरुणीवृन्दवन्दिता ।
तरुणीवृन्दसंस्तुत्या तरुणीवृन्दमानदा ॥७९॥
तरुणीवृन्दमध्यस्था तरुणीवृन्दवेष्टिता ।
तरुणीवृन्दसम्प्रीता तरुणीवृन्दभूषिता ॥८०॥
तरुणीजपसंसिद्धा तरुणीजपमोक्षदा ।
तरुणीपूजकासक्ता तरुणीपूजकार्थिनी ॥८१॥
तरुणीपूजकश्रीदा तरुणीपूजकार्त्तिहा ।
तरुणीपूजकप्राणा तरुणीनिन्दकार्त्तिदा ॥८२॥
तरुणीकोटिनिलया तरुणीकोटिविग्रहा ।
तरुणीकोटिमध्यस्था तरुणीकोटिवेष्टिता ॥८३॥

भूषणा, २९८. तरुणीगणसन्तुष्टा, २९९. तरुणी, ३००. तरुणीमणि ॥ ७७ ॥

३०१. तरुणीमणिसंसेव्या, ३०२. तरुणीमणिवन्दिता, ३०३. तरुणीमणिसन्तुष्टा, ३०४. तरुणीमणिपूजिता, ॥७८॥ ३०५. तरुणीवृन्दसंवाद्या, ३०६. तरुणीवृन्दवन्दिता, ३०७. तरुणीवृन्दसंस्तुत्या, ३०८.तरुणीवृन्दमानदा॥७९॥ ३०९. तरुणीवृन्दमध्यस्था, ३१०. तरुणीवृन्दवेष्टिता, ३११. तरुणीवृन्दसम्प्रीता, ३१२.तरुणीवृन्दभूषिता,॥८०॥ ३१३. तरुणीजपसंसिद्धा, ३१४. तरुणीजपमोक्षदा, ३१५. तरुणीपूजकासक्ता, ३१६.तरुणीपूजकार्थिनी, ॥८१॥ ३१७. तरुणीपूजकश्रीदा, ३१८. तरुणीपूजकार्त्तिहा, ३१९.तरुणीपूजकप्राणा, ३२०.तरुणीनिन्दकार्तिदा, ॥८२॥ ३२१.तरुणीकोटिनिलया, ३२२ तरुणीकोटिविग्रहा, ३२३.तरुणी-

तरुणीकोटिदुस्साध्या तरुणीकोटिविग्रहा ।
तरुणीकोटिरुचिरा तरुणीतरुणीश्वरी ॥८४॥
तरुणीमणिहाराढ्या तरुणीमणिकुण्डला ।
तरुणीमणिसन्तुष्टा तरुणीमणिमण्डिता ॥८५॥
तरुणीसरणीप्रीता तरुणीसरणीरता ।
तरुणीसरणीस्थाना तरुणीसरणीरता ॥८६॥
तरणीमण्डलश्रीदा तरणीमण्डलेश्वरी ।
तरणीमण्डलश्रद्धा तरणीमण्डलस्थिता ॥८७॥
तरणीमण्डलार्घाढ्या तरणीमण्डलार्चिता ।
तरणीमण्डलध्येया तरणीभवसागरा ॥८८॥
तरणीकारणासक्ता तरणीतक्षकार्चिता ।
तरणीतक्षकश्रीदा तरणीतक्षकार्थिनी ॥८९॥

कोटिमध्यस्था, ३२४. तरुणीकोटिवेष्टिता, ॥८३॥ ३२५. तरुणीकोटिदुस्साध्या, ३२६. तरुणीकोटिविग्रहा, ३२७. तरुणीकोटिरुचिरा, ३२८. तरुणीतरुणीश्वरी,॥८४॥ ३२९.तरुणीमणिहाराढ्या, ३३०. तरुणीमणिकुण्डला, ३३१. तरुणीमणिसन्तुष्टा, ३३२. तरुणीमणिमण्डिता, ॥८५॥ ३३३. तरुणीसरणीप्रीता, ३३४. तरुणीसरणीरता, ३३५. तरुणीसरणीस्थाना, ३३६. तरुणीसरणीरता, ॥ ८६ ॥ ३ ७. तरणीमण्डलश्रीदा, ३३८. तरणीमण्डलेश्वरी, ३३९. तरणीमण्डलश्रद्धा, ३४०. तरणीमण्डलस्थिता, ॥८७॥ ३४१. तरणीमण्डलार्घाढ्या, ३४२. तरणीमण्डलार्चिता, ३४३. तरणीमण्डलध्येया, ३४४.तरणीभवसागरा, ॥८८॥ ३४५. तरणीकारणासक्ता, ३४६.तरणीतक्षकार्चिता, ३४७ तरणीतक्षकश्रीदा,

तरणीतरणशीला च तरीतरणतारिणी ।
तरीतरणसंवेद्या तरीतरणकारिणी ॥९०॥
तरुरूपा तरुस्था च तरुस्तरुलतामयी ।
तरुरूपा तरुस्था च तरुमध्यनिवासिनी ॥९१॥
तप्तकाञ्चनगेहस्था तप्तकाञ्चनभूमिका ।
तप्तकाञ्चनप्राकारा तप्तकाञ्चनपादुका ॥९२॥
तप्तकाञ्चनदीप्ताङ्गी तप्तकाञ्चनसन्निभा ।
तप्तकाञ्चनगौराङ्गी तप्तकाञ्चनमञ्चगा ॥९३॥
तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्या तप्तकाञ्चनरूपिणी ।
तप्तकाञ्चनमध्यस्था तप्तकाञ्चनकारिणी ॥९४॥
तप्तकाञ्चनमासार्च्या तप्तकाञ्चनपात्रभुक् ।
तप्तकाञ्चनशैलस्था तप्तकाञ्चनकुण्डला ॥९५॥

३४८.तरणीतक्षकार्थिनी,॥८९॥ ३४९. तरणीतरणशीला, ३५०.तरीतरणतारिणी, ३५१.तरीतरणसंवेद्या, ३५२. तरीतरणकारिणी ॥९०॥ ३५३. तरुरूपा, ३५४. तरुस्था, ३५५. तरु, ३५६. तरुलतामयी, ३५७. तरुरूपा, ३५८. तरुस्था, ३५९. तरुमध्यनिवासिनी, ॥९१॥

३६०. तप्तकाञ्चनगेहस्था, ३६१. तप्तकाञ्चनभूमिका, ३६२. तप्तकाञ्चनप्राकारा, ३६३. तप्तकाञ्चनपादुका, ॥९२॥ ३६४. तप्तकाञ्चनदीप्ताङ्गी, ३६५. तप्तकाञ्चनसन्निभा, ३६६. तप्तकाञ्चनगौराङ्गी, ३६७. तप्तकाञ्चनमञ्चगा, ॥ ९३ ॥ ३६८. तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्या, ३६९. तप्तकाञ्चनरूपिणी, ३७०. तप्तकाञ्चनमध्यस्था, ३७१. तप्तकाञ्चनकारिणी, ॥९४॥ ३७२. तप्तकाञ्चनमासार्च्या, ३७३. तप्त-

तप्तकाञ्चनक्षेत्राढ्या तप्तकाञ्चनदण्डधृक् ।
तप्तकाञ्चनभूषाढ्या तप्तकाञ्चनदानदा ॥९६॥
तप्तकाञ्चनदेशेशी तप्तकाञ्चनचापधृक् ।
तप्तकाञ्चनतूणाढ्या तप्तकाञ्चनबाणभृत् ॥९७॥
तलातलविधात्री च तलातलविधायिनी ।
तलातलस्वरूपेशी तलातलविहारिणी ॥९८॥
तलातलजनासाध्या तलातलजनेश्वरी ।
तलातलजनाराध्या तलातलजनार्थदा ॥९९॥
तलातलजयाभाक्षी तलातलजचञ्चला ।
तलातलजरत्नाढ्या तलातलजदेवता ॥१००॥

काञ्चनपात्रभुक्, ३७४. तप्तकाञ्चनशैलस्था, ३७५. तप्तकाञ्चनकुण्डला, ॥९५॥ ३७६. तप्तकाञ्चनक्षेत्राढ्या, ३७७. तप्तकाञ्चनदण्डधृक्, ३७८. तप्तकाञ्चनभूषाढ्या, ३७९. तप्तकाञ्चनदानदा, ॥९६॥ ३८०. तप्तकाञ्चनदेशा, ३८१. तप्तकाञ्चनेशी, ३८२. तप्तकाञ्चनचापधृक्, ३८३ तप्तकाञ्चनतूणाढ्या, ३८४ तप्तकाञ्चनबाणभृत्, ॥९७॥ ३८५. तलातलविधात्री, ३८६. तलातलविधायिनी, ३८७. तलातलस्वरूपा, ३८८. तलातलेशी, ३८९. तलातलविहारिणी, ॥ ९८ ॥

३९०. तलातलजनासाध्या, ३९१. तलातलजनेश्वरी, ३९२. तलातलजनाराध्या, ३९३. तलातलजनार्थदा, ॥९९॥ ३९४. तलातलजयाभाक्षी, ३९५. तलातलाभा, ३९६. तलातलाक्षी, ३९७. तलातलजचञ्चला, ३९८. तलातलजरत्नाढ्या, ३९९. तलातलजदेवता, ॥१००॥४०० तटिनी-

तटिनीस्थानरसिका तटिनी तटवासिनी ।
तटिनी तटिनीतीरगामिनी तटिनीप्रिया ॥१०१॥
तटिनीप्लवनप्रीता तटिनीप्लवनोद्यता ।
तटिनीप्लवनश्लाघ्या तटिनीप्लवनार्थदा ॥१०२॥
तटलास्था तटस्थाना तटेशी तटवासिनी ।
तटपूज्या तटाराध्या तटरोममुखार्थिनी ॥१०३॥
तटजा तटरूपा च तटस्था तटचञ्चला ।
तटसन्निधि-गेहस्था-सहिता तटशायिनी ॥१०४॥
तरङ्गिणी तरङ्गाभा तरङ्गायतलोचना ।
तरङ्गसमदुर्द्धर्षा तरङ्गसमचञ्चला ॥१०५॥
तरङ्गसमदीर्घाङ्गी तरङ्गसमवर्द्धिता ।
तरङ्गसमसवृद्धि-स्तरङ्गसमनिर्मला ॥१०६॥

स्थानरसिका, ४०१. तटिनी, ४०२. तटवासिनी, ४०३. तटिनी, ४०४. तटिनीतीरगामिनी, ४०५. तटिनीप्रिया, ॥१०१॥ ४०६. तटिनीप्लवनप्रीता, ४०७. तटिनीप्लवनोद्यता, ४०८. तटिनीप्लवनश्लाघ्या, ४०९. तटिनीप्लवनार्थदा, ॥१०२॥ ४१०. तटलास्था, ४११. तटस्थाना, ४१२. तटस्थाना, ४१३. तटेशी, ४१४. तटवासिनी, ४१५. तटपूज्या, ४१६. तटाराध्या, ४१७. तटरोममुखार्थिनी, ॥१०३॥

४१८. तटजा, ४१९. तटरूपा, ४२०. तटस्था, ४२१. तटचञ्चला, ४२२. तटसन्निधिगेहस्था, ४२३. तटसन्निधिसहिता, ४२४. तटशायिनी॥१०४॥ ४२५. तरङ्गिणी. ४२६. तरङ्गाभा, ४२७. तरङ्गायतलोचना, ४२८. तरङ्गसमदुर्द्धर्षा, ४२९. तरङ्गसमचञ्चला ॥१०५॥ ४३०. तरङ्गसमदीर्घाङ्गी, ४३१. तरङ्गसमवर्द्धिता, ४३२. तरङ्गसम-

तडागमध्यनिलया तडागमध्यसम्भवा ।
तडागरचनश्लाघ्या तडागरचनोद्यता ॥१०७॥
तडागकुमुदामोदी तडागेशी तडागिनी ।
तडागनीरसंस्नाता तडागनीरनिर्मला ॥१०८॥
तडागकमलागारा तडागकमलालया ।
तडागकमलान्तस्था तडागकमलोद्यता ॥१०९॥
तडागकमलाङ्गी च तडागकमलानना ।
तडागकमलप्राणा तडागकमलेक्षणा ॥११०॥
तडागरक्तपद्मस्था तडागश्वेतपद्मगा ।
तडागनीलपद्माभा तडागनीलपद्मभृत् ॥१११॥
तनुस्तनुगता तन्वी तन्वङ्गी तनुधारिणी ।
तनुरूपा तनुगता तनुघृक् तनुरूपिणी ॥११२॥

संवृद्धि, ४३३. तरङ्गसमनिर्मला ॥१०६॥ ४३४. तडागमध्यनिलया, ४३५. तडागमध्यसम्भवा, ४३६. तडागरचनश्लाघ्या, ४३७. तडागरचनोद्यता ॥ १०७ ॥ ४३८. तडागकुमुदामोदी ४३९. तडागेशी, ४४०. तडागिनी, ४४१. तडागनीरसंस्नाता, ४४२. तडागनीरनिर्मला, ॥१०८॥ ४४३. तडागकमलागारा, ४४४. तडागकमलालया, ४४५. तडागकमलान्तस्था, ४४६. तडागकमलोद्यता, ॥१०९॥ ४४७. तडागकमलाङ्गी, ४४८. तडागकमलानना, ४४९. तडागकमलप्राणा, ४५०. तडागकमलेक्षणा, ॥११०॥ ४५१. तडागरक्तपद्मस्था, ४५२. तडागश्वेतपद्मगा, ४५३. तडागनीलपद्माभा, ४५४. तडागनीलपद्मभृत् ॥१११॥ ४५५. तनु, ४५६. तनुगता, ४५७. तन्वी, ४५८.

तनुस्था तनुमध्याङ्गी तनुकृत्तनुमङ्गला ।
तनुसेव्या तु तनुजा तनुजा-तनुसम्भवा ॥११३॥
तनुभृत्तनुसम्भूता तनुदा-तनुकारिणी ।
तनुभृत्तनुसंहन्त्री तनुसञ्चारकारिणी ॥११४॥
तथ्यवाक् तथ्यवचना तथ्यकृत् तथ्यवादिनी ।
तथ्यभृत्तथ्यचरिता तथ्यधर्मानुवर्त्तिनी ॥११५॥
तथ्यभुक् तथ्यगमना तथ्यभक्तिवरप्रदा ।
तथ्यनी चेश्वरी तथ्यचित्ताचाराशुसिद्धिदा ॥११६॥
तर्क्या तर्क्यस्वभावा च तर्कदाया तु तर्ककृत् ।
तर्काध्यापनमध्यस्था तर्काध्यापनकारिणी ॥११७॥

तन्वङ्गी, ४५९. तनुधारिणी, ४६०. तनुरूपा, ४६१. तनुगता, ४६२. तनुधृक्, ४६३. तनुरूपिणी, ॥११२॥ ४६४. तनुस्था, ४६५. तनुमध्याङ्गी, ४६६. तनुकृत्, ४६७, तनुमङ्गला, ४६८. तनुसेव्या, ४६९. तनुजा, ४७०. तनुजा, ४७१. तनुसम्भवा, ॥११३॥ ४७२. तनुभृत्, ४७३. तनुसम्भूता, ४७४. तनुदा, ४७५. तनुकारिणी, ४७६. तनुभृत्, ४७७. तनुसंहन्त्री, ४७८. तनुसञ्चारकारिणी, ॥११४॥ ४७९. तथ्यवाक्, ४८०. तथ्यवचना, ४८१. तथ्यकृत्, ४८२. तथ्यवादिनी, ४८३. तथ्यभृत्, ४८४. तथ्यचरिता, ४८५. तथ्यधर्मानुवर्त्तिनी ॥११५॥

४८६. तथ्यभुक्, ४८७. तथ्यगमना, ४८८. तथ्यभक्तिवरप्रदा, ४८९. तथ्यनी, ४९०. तथ्येश्वरी, ४९१. तथ्यचित्ता, ४९२. तथ्यचारा, ४९३. तथ्याशुसिद्धिदा, ॥११६॥ ४९४. तर्क्या, ४९५. तर्क्यस्वभावा, ४९६. तर्कदाया, ४९७. तर्ककृत्, ४९८. तर्काध्यापनमध्यस्था, ४९९. तर्काध्यापन-

तर्काध्यापन - सन्तुष्टा तर्काध्यापनरूपिणी ।
तर्काध्यापनसंशीला तर्कार्थप्रतिपादिता ॥११८॥
तर्काध्यापनसन्तृप्ता तर्कार्थप्रतिपादिका ।
तर्कवादाश्रितपदा तर्कवादविवर्द्धिनी ॥११९॥
तर्कवादैकनिपुणा तर्कवादप्रचारिणी ।
तमालदलश्यामाङ्गी तमालदलमालिनी ॥१२०॥
तमालवनसङ्केता तमालपुष्पपूजिता ।
तगरी तगराराध्या तगरार्चितपादुका ॥१२१॥
तगरस्रक्सुसन्तुष्टा तगरस्रग्विराजिता ।
तगराहुतिसन्तुष्टा तगराहुतिकीर्त्तिदा ॥१२२॥
तगराहुतिसंसिद्धा तगराहुतिमानदा ।
तडित्तडिल्लताकारा तडिच्चञ्चललोचना ॥१२३॥

कारिणी, ॥११७॥ ५००. तर्काध्यापनसन्तुष्टा, ५०१. तर्काध्यापनरूपिणी, ५०२. तर्काध्यापनसंशीला, ५०३. तर्कार्थप्रतिपादिता ॥११८॥ ५०४. तर्काध्यापनसन्तृप्ता, ५०५. तर्कार्थप्रतिपादिका, ५०६. तर्कवादाश्रिता, ५०७. तर्कपदा, ५०८. तर्कवादविवर्द्धिनी, ॥११९॥ ५०९. तर्कवादैकनिपुणा, ५१०. तर्कवादप्रचारिणी, ५११. तमालदलश्यामाङ्गी, ५१२. तमालदलमालिनी, ॥१२०॥ ५१३. तमालवनसङ्केता, ५१४. तमालपुष्पपूजिता, ५१५. तगरी, ५१६. तगराराध्या, ५१७. तगरार्चितपादुका, ॥१२१॥ ५१८ तगरस्रक्सुसन्तुष्टा, ५१९. तगरस्रग्विराजिता, ५२०. तगराहुतिसन्तुष्टा, ५२१. तगराहुतिकीर्त्तिदा ॥१२२॥ ५२२. तगराहुतिसंसिद्धा, ५२३. तगराहुतिमानदा, ५२४. तडित्, ५२५.

तडिल्लता तडिच्चन्द्री तड्दीप्ता तडित्प्रभा ।
तद्रूपा तत्स्वरूपेशी तन्मयी तत्त्वरूपिणी ॥१२४॥
तत्स्थानदाननिरता तत्कर्मफलदायिनी ।
तत्त्वकृत् तत्त्वदा तत्त्वा तत्त्ववित् तत्त्वतर्पिता ॥१२५॥
तत्त्वार्च्या तत्त्वपूजा च तत्त्वार्घ्या तत्त्वरूपिणी ।
तत्त्वज्ञानप्रदानेशी तत्त्वज्ञानसुमोक्षदा ॥१२६॥
त्वरिता त्वरितप्रीता त्वरितार्त्तिविनाशिनी ।
त्वरितासवसन्तुष्टा त्वरितासवतर्पिता ॥१२७॥
त्वग्वस्त्रा त्वक्परीधाना तरला तरलेक्षणा ।
तरक्षुचर्मवसना तरक्षुत्वग्विभूषणा ॥१२८॥

तडिल्लताकारा, ५२६. तडिच्चञ्चललोचना,॥१२३॥ ५२७. तडिल्लता, ५२८. तडित्तन्वी, ५२९. तडिद्दीप्ता, ५३०. तडित्प्रभा, ५३१. तद्रूपा, ५३२. तत्स्वरूपा, ५३३. तदेशी, ५३४. तन्मयी, ५३५. तत्त्वरूपिणी॥१२४॥

५३६. तत्स्थानदाननिरता, ५३७. तत्कर्मफलदायिनी, ५३८. तत्त्वकृत्, ५३९. तत्त्वदा, ५४०. तत्त्वा, ५४१. तत्त्ववित्, ५४२. तत्त्वतर्पिता ॥१२५॥ ५४३. तत्त्वार्च्या, ५४४. तत्त्वपूजा, ५४५. तत्त्वार्घ्या, ५४६. तत्त्वरूपिणी, ५४७. तत्त्वज्ञानप्रदानेशी, ५४८. तत्त्वज्ञानसुमोक्षदा, ॥१२६॥ ५४९. त्वरिता, ५५०. त्वरितप्रीता, ५५१. त्वरितार्त्तिविनाशिनी, ५५२. त्वरितासवसन्तुष्टा, ५५३. त्वरितासवतर्पिता, ॥१२७॥ ५५४. त्वग्वस्त्रा, ५५५. त्वक्परीधाना, ५५६. तरला, ५५७. तरलेक्षणा, ५५८. तरक्षुचर्मवसना, ५५९. तरक्षुत्वग्-

तरक्षुस्तरक्षुप्राणा तरक्षुपृष्ठगामिनी ।
तरक्षुपृष्ठसंस्थाना तरक्षुपृष्ठवासिनी ॥१२९॥
तर्पितोदैस्तर्पणाशा तर्पणासक्तमानसा ।
तर्पणानन्दहृदया तर्पणाधिपतिस्ततिः ॥१३०॥
त्रयीमयी त्रयीसेव्या त्रयीपूज्या त्रयीकथा ।
त्रयीभव्या त्रयीभाव्या त्रयीभाव्या त्रयीयुता ॥१३१॥
त्र्यक्षरी त्र्यक्षरेशानी त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा ।
त्र्यक्षरेशी त्र्यक्षरीस्था त्र्यक्षरीपुरुषापदा ॥१३२॥
तपना तपनेष्टा च तपस्तपनकन्यका ।
तपनांशुसमासह्या तपनकोटिकान्तिकृत् ॥१३३॥
तपनीया तल्पतल्पगता तल्पविधायिनी ।
तल्पकृत्तल्पगा तल्पदात्री तल्पतलाश्रया ॥१३४॥

विभूषणा, ॥१२८॥ ५६०. तरक्षु, ५६१. तरक्षुप्राणा, ५६२. तरक्षुपृष्ठगामिनी, ५६३. तरक्षुपृष्ठसंस्थाना, ५६४. तरक्षुपृष्ठवासिनी, ॥१२९॥ ५६५. तर्पितोदैस्तर्पणाशा, ५६६. तर्पणासक्तमानसा ५६७. तर्पणानन्दहृदया, ५६८. तर्पणाधिपति, ५६९. तति, ॥१३०॥ ५७०. त्रयीमयी, ५७१. त्रयीसेव्या, ५७२. त्रयीपूज्या, ५७३. त्रयीकथा, ५७४. त्रयीभव्या, ५७५. त्रयीभाव्या, ५७६. त्रयीभाव्या, ५७७. त्रयीयुता, ॥१३१॥

५७८. त्र्यक्षरी, ५७९. त्र्यक्षरेशानी, ५८०. त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदा, ५८१. त्र्यक्षरेशी, ५८२. त्र्यक्षरीस्था, ५८३. त्र्यक्षरीपुरुषा, ५८४. त्र्यक्षरीपदा, ॥ १३२ ॥ ५८५. तपना, ५८६. तपनेष्टा, ५८७. तप, ५८८. तपनकन्यका, ५८९. तपनांशुसमासह्या, ५९०. तपनकोटिकान्तिकृत्, ॥१३३॥ ५९१. तपनीया, ५९२.

तपनीयतलारात्री तपनीयांशु - प्रार्थिनी ।
तपनीयप्रदा तप्ता तपनीयाद्रिसंस्थिता ॥१३५॥

तल्पेशी तल्पदा तल्पसंस्थिता तल्पवल्लभा ।
तल्पप्रिया तल्परता तल्पनिर्माणकारिणी ॥१३६॥

तरसापूजनासक्ता तरसावरदायिनी ।
तरसासिद्धिसन्धात्री तरसामोक्षदायिनी ॥१३७॥

तापसी तापसाराध्या तापसार्त्तिविनाशनी ।
तापसार्त्ता तापसश्रीस्तापसप्रियवादिनी ॥१३८॥

तापसानन्दहृदया तापसानन्ददायिनी ।
तापसाश्रित-पादाब्जा तापसासक्तमानसा ॥१३९॥

तल्प-तल्पगता, ५९३. तल्पविधायिनी, ५९४. तल्पकृत, ५९५. तल्पगा, ५९६. तल्पदात्री, ५९७. तल्पतलाश्रया, ॥१३४॥ ५९८. तपनीयतला, ५९९. तपनीयरात्री, ६००. तपनीयांशुप्रार्थिनी, ६०१. तपनीयप्रदा, ६०२. तप्ता, ६०३. तपनीयाद्रिसस्थिता, ॥१३५॥ ६०४. तल्पेशी, ६०५. तल्पदा, ६०६. तल्पसंस्थिता, ६०७. तल्पवल्लभा, ६०८. तल्पप्रिया, ६०९. तल्परता, ६१०. तल्पनिर्माणकारिणी, ॥१३६॥ ६११. तरसा-पूजनासक्ता, ६१२. तरसावरदायिनी, ६१३. तरसासिद्धिसन्धात्री, ६१४. तरसामोक्षदायिनी, ॥१३७॥ ६१५. तापसी, ६१६. तापसाराध्या, ६१७. तापसार्त्तिविनाशिनी, ६१८. तापसार्त्ता, ६१९. तापसश्री, ६२०. तापस-प्रियवादिनी, ॥१३८॥ ६२१. तापसानन्दहृदया, ६२२. तापसानन्द-दायिनी, ६२३. तापसाश्रितपादाब्जा, ६२४. तापसासक्त-मानसा ॥१३९॥

तामसी तामसीपूज्या तामसीप्रणयोत्सुका ।
तामसी तामसीसीता तामसीशीघ्रसिद्धिदा ॥१४०॥

तालेशी तालभुक्तालदात्री तालोपमस्तनी ।
तालवृक्षस्थिता तालवृक्षजा तालरूपिणी ॥१४१॥

तार्क्षी तार्क्षसमारूढा तार्क्षेशी तार्क्षपूजिता ।
तार्क्षेश्वरी तार्क्षमाता तार्क्षेशी-वरदायिनी ॥१४२॥

तापी तु तापिनी तापसंहन्त्री तापनाशिनी ।
तापदात्री तापकर्त्री तापविध्वंसकारिणी ॥१४३॥

त्रासकर्त्री त्रासदात्री त्रासहर्त्री च त्रासहा ।
त्रासिता त्रासरहिता त्रासनिर्मूलकारिणी ॥१४४॥

---

६२५. तामसी, ६२६. तामसीपूज्या, ६२७. तामसी-प्रणयोत्सुका, ६२८. तामसी, ६२९. तामसीसीता, ६३०. तामसीशीघ्र-सिद्धिदा ॥१४०॥ ६३१. तालेशी, ६३२. तालभुक्, ६३३. तालदात्री, ६३४. तालोपमस्तनी, ६३५. तालवृक्षस्थिता, ६३६. तालवृक्षजा, ६३७. तालरूपिणी, ॥१४१॥ ६३८. तार्क्षी, ६३९. तार्क्षसमारूढा, ६४०. तार्क्षेशी, ६४१. तार्क्षपूजिता, ६४२. तार्क्षेश्वरी, ६४३. तार्क्ष-माता, ६४४. तार्क्षेशी, ६४५. तार्क्षवरदायिनी, ॥१४२॥ ६४६. तापी, ६४७. तापिनी, ६४८. तापसंहन्त्री, ६४९. तापनाशिनी. ६५०. तापदात्री, ६५१. तापकर्त्री, ६५२. तापविध्वंसकारिणी, ॥१४३॥ ६५३. त्रासकर्त्री, ६५४. त्रासदात्री, ६५५. त्रासहर्त्री, ६५६. त्रासहा, ६५७. त्रासिता, ६५८. त्रासरहिता, ६५९. त्रासनिर्मूलकारिणी, ॥१४४॥

त्राणकृत्-त्राणसंशीला तानेशी तानदायिनी ।
तानगानरता तानकारिणी तानगायिनी ॥१४५॥
तारुण्यामृतसम्पूर्णा तारुण्यामृतवारिधिः ।
तारुण्यामृतसन्तुष्टा तारुण्यामृततर्पिता ॥१४६॥
तारुण्यामृतपूर्णाङ्गी तारुण्यामृतविग्रहा ।
तारुण्यगुणसम्पन्ना तारुण्योक्तिविशारदा ॥१४७॥
ताम्बूली ताम्बुलेशानी ताम्बूलचर्वणोद्यता ।
ताम्बूलपूरितास्या च ताम्बूलारुणिताधरा ॥१४८॥
ताटङ्करत्नविख्याति-स्ताटङ्करत्नभूषिणी ।
ताटङ्करत्नमध्यस्था ताटङ्कद्वयभूषिता ॥१४९॥
तिथीशा तिथिसम्पूज्या तिथिस्था तिथिरूपिणी ।
त्रितिथिवासिनीसेव्या तिथीशवरदायिनी ॥१५०॥

---

६६०. त्राणकृत्, ६६१. त्राणसंशीला, ६६२. तानेशी, ६६३. तानदायिनी, ६६४. तानगानरता, ६६५. तानकारिणी, ६६६. तानगायिनी ॥१४५॥

६६७. तारुण्यामृतसम्पूर्णा, ६६८. तारुण्यामृतवारिधि, ६६९. तारुण्यामृतसन्तुष्टा, ६७०. तारुण्यामृततर्पिता, ॥ १४६ ॥ ६७१. तारुण्यामृतपूर्णाङ्गी, ६७२. तारुण्यामृतविग्रहा, ६७३. तारुण्यगुणसम्पन्ना, ६७४. तारुण्योक्तिविशारदा, ॥१४७॥ ६७५, ताम्बूली, ६७६. ताम्बुलेशानी, ६७७. ताम्बूलचर्वणोद्यता, ६७८ ताम्बूलपूरितास्या, ६७९. ताम्बूलारुणिताधरा, ॥ १४८ ॥ ६८०. ताटङ्करत्नविख्याति, ६८१. ताटङ्करत्नभूषिणी, ६८२. ताटङ्करत्नमध्यस्था, ६८३ ताटङ्कद्वयभूषिता,॥१४९॥ ६८४. तिथीशा, ६८५. तिथिसम्पूज्या, ६८६. तिथिस्था,

तिलोत्तमादिकाराध्या तिलोत्तमादिकप्रभा ।
तिलोत्तमा तिलप्रक्षा तिलाराध्या तिलार्चिता । १५१॥

तिलभुक् तिलसन्दात्री तिलतुष्टा तिलालया ।
तिलदा तिलसङ्काशा तिलतैलविधायिनी ॥१५२॥

तिलतैलोपलिप्ताङ्गी तिलतैलसुगन्धिनी ।
तिलाज्यहोमसन्तुष्टा तिलाज्यहोम-सिद्धिदा ॥१५३॥

तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता तिलपुष्पाञ्जलिप्रिया ।
तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठा तिलपुष्पाभनाशिनी ॥१५४॥

तिलकाश्रितसिन्दूरा तिलकाङ्कित-चन्दना ।
तिलकाहृतकस्तूरी तिलकामोदमोहिनी ॥१५५॥

---

६८७. तिथिरूपिणी, ६८८. त्रितिथिवासिनी, ६८९. त्रितिथिसेव्या, ६९०. तिथीशवरदायिनी, ॥ १५० ॥ ६९१. तिलोत्तमादिकाराध्या, ६९२. तिलोत्तमादिकप्रभा, ६९३. तिलोत्तमा, ६९४. तिलप्रक्षा, ६९५ तिलाराध्या, ६९६. तिलार्चिता, ॥ १५१ ॥ ६९७. तिलभुक्, ६९८. तिलसंदात्री, ६९९. तिलतुष्टा, ७००. तिलालया, ७०१. तिलदा, ७०२. तिलसङ्काशा, ७०३. तिलतैलविधायिनी, ॥१५२॥ ७०४. तिलतैलोपलिप्ताङ्गी, ७०५. तिलतैलसुगन्धिनी, ७०६. तिलाज्यहोमसन्तुष्टा, ७०७. तिलाज्यहोमसिद्धिदा, ॥ १५३॥ ७०८. तिलपुष्पाञ्जलिप्रीता, ७०९. तिलपुष्पाञ्जलिप्रिया, ७१०. तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठा, ७११. तिलपुष्पाभनाशिनी, ॥ १५४ ॥ ७१२. तिलकाश्रितसिन्दूरा, ७१३. तिलकाङ्कितचन्दना, ७१४. तिलकाहृतकस्तूरी, ७१५. तिलकामोदमोहिनी, ॥ १५५ ॥

त्रिगुणा त्रिगुणाकारा त्रिगुणान्वितविग्रहा ।
त्रिगुणाकार-विख्याता त्रिमूर्तिस्त्रिगुणात्मिका ॥१५६॥
त्रिशिरा त्रिपुरेशानी त्रिपुरा त्रिपुरेश्वरी ।
त्रिपुरेशी त्रिलोकस्था त्रिपुरी त्रिपुराम्बिका ॥१५७॥
त्रिपुरारिसमाराध्या त्रिपुरारिवरप्रदा ।
त्रिपुरारिशिरोभूषा त्रिपुरारिवरप्रदा ॥१५८॥
त्रिपुरारीष्टसंदात्री त्रिपुरारीष्टदेवता ।
त्रिपुरारिकृताद्धाङ्गी त्रिपुरारिविलासिनी ॥१५९॥
त्रिपुरासुरसहन्त्री त्रिपुरासुरमर्दिनी ।
त्रिपुरासुरसंसेव्या त्रिपुरासुरवर्य्यया ॥१६०॥
त्रिकुटा त्रिकुटाराध्या त्रिकुटार्चितविग्रहा ।
त्रिकुटाचलमध्यस्था त्रिकुटाचलवासिनी ॥१६१॥

---

७१६. त्रिगुणा, ७१७. त्रिगुणाकारा, ७१८. त्रिगुणान्वित-विग्रहा, ७१९. त्रिगुणाकारविख्याता, ७२०. त्रिमूर्त्ति, ७२१. त्रिगुणात्मिका, ॥१५६॥ ७२२. त्रिशिरा, ७२३. त्रिपुरेशानी, ७२४. त्रिपुरा, ७२५. त्रिपुरेश्वरी, ७२६. त्रिपुरेशी, ७२७. त्रिलोकस्था, ७२८. त्रिपुरी, ७२९. त्रिपुराम्बिका, ॥१५७॥ ७३०. त्रिपुरारिसमाराध्या, ७३१. त्रिपुरारिवरप्रदा, ७३२. त्रिपुरारिशिरोभूषा, ७३३. त्रिपुरारि-वरप्रदा, ॥१५८॥ ७३४. त्रिपुरारीष्टसंदात्री, ७३५ त्रिपुरारीष्टदेवता, ७३६. त्रिपुरारिकृताद्धाङ्गी, ७३७. त्रिपुरारिविलासिनी, ॥१५९॥

७३८. त्रिपुरासुरसंहन्त्री, ७३९. त्रिपुरासुरमर्दिनी, ७४०. त्रिपुरासुर-संसेव्या, ७४१. त्रिपुरासुरवर्य्यया, ॥१६०॥ ७४२. त्रिकुटा, ७४३. त्रिकुटा-राध्या, ७४४. त्रिकुटार्चितविग्रहा, ७४५. त्रिकुटाचलमध्यस्था, ७४६.

त्रिकुटाचलसञ्जाता त्रिकुटाचलनिर्गता ।
त्रिजटा त्रिजटेशानी त्रिजटावरदायिनी ॥१६२॥

त्रिनेत्रेशी त्रिनेत्रा च त्रिनेत्रवरवर्णिनी ।
त्रिवली त्रिवलीयुक्ता त्रिशूलवरधारिणी ॥१६३॥

त्रिशूलेशी त्रिशूलीशी त्रिशूलभृत् त्रिशूलिनी ।
त्रिमनुस्त्रिमनूपास्या त्रिमनूपासकेश्वरी ॥१६४॥

त्रिमनुजपसन्तुष्टा त्रिमनुस्तूर्णसिद्धिदा ।
त्रिमनुपूजनप्रीता त्रिमनुध्यानमोक्षदा ॥१६५॥

त्रिविधा त्रिविधाभक्तिस्त्रिमता त्रिमतेश्वरी ।
त्रिभावस्था त्रिभावेशी त्रिभावपरिपूरिता ॥१६६॥

त्रितत्त्वात्मा त्रितत्त्वेशी त्रितत्त्वज्ञा त्रितत्त्वधृक् ।
त्रितत्त्वाचमनप्रीता त्रितत्त्वाचमनेष्टदा ॥१६७॥

त्रिकुटाचलवासिनी,॥१६१॥ ७४७ त्रिकुटाचलसञ्जाता, ७४८.त्रिकुटाचलनिर्गता, ७४९.त्रिजटा, ७५०.त्रिजेटशानी, ७५१.त्रिजटावरदायिनी, ॥१६२॥ ७५२. त्रिनेत्रेशी, ७५३. त्रिनेत्रा, ७५४. त्रिनेत्रवरवर्णिनी, ७५५. त्रिवली, ७५६. त्रिवलीयुक्ता, ७५७. त्रिशूलवरधारिणी, ॥१६३॥ ७५८. त्रिशूलेशी, ७५९. त्रिशूलीशी, ७६०. त्रिशूलभृत्, ७६१. त्रिशूलिनी, ७६२. त्रिमनु, ७६३. त्रिमनूपास्या, ७६४.त्रिमनूपासकेश्वरी, ॥१६४॥ ७६५. त्रिमनुजपसन्तुष्टा, ७६६. त्रिमनु, ७६७. तूर्णसिद्धिदा, ७६८. त्रिमनूपूजनप्रीता, ७६९. त्रिमनुध्यानमोक्षदा, ॥१६५॥ ७७०. त्रिविधा, ७७१. त्रिविधाभक्ति, ७७२. त्रिमता, ७७३, त्रिमतेश्वरी, ७७४. त्रिभावस्था, ७७५. त्रिभावेशी, ७७६. त्रिभावपरिपूरिता॥१६६॥ ७७७. त्रितत्त्वात्मा, ७७८. त्रितत्त्वेशी, ७७९. त्रितत्त्वज्ञा, ७८०

त्रिकोणस्था त्रिकोणेशी त्रिकोणचक्रवासिनी ।
त्रिकोणचक्रमध्यस्था त्रिकोणबिन्दुरूपिणी ॥१६८॥
त्रिकोणयन्त्रसंस्थाना त्रिकोणयन्त्ररूपिणी ।
त्रिकोणयन्त्रसम्पूज्या त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा ॥१६९॥
त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णेशी त्रिवर्णोपासिरूपिणी ।
त्रिवर्णस्था त्रिवर्णाढ्या त्रिवर्णवरदायिनी ॥१७०॥
त्रिवर्णाद्या त्रिवर्णार्च्या त्रिवर्गफलदायिनी ।
त्रिवर्गाढ्या त्रिवर्गेशी त्रिवर्गाद्यफलप्रदा ॥१७१॥
त्रिसन्ध्यार्च्या त्रिसन्ध्येशी त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा ।
त्रिसन्ध्यार्चन-सन्तुष्टा त्रिसन्ध्याजप-मोक्षदा ॥१७२॥

त्रितत्त्वधृक्, ७८१. त्रितत्त्वाचमनप्रीता, ७८२. त्रितत्त्वाचमनेष्टदा, ॥१६७॥

७८३. त्रिकोणस्था, ७८४. त्रिकोणेशी, ७८५. त्रिकोणचक्रवासिनी, ७८६. त्रिकोणचक्रमध्यस्था, ७८७. त्रिकोणबिन्दुरूपिणी, ॥१६८॥ ७८८. त्रिकोणयन्त्रसंस्थाना, ७८९. त्रिकोणयन्त्ररूपिणी, ६९०. त्रिकोणयन्त्रसम्पूज्या, ७९१. त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदा, ॥१६९॥ ७९२. त्रिवर्णाढ्या, ७९३. त्रिवर्णेशी, ७९४. त्रिवर्णोपासिरूपिणी, ७९५. त्रिवर्णस्था, ७९६. त्रिवर्णाढ्या ७९७. त्रिवर्णवरदायिनी, ॥१७०॥ ७९८. त्रिवर्णाद्या, ७९९. त्रिवर्णार्च्या, ८००. त्रिवर्गफलदायिनी, ८०१. त्रिवर्गाढ्या ८०२. त्रिवर्गेशी, ८०३. त्रिवर्गाद्या, ८०४ त्रिवर्गफलप्रदा, ॥१७१॥ ८०५. त्रिसन्ध्यार्च्या, ८०६. त्रिसन्ध्येशी, ८०७. त्रिसन्ध्याराधनेष्टदा, ८०८. त्रिसन्ध्यार्चनसन्तुष्टा, ८०९. त्रिसन्ध्याजपमोक्षदा, ॥१७२॥

त्रिपदाराधितपदा त्रिपदा त्रिपदेश्वरी ।
त्रिपदाप्रतिपाद्येशी त्रिपदाप्रतिपादिका ॥१७३॥
त्रिशक्तिश्च त्रिशक्तेशी त्रिशक्तेष्टफलप्रदा ।
त्रिशक्तेष्टा त्रिशक्तीष्टा त्रिशक्तिपरिवेष्टिता ॥१७४॥
त्रिवेणी च त्रिवेणीस्त्री त्रिवेणीमाधवार्चिता ।
त्रिवेणीजलसन्तुष्टा त्रिवेणीस्नानपुण्यदा ॥१७५॥
त्रिवेणीजलसंस्नाता त्रिवेणीजलरूपिणी ।
त्रिवेणीजलपूताङ्गी त्रिवेणीजलपूजिता ॥१७६॥
त्रिनाडीस्था त्रिनाडीशी त्रिनाडीमध्यगामिनी ।
त्रिनाडीसन्ध्यसञ्छेद्या त्रिनाडी च त्रिकोटिनी ॥१७७॥
त्रिपञ्चाशत्-त्रिरेखा च त्रिशक्तिपथगामिनी ।
त्रिपथस्था त्रिलोकेशी त्रिकोटिकुलमोक्षदा ॥१७८॥

---

८१०. त्रिपदाराधितपदा, ८११. त्रिपदा, ८१२. त्रिपदेश्वरी, ८१३. त्रिपदाप्रतिपाद्या, ८१४. त्रिपदेशी, ८१५. त्रिपदाप्रतिपादिका, ॥१७३॥ ८१६. त्रिशक्ति, ८१७. त्रिशक्तेशी, ८१८. त्रिशक्तेष्टफलप्रदा, ८१९. त्रिशक्तेष्टा, ८२०. त्रिशक्तीष्टा, ८२१. त्रिशक्तिपरिवेष्टिता, ॥१७४॥ ८२२. त्रिवेणी, ८२३. त्रिवेणीस्त्री, ८२४. त्रिवेणीमाधवार्चिता, ८२५. त्रिवेणीजलसन्तुष्टा, ८२६. त्रिवेणीस्नानपुण्यदा, ॥१७५॥ ८२७. त्रिवेणीजलसंस्नाता, ८२८. त्रिवेणीजलरूपिणी, ८२९. त्रिवेणीजलपूताङ्गी, ८३०. त्रिवेणीजलपूजिता, ॥१७६॥ ८३१. त्रिनाडीस्था, ८३२. त्रिनाडीशी, ८३३. त्रिनाडीमध्यगामिनी, ८३४. त्रिनाडीसन्ध्यसञ्छेद्या ८३५. त्रिनाडी, ८३६. त्रिकोटिनी ॥१७७॥ ८३७. त्रिपञ्चाशत्, ८३८. त्रिरेखा, ८३९. त्रिशक्ति, ८४०. त्रिपथगामिनी, ८४१. त्रिपथस्था, ८४२. त्रिलोकेशी,

त्रिरामेशी त्रिरामार्च्या त्रिरामवरदायिनी ।
त्रिदशाश्रितपादाब्जा त्रिदशालयचञ्चला ॥१७९॥
त्रिदशा त्रिदशप्रार्थ्या त्रिदशाशुवरप्रदा ।
त्रिदशैश्वर्यसम्पन्ना त्रिदशेश्वरसेविता ॥१८०॥
त्रियामार्च्या त्रियामेशी त्रियामानन्तसिद्धिदा ।
त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना त्रियामेशाधिकानना ॥१८१॥
त्रियामानाथवत्सौम्या त्रियामानाथभूषणा ।
त्रियामानाथलावण्या-रत्नकोटियुताननना ॥१८२॥
त्रिकालस्था त्रिकालज्ञा त्रिकालज्ञत्वकारिणी ।
त्रिकालेशी त्रिकालार्च्या त्रिकालज्ञत्वदायिनी ॥१८३॥
तीरभुक् तीरगा तीरसरिता तीरवासिनी ।
तीरभुग्देशसञ्जाता तीरभुग्देशसंस्थिता ॥१८४॥

---

८४३ त्रिकोटिकुलमोक्षदा॥१७८॥ ८४४.त्रिरामेशी, ८४५.त्रिरामार्च्या, ८४६. त्रिरामवरदायिनी, ८४७. त्रिदशाश्रितपादाब्जा, ८४८.त्रिदशालयचञ्चला॥१७९॥ ८४९.त्रिदशा, ८५०.त्रिदशप्रार्थ्या, ८५१.त्रिदशाशुवरप्रदा, ८५२. त्रिदशैश्वर्यसम्पन्ना, ८५३. त्रिदशेश्वरसेविता, ॥१८०॥ ८५४. त्रियामार्च्या, ८५५. त्रियामेशी, ८५६. त्रियामानन्तसिद्धिदा, ८५७. त्रियामेशाधिकज्योत्स्ना, ८५८. त्रियामेशाधिकानना, ॥१८१॥

८५९. त्रियामानाथवत्सौम्या, ८६०. त्रियामानाथभूषणा, ८६१. त्रियामानाथलावण्या, ८६२. त्रिरत्नकोटियुताननना, ॥१८२॥ ८६३. त्रिकालस्था, ८६४. त्रिकालज्ञा, ८६५. त्रिकालज्ञत्वकारिणी, ८६६. त्रिकालेशी, ८६७. त्रिकालार्च्या, ८६८. त्रिकालज्ञत्वदायिनी, ॥१८३॥ ८६९. तीरभुक, ८७०. तीरगा, ८७१. तीरसरिता, ८७२. तीरवासिनी,

तिग्मातिग्मांशुसङ्काशा तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता ।
तिग्मांशुकोटि-दीप्ताङ्गी तिग्मांशुकोटिविग्रहा ॥१८५॥
तीक्ष्णा तीक्ष्णतरा तीक्ष्णमहिषासुरमर्दिनी ।
तीक्ष्णकर्त्रि-लसत्पाणि-स्तीक्ष्णासि-वरधारिणी ॥१८६॥
तीव्रा - तीव्रगतिस्तीव्रा - सुरसङ्घ - विनाशिनी ।
तीव्राष्टनागाभरणा तीव्रमुण्डविभूषणा ॥१८७॥
तीर्थात्मिका तीर्थमयी तीर्थेशी तीर्थपूजिता ।
तीर्थराजेश्वरी तीर्थफलदा तीर्थदानदा ॥१८८॥
तुमुली तुमुलप्राज्ञी तुमुलासुरघातिनी ।
तुमुलक्षतजप्रीता तुमुलाङ्गणनर्त्तकी ॥१८९॥
तुरगी तुरगारूढा तुरङ्गपृष्ठगामिनी ।
तुरङ्गगमनाह्लादा तुरङ्गवेगगामिनी ॥१९०॥

---

८७३. तीरभूग्देशसञ्जाता, ८७४. तीरभूग्देशसंस्थिता, ॥१८४॥ ८७५. तिग्मा, ८७६. तिग्मांशुसङ्काशा, ८७७. तिग्मांशुक्रोडसंस्थिता, ८७८. तिग्मांशुकोटिदीप्ताङ्गी, ८७९. तिग्मांशुकोटिविग्रहा, ॥१८५॥ ८८०. तीक्ष्णा, ८८१. तीक्ष्णतरा, ८८२. तीक्ष्णमहिषासुरमर्दिनी, ८८३. तीक्ष्णकर्त्रिलसत्पाणि, ८८४. तीक्ष्णासिवरधारिणी, ॥१८६॥ ८८५. तीव्रा-तीव्रगति, ८८६. तीव्रासुरसङ्घविनाशिनी, ८८७. तीव्राष्टनागाभरणा, ८८८. तीव्रमुण्डविभूषणा, ॥ ८७॥ ८८९. तीर्थात्मिका, ८९०. तीर्थमयी, ८९१ तीर्थेशी, ८९२. तीर्थपूजिता, ८९३. तीर्थराजेश्वरी, ८९४. तीर्थफलदा, ८९५. तीर्थदानदा, ॥१८८॥ ८९६. तुमुली, ८९७. तुमुलप्राज्ञी, ८९८. तुमुलासुरघातिनी, ८९९. तुमुलक्षतजप्रीता, ९००. तुमुलाङ्गणनर्त्तकी, ॥ १८९ ॥ ९०१. तुरगी, ९०२. तुरगारूढा,

तुरीया तुलना तुल्या तुल्यवृत्तिस्तु तुल्यकृत् ।
तुलनेशी तुलाराशिस्तुलाराशी त्वसूक्ष्मवित् ॥१९१॥

तुम्बिका तुम्बिकापात्र-भोजना तुम्बिकार्थिनी ।
तुलसी तुलसीवर्या तुलजा तुलजेश्वरी ॥१९२॥

तुषाग्निव्रत-सन्तुष्टा तुषाग्निस्तुषराशिकृत् ।
तुषारकरशीताङ्गी तुषारकरपूर्त्तिकृत् ॥१९३॥

तुषाराद्रिस्तुषाराद्रिसुता तुहिनदीधितिः ।
तुहिनाचलकन्या च तुहिनाचलवासिनी ॥१९४॥

तूर्यवर्गेश्वरी तूर्यवर्गदा तूर्यवेददा ।
तूर्यवर्यात्मिका तूर्यतूर्येश्वरस्वरूपिणी ॥१९५॥

---

९०३. तुरङ्गपृष्ठगामिनी, ९०४. तुरङ्गगमनाह्लादा, ९०५. तुरङ्गवेग-गामिनी, ॥१९०॥

९०६. तुरीया, ९०७. तुलना, ९०८. तुल्या, ९०९. तुल्यवृत्ति, ९१०. तुल्यकृत्, ९११. तुलनेशी, ९१२. तुलाराशि, ९१३. तुलाराशी, ९१४. त्वसूक्ष्मवित्, ॥१९१॥ ९१५. तुम्बिका, ९१६. तुम्बिकापात्र-भोजना, ९१७. तुम्बिकार्थिनी, ९१८. तुलसी, ९१९. तुलसीवर्या, ९२०. तुलजा, ९२१. तुलजेश्वरी, ॥१९२॥ ९२२. तुषाग्निव्रतसन्तुष्टा, ९२३. तुषाग्नि, ९२४. तुषराशिकृत्, ९२५. तुषारकरशीताङ्गी, ९२६. तुषार-करपूर्त्तिकृत्, ॥१९३॥ ९२७. तुषाराद्रि, ९२८. तुषाराद्रिसुता, ९२९. तुहिनदीधिति, ९३०. तुहिनाचलकन्या, ९३१. तुहिनाचल-वासिनी, ॥१९४॥ ९३२. तुर्यवर्गेश्वरी, ९३३. तूर्यवर्गदा, ९३४. तूर्यवेददा, ९३५. तूर्यवर्यात्मिका, ९३६. तूर्या, ९३७. तूर्येश्वर-

तुष्टिदा तुष्टिकृत् तुष्टिस्तूणीरद्वयपृष्ठधृक् ।
तुम्बुराज्ञानसन्तुष्टा तुष्टसंसिद्धिदायिनी ॥१९६॥
तूर्णराज्यप्रदा तूर्णगद्गदा तूर्णपद्यदा ।
तूर्णपाण्डित्यसंदात्री तूर्णापूर्णबलप्रदा ॥१९७॥
तृतीया च तृतीयेशी तृतीयातिथिपूजिता ।
तृतीयाचन्द्रचूडेशी तृतीयाचन्द्रभूषणा ॥१९८॥
तृप्तिस्तृप्तिकरी तृप्ता तृष्णा तृष्णाविवर्द्धिनी ।
तृष्णापूर्णकरी तृष्णानाशिनी तृषिता तृषा ॥१९९॥
त्रेतासंसाधिता त्रेता त्रेतायुगफलप्रदा ।
त्रैलोक्यपूजा त्रैलोक्यदात्री त्रैलोक्यसिद्धिदा ॥२००॥
त्रैलोक्येश्वरतादात्री त्रैलोक्यपरमेश्वरी ।
त्रैलोक्यमोहनेशानी त्रैलोक्यराज्यदायिनी ॥२०१॥

स्वरूपिणी ॥१९५॥ ९३८. तुष्टिदा, ९३९. तुष्टिकृत् ९४०. तुष्टि ९४१. तूणीरद्वयपृष्ठधृक्, ९४२. तुम्बुराज्ञानसन्तुष्टा, ९४३ तुष्टसंसिद्धिदायिनी, ॥१९६॥ ९४४. तूर्णराज्यप्रदा, ९४५. तूर्णगद्गदा, ९४६. तूर्णपद्यदा, ९४७. तूर्णपाण्डित्यसंदात्री, ९४८. तूर्णा, ९४९ तूर्णबलप्रदा, ॥१९७॥ ९५०. तृतीया, ९५१. तृतीयेशी, ९५२. तृतीयातिथिपूजिता, ९५३. तृतीयाचन्द्रचूडेशी, ९५४. तृतीयाचन्द्रभूषणा, ॥१९८॥ ९५५. तृप्ति, ९५६. तृप्तिकरी, ९५७. तृप्ता, ९५८. तृष्णा, ९५९. तृष्णाविवर्द्धिनी, ९६०. तृष्णापूर्णकरी, ९६१. तृष्णानाशिनी, ९६२. तृषिता., ९६३. तृषा, ॥१९९॥ ९६४. त्रेतासंसाधिता, ९६५. त्रेता, ९६६. त्रेतायुगफलप्रदा, ९६७. त्रैलोक्यपूजया, ९६८. त्रैलोक्यदात्री, ९६९. त्रैलोक्यसिद्धिदा, ॥२००॥ ९७०. त्रैलोक्येश्वरतादात्री, ९७१.

तैत्रिंशाखेश्वरी तैत्रीशाखा तैत्रविवेकदा ।
तोरणान्वितगेहस्था तोरणासक्तमानसा ॥२०२॥
तोलकास्वर्णसंदात्री तोलकास्वर्णकङ्कणा ।
तोमरायुधरूपा च तोमरायुधधारिणी ॥२०३॥
तौर्यत्रिकेश्वरी तौर्यन्त्रिकी तौर्यन्त्रिकोत्सुकी ।
तन्त्रकृत्तन्त्रवत्सूक्ष्मा तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी ॥२०४॥
तन्त्रकृत्तन्त्रसम्पूज्या तन्त्रेशी तन्त्रसम्मता ।
तन्त्रज्ञा तन्त्रवित्तन्त्रसाध्या तन्त्रस्वरूपिणी ॥२०५॥
तन्त्रस्था तन्त्रजा तन्त्री तन्त्रभृत्तन्त्रमन्त्रदा ।
तन्त्राद्या तन्त्रगा तन्त्रा तन्त्रार्च्या तन्त्रसिद्धिदा ॥२०६॥

त्रैलोक्यपरमेश्वरी, ९७२. त्रैलोक्यमोहनेशानी, ९७३. त्रैलोक्येशानी, ९७४. त्रैलोक्यराज्यदायिनी, ॥२०१॥ ९७५. तैत्रिंशाखेश्वरी, ९७६.तैत्रीशाखा, ९७७.तैत्रविवेकदा, ९७८.तोरणान्वितगेहस्था, ९७९. तोरणासक्तमानसा, ॥ २०२ ॥ ९८० तोलकास्वर्णसदात्री, ९८१. तोलकास्वर्णकङ्कणा, ९८२. तोमरायुधरूपा, ९८३. तोमरायुधधारिणी, ॥ २०३ ॥

९८४. तौर्यत्रिकेश्वरी, ९८५. तौर्यन्त्रिकी, ९८६.तौर्यन्त्रिकोत्सुकी, ९८७.तन्त्रकृत्, ९८८.तन्त्रवत्सूक्ष्मा, ९८९.तन्त्रमन्त्रस्वरूपिणी, ॥२०४॥ ९९०.तन्त्रकृत्, ९९१. तन्त्रसम्पूज्या, ९९२. तन्त्रेशी, ९९३.तन्त्रसम्मता, ९९४. तन्त्रज्ञा, ९९५.तन्त्रवित्; ९९६.तन्त्रसाध्या, ९९७.तन्त्रस्वरूपिणी, ॥२०५॥ ९९८.तन्त्रस्था, ९९९.तन्त्रजा, १०००.तन्त्री, १००१.तन्त्रभृत्, १००२. तन्त्रमन्त्रदा, १००३.तन्त्राद्या, १००४.तन्त्रगा, १००५. तन्त्रा, १००६. तन्त्रार्च्या, १००७. तन्त्रसिद्धिदा, १००८.तन्त्रसिद्धिदा ॥२०६॥

फलश्रुतिः —

इति ते कथितं दिव्यं क्रतुकोटिफलप्रदम् ।
नाम्नां सहस्रतारायास्तकाराद्यं सुगोपितम् ॥२०७॥
दानं यज्ञस्तपस्तीर्थं व्रतं चानशनादिकम् ।
एकैकनामजं पुण्यं सन्ध्यातुर्गदितं मया ॥२०८॥
गुरौ देवे तथा मन्त्रे यस्य स्यान्निश्चला मतिः ।
तस्यैव स्तोत्रपाठेऽस्मिन् सम्भवेदधिकारिता ॥२०९॥
महाचीनक्रमाभिन्न-षोढान्यस्तकलेवरः ।
क्रमदीक्षान्वितो मन्त्री पठेदेतन्न चाऽन्यथा ॥२१०॥
गन्ध-पुष्पादिभिर्द्रव्यैर्मकारैः पञ्चकैर्द्विजः ।
सम्पूज्य तारां विधिवत् पठेदेतदनन्यधीः ॥२११॥

फलस्तुति—ब्रह्मा जी ने कहा—हे वशिष्ठ ! इस प्रकार मैंने करोड़ों यज्ञों के फल देने वाले भगवती तारा के तकारादि नामों को, जो परम गोपनीय है, उसे कहा ॥२०७॥

यह तारा सहस्रनाम, जिसका उपदेश मैंने तुमसे किया है, उनमें एक-एक नाम का ध्यान करने वालों को वे नाम दान, यज्ञ, तप, तीर्थ, व्रत एवं उपवास से होने वाले पुण्य फल प्रदान करते हैं ॥२०८॥

गुरु, देवता तथा मन्त्र में जिसकी निश्चल बुद्धि रहती है, उसीका इस स्तोत्र के पाठ में अधिकार है ॥२०९॥

महाचीनक्रम से जिसके शरीर का छह प्रकार से संस्कार हो चुका है और जिसे गुरु-परम्परा-क्रम से तारा मन्त्र की दीक्षा प्राप्त हुई हो, वही इस स्तोत्र के पाठ का अधिकारी है, अन्य नहीं ॥२१०॥

हे वशिष्ठ ! गन्ध-पुष्पादि द्रव्यों से तथा पञ्च मकारों से तारा का

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां सङ्क्रान्तौ रविवासरे ।
शनिभौमदिने रात्रौ ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥२१२॥
तारारात्रौ कालरात्रौ मोहरात्रौ विशेषतः ।
पठनान्मन्त्रसिद्धिः स्यात् सर्वज्ञत्वं प्रजायते ॥२१३॥
श्मशाने प्रान्तरे रम्ये शून्यागारे विशेषतः ।
देवागारे गिरौ वाऽपि स्तवपारायणं चरेत् ॥२१४॥
ब्रह्महत्या सुरापानं स्तेयं स्त्रीगमनादिकम् ।
गुरुतल्पे तथा चाऽन्यत् पातकं नश्यति ध्रुवम् ॥२१५॥
लतामध्यगतो मन्त्री श्रद्धया चार्चयेद्यदि ।
आकर्षयेत्तदा रम्भां मेनामपि तथोर्वशीम् ॥२१६॥

पूजन कर एकाग्रचित्त से इस तारा-सहस्रनाम का पाठ करे ॥२११॥

अष्टमी, चतुर्दशी, संक्रान्ति, रविवार के दिन तथा शनि, भौम के दिन आने पर रात्रि में तथा सूर्य-चन्द्र के ग्रहण काल में इस स्तोत्र का पाठ करना चाहिए ॥ २१२ ॥

तारारात्रि (महारात्रि), कालरात्रि तथा मोहरात्रि में इस मन्त्र के पाठ करने से मन्त्र की सिद्धि होती है तथा सर्वज्ञता प्राप्त होती है ॥२१३॥

श्मशान में, घोर जङ्गल में, किसी सुरम्य स्थान में, विशेष कर शून्य घर में, देवालय में अथवा पहाड़ पर इस स्तोत्र का पारायण करना चाहिए ॥२१४॥

ब्रह्महत्या, सुरापान, स्तेय, परस्त्रीगमन तथा गुरुतल्पादि गमन एवं अन्य किसी प्रकार के भी पाप इस स्तोत्र के पाठ से निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं ॥२१५॥

मन्त्र को सिद्ध करने वाला साधक लता-मण्डप के मध्य में बैठ कर श्रद्धा से यदि भगवती तारा का अर्चन करे, तो वह रम्भा, मेनका

संग्रामसमये वीरस्तारासाम्राज्यकीर्त्तनात् ।
चतुरङ्गचयं जित्वा सर्वसाम्राज्यभाग् भवेत् ॥२१७॥
निशार्द्धे पूजनान्ते च प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् ।
एकैक-करवीराद्यैर्मन्दाद्यै - र्नीलवारिजैः ॥२१८॥
गद्यपद्यमयीवाणी भूभोज्या च प्रवर्त्तते ।
पाण्डित्यं सर्वशास्त्रेषु वादो त्रस्यति दर्शनात् ॥२१९॥
वह्निजायान्तकैरेतैस्ताराद्यैः प्रतिनामभिः ।
राजन्यं सर्वराजेषु परकायप्रवेशनम् ॥२२०॥
अन्तर्द्धानं खेचरत्वं बहुकायप्रकाशनम् ।
गुटिका पादुका पद्मावती मधुमती तथा ॥२२१॥

और उर्वशी-जैसी अप्सराओं को भी अपनी ओर आकृष्ट करने में समर्थ हो जाता है ॥२१६॥

संग्राम के समय यदि योद्धा साम्राज्य-दायक इस स्तोत्र का पाठ करे, तो वह शत्रु की चतुरङ्गिणी सेना को भी विजय कर सर्वसाम्राज्य का लाभ कर लेता है ॥२१७॥

आधीरात के समय भगवती तारा का अर्चन कर एक-एक नाम से करवीर (कनैल), मन्दार तथा नीले कमल से साधक यदि पूजा करे तो उसके मुख से गद्य भी पद्यमयी वाणी के रूप में निकलने लगते हैं और पृथ्वी के समस्त भोग उसे अनायास प्राप्त हो जाते हैं ॥२१८-२१९॥

इन नामों के प्रत्येक नाम के आगे वह्निजाया (स्वाहा) तथा अन्त में 'नमः'पद लगा कर तारा आदि तकार युक्त सहस्र नाम से पूजाकरे, तो साधक राजाओं का भी राजा हो जाता है। उसे परकाय प्रवेश, अन्तर्द्धान, आकाश गमन, अपने शरीर को विस्तृत कर लेना, गुटिका,

रसं रसायनाः सर्वाः सिद्धयः समुपस्थिताः ।
कर्पूरागरु-कस्तूरी-चन्दनैः संयुतैर्जलैः ।।२२२।।

मूलं सम्पुटितेनैव प्रतिनाम्ना प्रपूजयेत् ।
यक्ष-राक्षस-गन्धर्वा विद्याधर-महोरगाः ।।२२३।।

भूत-प्रेत-पिशाचाद्या डाकिनी-शाकिनीगणाः ।
दुष्टा भैरववेतालाः कूष्माण्डाः किन्नरीगणाः ।।२२४।

भयभीताः पलायन्ते तेजसा साधकस्य च ।
मन्त्रज्ञाने समुत्पन्ने प्रतिनाम्ना विचारयेत् ।।२२५।।

मन्त्रसम्पुटितेनैव तस्य शान्तिर्भवेद् ध्रुवम् ।
ललिता वशमायाति दास्यतां यान्ति पार्थिवाः ।।२२६।।

पादुका, पद्मावती, मधुमती, रसरसायन आदि सभी सिद्धियाँ अनायास उपस्थित हो जाती हैं ।।२२०-२२२।।

कपूर, अगुरु, कस्तूरी तथा चन्दन युक्त जल से मूल मन्त्र (ऐं ॐ ह्रीं क्लीं हुँ फट्) से सम्पुटित कर प्रत्येक नाम से तारा देवी का पूजन करना चाहिए । ऐसा करने से यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, विद्याधर, भयानक सर्प, भूत, प्रेत, पिशाचादि, डाकिनियाँ एवं शाकिनियों के समूह, दुष्ट, भैरव, बैताल, कूष्माण्ड एवं किन्नरियों के समूह उस साधक के भय से भयभीत होकर भाग जाते हैं । मन्त्र के प्रत्येक नाम के अर्थों को विचार कर तब पूजन करना चाहिए । मूल मन्त्र के सम्पुट से नामार्थों को विचार कर जो पूजन करता है, उसके घरमें निश्चित रूप से शान्ति रहती है । सुन्दर-से-सुन्दर स्त्रियाँ ऐसे पुरुष के वश में हो जाती हैं तथा राजागण सेवक बन जाते हैं ।।२२३-२२६।।

अग्नयः शीततां यान्ति जापकस्य च भाषणात् ।
एकावर्त्तनमात्रेण राजभीतिनिवारणम् ॥२२७॥
वेलावर्त्तनमात्रेण पशुवृद्धिः प्रजायते ।
दशावृत्त्या धनप्राप्तिर्विंशत्या राज्यमाप्नुयात् ॥२२८॥
शतावृत्त्या गृहे तस्य चञ्चला निश्चला भवेत् ।
गङ्गाप्रवाहवद् वाणी प्रलापादपि जायते ॥२२९॥
पुत्रपौत्रान्वितो मन्त्री चिरञ्जीवी तु देववत् ।
शतद्वयावर्त्तनेन देववत् पूज्यते जनैः ॥२३०॥
शतपञ्चकमावर्त्य स भवेद्भैरवोपमः ।
सहस्रावर्त्तनेनैव मन्त्रस्तस्य स्वसिद्धिदः ॥२३१॥

जापक के कहने मात्र से अग्नि शीत पड़ जाती है। मात्र एक आवृत्ति के पाठ से समस्त राजभय दूर हो जाते हैं ॥२२७॥

दिन के प्रत्येक वेला (प्रातः, मध्याह्न एवं सायंकाल) में आवृत्ति करने से पशुओं की वृद्धि होती है। प्रतिदिन दश आवृत्ति पाठ करने से धन की प्राप्ति तथा बीस आवृत्ति प्रतिदिन पाठ करने से राज्य की प्राप्ति होती है ॥२२८॥

सौ आवृत्ति प्रतिदिन पाठ करने से लक्ष्मी घर में स्थिर रूप से निवास करने लगती हैं। ऐसे पुरुष प्रलाप काल में भी गङ्गा प्रवाह के समान निर्मल और अविच्छिन्न वाणी बोलने लगते हैं ॥२२९॥

तारा मन्त्र का उपासक पुत्र-पौत्रादि से युक्त होकर देवता के समान चिरञ्जीवी बन जाता है। इतना ही नहीं, दो सौ आवृत्ति के पाठ से वह साधक मनुष्यों के द्वारा देववत् पूजित होता है ॥२३०॥

दो सौ पाँच आवृत्ति पाठ करने वाला साक्षात् भैरव के समान हो जाता है। एक हजार बार पाठ करने से मन्त्र स्वयं सिद्धि प्रदान करता है ॥२३१॥

तस्मिन् प्रवर्त्तिते सर्वसिद्धिः सर्वार्थसाधिनी ।
पादुकां च न वेताला पाताल-गगनादिकम् ॥२३२॥
विविधा यक्षिणीसिद्धिर्वाक् सिद्धिस्तस्य जायते ।
शोषणं सागराणां च धारायां भ्रमणं तथा ॥२३३॥
नवीनसृष्टिनिर्माणं सर्वकर्त्तुः क्षमो भवेत् ।
अयुतावर्त्तनेनैव तारां पश्यति चक्षुषा ॥२३४॥
लक्षावर्त्तनमात्रेण तारापतिसमो भवेत् ।
न किञ्चिद् दुर्लभं तस्य जीवन्मुक्तो हि भूतले ॥२३५॥
कल्पान्तेन तु तत्पश्चात्तारासायुज्यमाप्नुयात् ।
यद्धि तारासमा विद्या नास्ति तारुण्यरूपिणी ॥२३६॥

ऐसे लोगों को समस्त अर्थ प्रदान करने वाली सिद्धि अपने-आप प्राप्त हो जाती है। पादुका से सर्वत्र गमन, वेताल, पाताल गमन, गगन गमन, अनेक प्रकार की यक्षिणी-सिद्धि तथा वाक्सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं, ऐसा पुरुष समुद्र शोषण, धारा में गमन करने लग जाता है ॥२३२-२३३॥

किं बहुना वह नवीन सृष्टि के निर्माण में सक्षम हो जाता है। दशहजार आवृत्ति से साधक को स्वयं तारा देवी के दर्शन प्राप्त हो जाते हैं ॥२३४॥

लक्ष आवृत्ति पाठ करने से तारापति के समान हो जाता है। ऐसे पुरुष के लिए कोई भी वस्तु दुर्लभ नहीं होती। वह इसी जीवन में मुक्त हो जाता है ॥२३५॥

पुनः कल्पान्त हो जाने पर वह साधक तारा-सायुज्य प्राप्त कर लेता है। इस पृथ्वी में युवती तारा के समान कोई भी महाविद्या नहीं है ॥२३६॥

न चैतत्सदृशं स्तोत्रं भवेद् ब्रह्माण्डमण्डले ।
वक्त्रकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि ॥२३७॥
न शक्यते फलं वक्तुं मया कल्पशतैरपि ।
चुम्बके निन्दके दुष्ट पिशुने जीवहिंसके ॥२३८॥
सगोप्यं स्तोत्रमेतत्तद्दर्शनेनैव कुत्रचित् ।
राज्यं देयं धनं देयं शिरो देयमथापि वा ॥२३९॥
न देयं स्तोत्रवर्यं तु मन्त्रादपि महोद्यतम् ।
अनुलोम-विलोमाभ्यां मूलं सम्पुटितं त्रिदश ॥२४०॥
लिखित्वा भूर्जपत्रादौ गन्धाष्टकपुरःसरैः ।
धारयेद् दक्षिणे बाहौ कण्ठे वामभुजे तथा ॥२४१॥
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्याद् वह्निना नैव दह्यते ।
तद्गात्रं शस्त्रसङ्घैश्च भिद्यते न कदाचन ॥२४२॥

तारासहस्रनाम स्तोत्र की तुलना में समस्त ब्रह्माण्ड मण्डल में कोई भी स्तोत्र नहीं है। करोड़ों मुख हों और प्रत्येक मुख में करोड़ों जीभ हों और करोड़ों कल्प का काल हो तो भी मैं तारा-सहस्र नाम स्तोत्र का फल कहने में असमर्थ हूँ। चापलूस, निन्दक, दुष्ट पिशुन तथा हिंसा करने वालों को देखने मात्र से इस स्तोत्र का पाठ बन्द कर देना चाहिए। राज्य भले ही दे देवे, धन भले ही दे देवे किं बहुना शिर भी देना पड़े तो दे देवे किन्तु तारा मन्त्र से भी महान् अभ्युदय प्रदान करने वाले इस स्तोत्र को कभी न देवे ॥२३७-२३९॥

अष्टगन्ध द्वारा भोज-पत्र पर मूल मन्त्र के अनुलोम तथा विलोम रूप से लिख कर दाहिने हाथ, कण्ठ एवं बायें हाथ में धारण करना

स भूमिवलये पुत्र ! विचरेद् भैरवोपमः ।
वन्ध्याऽपि लभते पुत्रं निर्द्धनो धनमाप्नुयात् ।
निर्विघ्नो लभते विद्यां तर्कव्याकरणादिकाम् ॥२४३॥

इति निगदितमस्यास्तादिनाम्नां सहस्रं
वरदमनुनिदानं दिव्यसाम्राज्यसंज्ञम् ।
विधि हरि-गिरिशादौ शक्तिदानैकदक्षं
सुविधिपठनीयं कालितारासमज्ञैः ॥२४४॥

इति तारा-रहस्ये श्रीब्रह्मयामलस्थ-तारायास्तकारादि-
सहस्रनामस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

चाहिए । ऐसा करने से सब प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती है । तारा मन्त्र का साधक कभी अग्नि से नहीं जलता । इतना ही नहीं, साधक का शरीर शस्त्र-समूहों से कभी छिन्न-भिन्न नहीं होता ॥२४०-२४२॥

वह सारी पृथ्वी पर भैरव के समान निर्भय विचरण करने लगता है । इस स्तोत्र का पाठ करने से बन्ध्या को भी पुत्र-रत्न की प्राप्ति हो जाती है । निर्धन भी धन प्राप्त करता है, उसे न्याय तथा व्याकरणादि विद्या निर्विघ्न रूप से प्राप्त हो जाती है ॥२४३॥

ब्रह्मा जी ने कहा—इस प्रकार हे वशिष्ठ ! तारा के तकारादिवर्ण युक्त तारासहस्रनाम का उपदेश मैंने तुम्हें किया । यह वर देने वाला, साम्राज्य देने वाला, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के समान शक्ति प्रदान करने वाला है । बुद्धिमान् पुरुष को काली तारा के इस स्तोत्र का निरन्तर पाठ करना चाहिए ॥२४४॥

इस प्रकार आचार्य पण्डित शिवदत्त मिश्र शास्त्री कृत 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्या सहित तारा-रहस्य में तारा-सहस्रनामस्तोत्र समाप्त ।

तारा-सहस्रनामावली

विनियोगः—'ॐ अस्य श्रीतारासहस्रनामस्तोत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, श्रीतारादेवता, अनुष्टुप्-छन्दः, श्रीतारादेवताप्रीति-द्वारा समस्तसिद्धि-पुरुषार्थचतुष्टयप्राप्त्यर्थं कर्पूरा-ऽगरु-कस्तूरीचन्दनयुतैर्जलैः प्रतिनाम्नां नमोऽन्तपदेन एवं सङ्कलनया श्रीतारा-तकाराद्यष्टोत्तरसहस्रनामभिः तारापूजने विनियोगः।

१. ॐ तारायै नमः
२. ॐ तारादिपञ्चार्णायै नमः
३. ॐ तारान्यावेदवीर्यजायै नमः
४. ॐ तारायै नमः
५. ॐ तारहितावर्णायै नमः
६. ॐ तारायै नमः
७. ॐ तारारूपिण्यै नमः
८. ॐ तारारात्रिसमुत्पन्नायै नमः
९. ॐ तारारात्रिवरोद्यतायै नमः
१०. ॐ तारारात्रिजपासक्तायै नमः
११. ॐ तारारात्रिस्वरूपिण्यै नमः
१२. ॐ तारराज्ञीस्वसन्तुष्टायै नमः
१३. ॐ तारराज्ञीवरप्रदायै नमः
१४. ॐ तारराज्ञीस्वरूपायै नमः
१५. ॐ तारराज्ञीप्रसिद्धिदायै नमः
१६. ॐ ताराहृत्पङ्कजागारायै नमः
१७. ॐ ताराहृत्पङ्कजापरायै नमः
१८. ॐ ताराहृत्पङ्कजाधारायै नमः
१९. ॐ ताराहृत्पङ्कजायै नमः
२०. ॐ तारेश्वर्यै नमः
२१. ॐ तारायै नमः

विशेष—इस स्तोत्र में जहाँ स्त्रीलिङ्ग शब्द आये हैं, वहाँ देवी को स्त्री और जहाँ पुंल्लिङ्ग शब्द आये हैं, वहाँ देवी को पुंल्लिङ्ग, जहाँ नपुंसक शब्द आये हों, वहाँ देवी को ब्रह्मरूप का विशेषण जानना चाहिए। इसी प्रकार जहाँ एक ही प्रकार के अनेक शब्द आये हों, वहाँ अर्थभेद से तथा जहाँ एक ही अर्थ के अनेक शब्द आये हों, वहाँ शब्दभेद से सहस्रनाम की संख्या समझनी चाहिए।

२२. ॐ तारागणस्वरूपिण्यै नमः
२३. ॐ तारागणसमाकीर्णायै नमः
२४. ॐ तारागणनिषेवितायै नमः
२५. ॐ तारायै नमः
२६. ॐ तारान्वितायै नमः
२७. ॐ तारारत्नान्वितविभूषणायै नमः
२८. ॐ तारागणरणासक्तायै नमः
२९. ॐ ताराकृत्यप्रपूजितायै नमः
३०. ॐ तारागणकृताहारायै नमः
३१. ॐ तारागणकृताश्रयायै नमः
३२. ॐ तारागणकृतागारायै नमः
३३. ॐ तारागणनतत्परायै नमः
३४. ॐ तारागुणगणाकीर्णायै नमः
३५. ॐ तारागुणगणप्रदायै नमः
३६. ॐ तारागुणगणासक्तायै नमः
३७. ॐ तारागुणगणालयायै नमः
३८. ॐ तारेश्वर्यै नमः
३९. ॐ तारपूज्यायै नमः
४०. ॐ ताराजप्यायै नमः
४१. ॐ तारणायै नमः
४२. ॐ तारमुख्यायै नमः
४३. ॐ ताराख्यायै नमः
४४. ॐ तारदक्षायै नमः
४५. ॐ तारिण्यै नमः
४६. ॐ तारागम्यायै नमः
४७. ॐ तारस्थायै नमः
४८. ॐ तारामृततरङ्गिण्यै नमः
४९. ॐ तारभव्यायै नमः
५०. ॐ तारार्णयै नमः
५१. ॐ तारहव्यायै नमः
५२. ॐ तारिण्यै नमः
५३. ॐ तारकायै नमः
५४. ॐ तारकान्तःस्थायै नमः
५५. ॐ तारकाराशिभूषणायै नमः
५६. ॐ तारकाहारशोभाढ्यायै नमः
५७. ॐ तारकावेष्टिताङ्गणायै नमः
५८. ॐ तारकाहंसकाकीर्णायै नमः
५९. ॐ तारकाकृतभूषणायै नमः
६०. ॐ तारकाङ्गदशोभाङ्ग्यै नमः
६१. ॐ तारकाश्रितकङ्कणायै नमः
६२. ॐ तारकाञ्चितकाञ्च्यै नमः
६३. ॐ तारकान्वितभक्षणायै नमः
६४. ॐ तारकाचित्रवसनायै नमः
६५. ॐ तारकासनमण्डलायै नमः
६६. ॐ तारकाकीर्णमुकुटायै नमः
६७. ॐ तारकाश्रितकुण्डलायै नमः
६८. ॐ तारकान्वितताटङ्कयुग्मगण्डस्थलोज्ज्वलायै नमः
६९. ॐ तारकाश्रितपादाब्जायै नमः
७०. ॐ तारकावरदायिकायै नमः
७१. ॐ तारकादत्तहृदयायै नमः
७२. ॐ तारकाञ्चितसायकायै नमः
७३. ॐ तारकान्यासकुशलायै नमः
७४. ॐ तारकान्यासविग्रहायै नमः

७५. ॐ तारकान्याससन्तुष्टायै नमः
७६. ॐ तारकान्यासस्थिद्धिदायै नमः
७७. ॐ तारकान्यासनिलयायै नमः
७८. ॐ तारकान्यासपूजितायै नमः
७९. ॐ तारकान्याससंहृष्टायै नमः
८०. ॐ तारकान्यासस्थिद्धिदायै नमः
८१. ॐ तारकान्यासमग्नायै नमः
८२. ॐ तारकान्यासवासिन्यै नमः
८३. ॐ तारकान्याससंपूर्णमन्त्र-
सिद्धिविधायिन्यै नमः
८४ ॐ तारकोपासकप्राणायै नमः
८५ ॐ तारकोपासकप्रियायै नमः
८६. ॐ तारकोपासकसाध्यायै नमः
८७. ॐ तारकोपासकेष्टदायै नमः
८८. ॐ तारकोपासकासक्तायै नमः
८९. ॐ तारकोपासकार्थिन्यै नमः
९०. ॐ तारकोपासकाराध्यायै नमः
९१. ॐ तारकोपासकाश्रयायै नमः
९२. ॐ तारकासुरस तुष्टायै नमः
९३. ॐ तारकासुरपूजितायै नमः
९४. ॐ तारकासुरनिर्माणकर्त्र्यै नमः
९५. ॐ तारक रनितायै नमः
९६. ॐ तारकासुरसम्मान्यायै नमः
९७. ॐ तारकासुरमानदायै नमः
९८. ॐ तारकासुरससिद्ध यै नमः
९९. ॐ तारकासुरदेवतायै नमः
१००. ॐ तारकासुरदेहस्थायै नमः
१०१. ॐ तारकासुरस्वर्गदायै नमः
१०२. ॐ तारकासुरसंसृष्टायै नमः
१०३. ॐ तारकासुरगर्वदायै नमः
१०४. ॐ तारकासुरसंहन्त्र्यै नमः
१०५. ॐ तारकासुरमर्दिन्यै नमः
१०६. ॐ तारकासुरसंग्रामनर्त्तक्यै
नमः
१०७. ॐ तारकापहायै नमः
१०८. ॐ तारकासुरसंग्रामकारिण्यै
नमः
१०९. ॐ तारकारिभृते नमः
११०. ॐ तारकासुरसंग्रामकबन्ध-
वृन्दवन्दितायै नमः
१११. ॐ तारकारिप्रसूतायै नमः
११२. ॐ तारकारिमात्रे नमः
११३. ॐ तारकारिकारिकायै नमः
११४. ॐ तारीकारिमनोहारि-
वस्त्रभूषानुशासिकायै नमः
११५ ॐ तारकारिविधात्र्यै नमः
११६. ॐ तारकारिनिषेवितायै नमः
११७. ॐ तारकारिवचस्तुष्टायै नमः
११८. ॐ तारकारिसु शेक्षिताये नमः
११९. ॐ तारकारिसुसन्तुष्टायै नमः
१२०. ॐ तारकारिविभूषितायै नम
१२१. ॐ तारकारिकृतोत्सङ्गायै नमः
१२२. ॐ तारकारिप्रहर्षदायै नमः
१२३. ॐ तमःसम्पूर्णसर्वाङ्गायै नमः
१२४. ॐ तमोलिप्तकलेवरायै नमः
१२५. ॐ तमोव्याप्तस्थलायै नमः

१२६. ॐ तमोव्याप्तसङ्गायै नमः
१२७. ॐ तमःपटलसन्निभायै नमः
१२८. ॐ तमोहन्त्र्यै नमः
१२९. ॐ तमःकर्त्र्यै नमः
१३०. ॐ तमःसञ्चारकारिण्यै नमः
१३१. ॐ तमोगात्र्यै नमः
१३२. ॐ तमोदात्र्यै नमः
१३३. ॐ तमःपात्र्यै नमः
१३४. ॐ तमोपहायै नमः
१३५. ॐ तमोराशिपूर्णराश्यै नमः
१३६. ॐ तमोराशिविनाशिन्यै नमः
१३७. ॐ तमोराशिकृतध्वंस्यै नमः
१३८. ॐ तमोराशिभयङ्कर्यै नमः
१३९. ॐ तमोगुणप्रसन्नास्यायै नमः
१४०. ॐ तमोगुणसुसिद्धिदायै नमः
१४१. ॐ तमोगुणोक्तमार्गस्थायै नमः
१४२. ॐ तमोगुणविराजितायै नमः
१४३. ॐ तमोगुणस्तुतिपरायै नमः
१४४. ॐ तमोगुणविवर्धिन्यै नमः
१४५. ॐ तमोगुणाश्रितपरायै नमः
१४६. ॐ तमोगुणविनाशिन्यै नमः
१४७. ॐ तमोगुणायै नमः
१४८. ॐ तमोक्षयकर्त्र्यै नमः
१४९. ॐ तमोगुणकलेवरायै नमः
१५०. ॐ तमोगुणध्वंसतुष्टायै नमः
१५१. ॐ तमःपारेप्रतिष्ठितायै नमः
१५२. ॐ तमोभवायै नमः
१५३. ॐ तमोभवभवप्रीतायै नमः
१५४. ॐ तमोभवभवप्रियायै नमः
१५५. ॐ तमोभवभवाश्रद्धायै नमः
१५६. ॐ तमोभवभवाश्रयायै नमः
१५७. ॐ तमोभवभवप्राणायै नमः
१५८. ॐ तमोभवभवार्चितायै नमः
१५९. ॐ तमोभवभवप्रीत्यालीढ-
कुम्भस्थलस्थितायै नमः
१६०. ॐ तपस्विवृन्दसन्तुष्टायै नमः
१६१. ॐ तपस्विवृन्दपुष्टिदायै नमः
१६२. ॐ तपस्विवृन्दसंस्तुतायै नमः
१६३. ॐ तपस्विवृन्दवन्दितायै नमः
१६४. ॐ तपस्विवृन्दसम्पन्नायै नमः
१६५. ॐ तपस्विवृन्दहर्षदायै नमः
१६६. ॐ तपस्विवृन्दसम्पूज्यायै नमः
१६७. ॐ तपस्विवृन्दभूषितायै नमः
१६८. ॐ तपस्विचित्ततत्पस्थायैनमः
१६९. ॐ तपस्विचित्तमध्यगायै नमः
१७०. ॐ तपस्विचित्तचित्तार्हायै नमः
१७१. ॐ तपस्विचित्तहारिण्यै नमः
१७२. ॐ तपस्विकल्पवल्लाभायै
नमः
१७३. ॐ तपस्विकल्पपादप्यै नमः
१७४. ॐ तपस्विकामधेनवे नमः
१७५. ॐ तपस्विकामपूर्तिदायै नमः
१७६. ॐ तपस्वित्राणनिरतायै नमः
१७७. ॐ तपस्विगृहसंस्थितायै नमः

१७८. ॐ तपस्विगृहराजश्रिये नमः
१७९ ॐ तपस्विराज्यदायिकायै नमः
१८०. ॐ तपस्विमानसाराध्यायै नमः
१८१. ॐ तपस्विमानदायिकायै नमः
१८२. ॐ तपस्वितापसंहर्त्र्यै नमः
१८३. ॐ तपस्वितापशान्तिकृते नमः
१८४. ॐ तपस्विसिद्धचै नमः
१८५. ॐ तपस्विविद्यायै नमः
१८६. ॐ तपस्विमन्त्रसिद्धिकृते नमः
१८७. ॐ तपस्विमन्त्रेश्वै नमः
१८८. ॐ तपस्वितन्त्रैश्यै नमः
१८९. ॐ तपस्विमन्त्ररूपिण्यै नमः
१९०. ॐ तपस्विमन्त्रनिपुणायै नमः
१९१. ॐ तपस्विकर्मकारिण्यै नमः
१९२. ॐ तपस्विकर्मसम्भूतायै नमः
१९३. ॐ तपस्विकर्मसाक्षिण्यै नमः
१९४. ॐ तपःसेव्यायै नमः
१९५. ॐ तपोभव्यायै नमः
१९६. ॐ तपोभाव्यायै नमः
१९७. ॐ तपस्विन्यै नमः
१९८. ॐ तपोवश्यायै नमः
१९९. ॐ तपोगम्यायै नमः
२००. ॐ तपोगेहनिवासिन्यै नमः
२०१. ॐ तपोधन्यायै नमः
२०२. ॐ तपोमान्यायै नमः
२०३. ॐ तपःकन्यायै नमः
२०४. ॐ तपोवृतायै नमः
२०५. ॐ तपस्तथ्यायै नमः
२०६. ॐ तपोगोप्यायै नमः
२०७. ॐ तपोजप्यायै नमः
२०८. ॐ तपोऽनृतायै नमः
२०९ ॐ तपःसाध्यायै नमः
२१०. ॐ तपोराध्यायै नमः
२११. ॐ तपोवन्द्यायै नमः
२१२. ॐ तपोमय्यै नमः
२१३. ॐ तपःसन्ध्यायै नमः
२१४. ॐ तपोवन्ध्यायै नमः
२१५. ॐ तपःसान्निध्यकारिण्यै नमः
२१६. ॐ तपोध्येयायै नमः
२१७. ॐ तपोगेयायै नमः
२१८. ॐ तपस्तप्तायै नमः
२१९. ॐ तपोबलायै नमः
२२०. ॐ तपोलेयायै नमः
२२१. ॐ तपोदेयायै नमः
२२२. ॐ तपस्तत्त्वफलप्रदायै नमः
२२३. ॐ तपोविघ्नवरघ्न्यै नमः
२२४. ॐ तपोविघ्नविनाशिन्यै नमः
२२५. ॐ तपोविघ्ननयध्वस्यै नमः
२२६. ॐ तपोविघ्नभयङ्कर्यै नमः
२२७. ॐ तपोभूमिवरप्राणायै नमः
२२८. ॐ तपोभूमिपतिस्तुतायै नमः
२२९. ॐ तपोभूमिपतिध्येयायै नमः
२३०. ॐ तपोभूमिपतीष्टदायै नमः

२३१. ॐ तपोवनकुरङ्गस्थायै नमः
२३२. ॐ तपोवनविनाशिन्यै नमः
२३३. ॐ तपोवनगतिप्रीतायै नमः
२३४. ॐ तपोवनविहारिण्यै नमः
२३५. ॐ तपोवनफलासक्तायै नमः
२३६. ॐ तपोवनफप्रदायै नमः
२३७. ॐ तपोवनसुसाध्यायै नमः
२३८. ॐ तपोवनसुसिद्धिदायै नमः
२३९. ॐ तपोवनसुसेव्यायै नमः
२४०. ॐ तपोवननिवासिन्यै नमः
२४१. ॐ तपोधनसुसंसेव्यायै नमः
२४२. ॐ तपोधनसुसाधितायै नमः
२४३. ॐ तपोधनसुसल्लीनायै नमः
३४४. ॐ तपोधनमनोमय्यै नमः
२४५. ॐ तपोधननमस्कारायै नमः
२४६. ॐ तपोधनविमुक्तिदायै नमः
२४७. ॐ तपोधनधनासाध्यायै नमः
२४८. ॐ तपोधनधनात्मिकायै नमः
२४९. ॐ तपोधनधनाराध्यायै नमः
२५०. ॐ तपोधनफलप्रदायै नमः
२५१. ॐ तपोधनधनाढ्यायै नमः
२५२. ॐ तपोधनधनेश्वर्यै नमः
२५३. ॐ तपोधनधनप्रीतायै नमः
२५४. ॐ तपोधनधनालयायै नमः
२५५. ॐ तपोधनजनाकीर्णायै नमः
२५६. ॐ तपोधनजनाश्रयायै नमः
२५७. ॐ तपोधनजनाराध्यायै नमः
२५८. ॐ तपोधनजनप्रसुवे नमः
२५९. ॐ तपोधनजनप्राणायै नमः
२६०. ॐ तपोधनजनेष्टदायै नमः
२६१. ॐ तपोधनजनासाध्यायै नमः
२६२. ॐ तपोधनजनेश्वर्यै नमः
२६३. ॐ तरुणासृक्प्रपानार्त्तायै नमः
२६४. ॐ तरुणासृक्प्रतर्पितायै नमः
२६५. ॐ तरुणासृक्समुद्रस्थायै नमः
२६६. ॐ तरुणासृक्प्रहर्षदायै नमः
२६७. ॐ तरुणासृक्सुसन्तुष्टायै नमः
२६८. ॐ तरुणासृग्विलेपितायै नमः
२६९. ॐ तरुणासृङ्नदीप्राणायै नमः
२७०. ॐ तरुणासृक्प्राणायै नमः
२७१. ॐ तरुणासृग्विभूषणायै नमः
२७२. ॐ तरुणैणबलिप्रीतायै नमः
२७३. ॐ तरुणैणबलिप्रियायै नमः
२७४. ॐ तरुणैणबलिप्राणायै नमः
२७५. ॐ तरुणैणबलीष्टदायै नमः
२७६. ॐ तरुणाजबलिप्रीतायै नमः
२७७. ॐ तरुणाजबलिप्रियायै नमः
२७८. ॐ तरुणाजबलिघ्राणायै नमः
२७९. ॐ तरुणाजबलिप्रभुगे नमः
२८०. ॐ तरुणादित्यसङ्काशायै नमः
२८१. ॐ तरुणादित्यविग्रहायै नमः
२८२. ॐ तरुणादित्यरुचिरायै नमः
२८३. ॐ तरुणादित्यनिर्मलायै नमः
२८४. ॐ तरुणादित्यनिलयायै नमः
२८५. ॐ तरुणादित्यमण्डलायै नमः
२८६. ॐ तरुणादित्यललितायै नमः

२८७ ॐ तरुणादित्यकुण्डलायै नमः
२८८. ॐ तरुणार्कसमज्योत्स्नायै नमः
२८९. ॐ तरुणार्कसमप्रभायै नमः
२९०. ॐ तरुणाकप्रतीकारायै नमः
२९१. ॐ तरुणाकप्रवर्द्धितायै नमः
२९२. ॐ तरुणातरुणाकनेत्रायै नमः
२९३ ॐ तरुणातरुणलोचनायै नमः
२९४. ॐ तरुणातरुणनेत्रायै नमः
२९५. ॐ तरुणातरुणभूषणायै नमः
२९६. ॐ तरुणीदत्तसङ्केतायै नमः
२९७. ॐ तरुणीदत्तभूषणायै नमः
२९८. ॐ तरुणीगणसन्तुष्टायै नमः
२९९. ॐ तरुण्यै नमः
३००. ॐ तरुणीमणये नमः
३०१. ॐ तरुणीमणिसंसेव्यायै नमः
३०२. ॐ तरुणीमणिवन्दितायै नमः
३०३. ॐ तरुणीमणिसन्तुष्टायै नमः
३०४. ॐ तरुणीमणिपूजितायै नमः
३०५. ॐ तरुणीवृन्दसंवाद्यायै नमः
३०६. ॐ तरुणीवृन्दवन्दितायै नमः
३०७. ॐ तरुणीवृन्दसंस्तुत्यायै नमः
३०८. ॐ तरुणीवृन्दमानदायै नमः
३०९. ॐ तरुणीवृन्दमध्यस्थायै नमः
३१०. ॐ तरुणीवृन्दवेष्टितायै नमः
३११. ॐ तरुणीवृन्दसंप्रीतायै नमः
३१२. ॐ तरुणीवृन्दभूषितायै नमः
३१३. ॐ तरुणीजपसंसिद्धायै नमः
३१४. ॐ तरुणीजपमोक्षदायै नमः
३१५. ॐ तरुणीपूजकासक्तायै नमः
३१६. ॐ तरुणीपूजकार्थिन्यै नमः
३१७. ॐ तरुणीपूजकप्रीतायै नमः
३१८. ॐ तरुणीपूजकार्त्तिहायै नमः
३१९. ॐ तरुणीपूजकत्राणायै नमः
३२०. ॐ तरुणीनिन्दकार्त्तिदायै नम
३२१. ॐ तरुणीकोटिनिलयायै नमः
३२२. ॐ तरुणीकोटिविग्रहायै नमः
३२३. ॐ तरुणीकोटिमध्यस्थायै नमः
३२४. ॐ तरुणीकोटिवेष्टितायै नमः
३२५. ॐ तरुणीकोटिदुस्साध्यायै नमः
३२६. ॐ तरुणीकोटिविग्रहायै नमः
३२७. ॐ तरुणीकोटिरुचिरायै नमः
३२८. ॐ तरुणीतरुणीश्वर्यै नमः
३२९. ॐ तरुणीमणिहाराढ्यायै नमः
३३०. ॐ तरुणीमणिकुण्डलायै नमः
३३१. ॐ तरुणीमणिसन्तुष्टायै नमः
३३२. ॐ तरुणीमणिमण्डितायै नमः
३३३. ॐ तरुणीसरणीप्रीतायै नमः
३३४. ॐ तरुणीसरणीरतायै नमः
३३५. ॐ तरुणीसरणीस्थानायै नमः
३३६. ॐ तरुणीसरणीरतायै नमः
३३७. ॐ तरुणीमण्डलश्रीदायै नमः
३३८. ॐ तरुणीमण्डलेश्वर्यै नमः
३३९. ॐ तरुणीमण्डलश्रद्धायै नमः
३४०. ॐ तरुणीमण्डलस्थितायै नमः

३४१. ॐ तरणीमण्डलार्घा-
ढ्यायै नमः
३४२. ॐ तरणीमण्डलार्चितायै नमः
३४३. ॐ तरणीमण्डलध्येयायै नमः
३४४. ॐ तरणीभवसागरायै नमः
३४५. ॐ तरणीकारणासक्तायै नमः
३४६. ॐ तरणीतक्षकार्चितायै नमः
३४७. ॐ तरणीतक्षकश्रीदायै नमः
३४८. ॐ तरणीतक्षकार्थिन्यै नमः
३४९. ॐ तरणीतरणशीलायै नमः
३५०. ॐ तरीतरणतारिण्यै नमः
३५१. ॐ तरीतरणसंवेद्यायै नमः
३५२. ॐ तरीतरणकारिण्यै नमः
३५३. ॐ तरुरूपायै नमः
३५४. ॐ तरुस्थायै नमः
३५५. ॐ तरवे नमः
३५६. ॐ तरुलतामय्यै नमः
३५७. ॐ तरुरूपायै नमः
३५८. ॐ तरुस्थायै नमः
३५९. ॐ तरुपल्लवनिवासिन्यै नमः
३६०. ॐ तप्तकाञ्चनगेहस्थायै नमः
३६१. ॐ तप्तकाञ्चनभूमिकायै नमः
३६२. ॐ तप्तकाञ्चनप्राकारायै नमः
३६३. ॐ तप्तकाञ्चनपादुकायै नमः
३६४. ॐ तप्तकाञ्चनदीप्ताङ्ग्यै नमः
३६५. ॐ तप्तकाञ्चनसन्निभायै नमः
३६६. ॐ तप्तकाञ्चनगौराङ्ग्यै नमः
३६७. ॐ तप्तकाञ्चनवर्चगायै नमः
३६८. ॐ तप्तकाञ्चनवस्त्राढ्यायै नमः
३६९. ॐ तप्तकाञ्चनरूपिण्यै नमः
३७०. ॐ तप्तकाञ्चनमध्यस्थायै नमः
३७१. ॐ तप्तकाञ्चनकारिण्यै नमः
३७२. ॐ तप्तकाञ्चनमाल्याढ्यायै नमः
३७३. ॐ तप्तकाञ्चनपात्रभुजे नमः
३७४. ॐ तप्तकाञ्चनशैलस्थायै नमः
३७५. ॐ तप्तकाञ्चनकुण्डलायै नमः
३७६. ॐ तप्तकाञ्चनक्षेत्राढ्यायै नमः
३७७. ॐ तप्तकाञ्चनदण्डधृगे नमः
३७८. ॐ तप्तकाञ्चनभूषाढ्यायै नमः
३७९. ॐ तप्तकाञ्चनदानदायै नमः
३८०. ॐ तप्तकाञ्चनदेवतायै नमः
३८१. ॐ तप्तकाञ्चनेश्यै नमः
३८२. ॐ तप्तकाञ्चनचापधृगे नमः
३८३. ॐ तप्तकाञ्चनतूणा-
ढ्यायै नमः
३८४. ॐ तप्तकाञ्चनबाणभृते नमः
३८५. ॐ तलातलविधात्र्यै नमः
३८६. ॐ तलातलविधायिन्यै नमः
३८७. ॐ तलातलस्वरूपायै नमः
३८८. ॐ तलातलेश्यै नमः
३८९. ॐ तलातलविहारिण्यै नमः
३९०. ॐ तलातलजनासाढ्यायै नमः
३९१. ॐ तलातलजनेश्वर्यै नमः
३९२. ॐ तलातलजनाराध्यायै नमः
३९३. ॐ तलातलजनार्थदायै नमः
३९४. ॐ तलातलजयाभाक्ष्यै नमः

३९५. ॐ तलातलाभायै नमः
३९६. ॐ तलातलाक्ष्यै नमः
३९७. ॐ तलातलजचञ्चवायै नमः
३९८. ॐ तलातलजरत्नाढ्यायै नमः
३९९. ॐ तलातलजदेवतायै नमः
४००. ॐ तटिनीस्थानरसिकायै नमः
४०१. ॐ तटिन्यै नमः
४०२. ॐ तटवासिन्यै नमः
४०३. ॐ तटिन्यै नमः
४०४. ॐ तटिनीतीरगामिन्यै नमः
४०५. ॐ तटिनीप्रियायै नमः
४०६. ॐ तटिनीप्लवनप्रीतायै नमः
४०७. ॐ तटिनीप्लवनोद्यतायै नमः
४०८. ॐ तटिनीप्लवनश्लाघ्यायै नमः
४०९. ॐ तटिनीप्लवनार्थदायै नमः
४१०. ॐ तटलायै नमः
४११. ॐ तटस्थायै नमः
४१२. ॐ तटस्थानायै नमः
४१३. ॐ तटेश्यै नमः
४१४. ॐ तटवासिन्यै नमः
४१५. ॐ तटपूज्यायै नमः
४१६. ॐ तटाराध्यायै नमः
४१७. ॐ तटरोममुखार्थिन्यै नमः
४१८. ॐ तटजायै नमः
४१९. ॐ तटरूपायै नमः
४२०. ॐ तटस्थायै नमः
४२१. ॐ तटचञ्चलायै नमः
४२२. ॐ तटसन्निधिगेहस्थायै नमः
४२३. ॐ तटसन्निधिसहितायै नमः
४२४. ॐ तटरायिन्यै नमः
४२५. ॐ तरङ्गिण्यै नमः
४२६. ॐ तरङ्गाभायै नमः
४२७. ॐ तरङ्गायतलोचनायै नमः
४२८. ॐ तरङ्गसमदुर्द्धर्षायै नमः
४२९. ॐ तरङ्गसमचञ्चलायै नमः
४३०. ॐ तरङ्गसमदीर्घाङ्ग्यै नमः
४३१. ॐ तरङ्गसमवर्द्धिनायै नमः
४३२. ॐ तरङ्गसमसंवृद्ध्यै नमः
४३३. ॐ तरङ्गसमनिर्मलायै नमः
४३४. ॐ तडागमध्यनिलयायै नमः
४३५. ॐ तडागमध्यसंभवायै नमः
४३६. ॐ तडागरचनश्लाघ्यायै नमः
४३७. ॐ तडागरचनोद्यतायै नमः
४३८. ॐ तडागकुमुदामोद्यै नमः
४३९. ॐ तडागेश्यै नमः
४४०. ॐ तडागिन्यै नमः
४४१. ॐ तडागनीरसंस्नातायै नमः
४४२. ॐ तडागनीरनिर्मलायै नमः
४४३. ॐ तडागकमलागारायै नमः
४४४. ॐ तडागकमलालयायै नमः
४४५. ॐ तडागकमलान्तस्थायै नमः
४४६. ॐ तडागकमलोद्यतायै नमः
४४७. ॐ तडागकमलाङ्ग्यै नमः
४४८. ॐ तडागकमलाननायै नमः
४४९. ॐ तडागकमलप्राणायै नमः

४५०. ॐ तडागकमलेक्षणायै नमः
४५१. ॐ तडागरक्तपद्मस्थायै नमः
४५२. ॐ तडागश्वेतपद्मगायै नमः
४५३. ॐ तडागनीलपद्मभायै नमः
४५४ ॐ तडागनीलपद्मभृते नमः
४५५ ॐ तनवे नमः
४५६. ॐ तनुगतायै नमः
४५७. ॐ तन्व्यै नमः
४५८. ॐ तन्वङ्ग्यै नमः
४५९. ॐ तनुधारिण्यै नमः
४६०. ॐ तनुरूपायै नमः
४६१. ॐ तनुगतायै नमः
४६२. ॐ तनुधृगे नमः
४६३. ॐ तनुरूपिण्यै नमः
४६४. ॐ तनुस्थायै नमः
४६५. ॐ तनुमध्याङ्ग्यै नमः
४६६. ॐ तनुकृते नमः
४६७. ॐ तनुमङ्गलायै नमः
४६८ ॐ तनुसेव्यायै नमः
४६९. ॐ तनुजायै नमः
४७०. ॐ तनुजायै नमः
४७१. ॐ तनुसम्भवायै नमः
४७२. ॐ तनुभृते नमः
४७३. ॐ तनुसंभूतायै नमः
४७४. ॐ तनुदायै नमः
४७५. ॐ तनुकारिण्यै नमः
४७६. ॐ तनुभृते नमः
४७७. ॐ तनुसंहन्त्र्यै नमः
४७८. ॐ तनुसञ्चारकारिण्यै नमः
४७९ ॐ तथ्यवाचे नमः
४८०. ॐ तथ्यवचनायै नमः
४८१. ॐ तथ्यकृते नमः
४८२. ॐ तथ्यवादिन्यै नमः
४८३. ॐ तथ्यभृते नमः
४८४. ॐ तथ्यचरितायै नमः
४८५. ॐ तथ्यधर्मानुवर्तिन्यै नमः
४८६. ॐ तथ्यभुजे नमः
४८७. ॐ तथ्यगमनायै नमः
४८८. ॐ तथ्यभक्तिवरप्रदायै नमः
४८९. ॐ तथ्यन्यै नमः
४९०. ॐ तथ्येश्वर्यै नमः
४९१. ॐ तथ्यचित्तायै नमः
४९२. ॐ तथ्यचारायै नमः
४९३. ॐ तथ्याशुसिद्धिदायै नमः
४९४. ॐ तर्क्यायै नमः
४९५. ॐ तर्क्यस्वभावायै नमः
४९६. ॐ तर्कदायायै नमः
४९७. ॐ तर्ककृते नमः
४९८. ॐ तर्काध्यापनमध्यस्थायै नमः
४९९. ॐ तर्काध्यापनकारिण्यै नमः
५००. ॐतर्काध्यापनसन्तुष्टायै नमः
५०१. ॐ तर्काध्यापनरूपिण्यै नमः
५०२. ॐ तर्काध्यानसंशीलायै नमः
५०३. ॐ तर्कार्थप्रतिपादितायै नमः
५०४. ॐ तर्काध्यापनसंतृप्तायै नमः

५०५ ॐ तर्कार्थप्रतिपादिकायै नमः
५०६. ॐ तर्कवादाश्रितायै नमः
५०७. ॐ तर्कपदायै नमः
५०८. ॐ तर्कवादविवर्द्धिन्यै नमः
५०९. ॐ तर्कवादैकनिपुणायै नमः
५१०. ॐ तर्कवादप्रचारिण्यै नमः
५११. ॐ तमालदलश्यामाङ्ग्यै नमः
५१२. ॐ तमालदलमालिन्यै नमः
५१३. ॐ तमालवनसङ्केतायै नमः
५१४ ॐ तमालपुष्पपूजितायै नमः
५१५. ॐ तगर्यै नमः
५१६. ॐ तगराराध्यायै नमः
५१७. ॐ तगरार्चितपादुकायै नमः
५१८. ॐ तगरस्रक्सुसन्तुष्टायै नमः
५१९. ॐ तगरस्रग्विराजितायै नमः
५२०. ॐ तगराहुतिसन्तुष्टायै नमः
५२१. ॐ तगराहुतिकीर्त्तिदायै नमः
५२२. ॐ तगराहुतिसंसिद्धायै नमः
५२३. ॐ तगराहुतिमानदायै नमः
५२४. ॐ तडिते नमः
५२५. ॐ तडिल्लताकारायै नमः
५२६. ॐ तडिच्चञ्चललोचनायै नमः
५२७. ॐ तडिल्लतायै नमः
५२८. ॐ तडित्त्वै नमः
५२९. ॐ तडिदुद्दीप्तायै नमः
५३०. ॐ तडित्प्रभायै नमः
५३१. ॐ तद्रूपायै नमः
५३२. ॐ तत्स्वरूपायै नमः
५३३. ॐ तदेश्यै नमः
५३४. ॐ तन्मय्यै नमः
५३५. ॐ तत्त्वरूपिण्यै नमः
५३६. ॐ तत्स्थानदाननिरतायै नमः
५३७. ॐ तत्कर्मफलदायिन्यै नमः
५३८. ॐ तत्त्वकृते नमः
५३९. ॐ तत्त्वदायै नमः
५४०. ॐ तत्त्वायै नमः
५४१. ॐ तत्त्वविदे नमः
५४२. ॐ तत्त्वतर्पितायै नमः
५४३. ॐ तत्त्वार्च्यायै नमः
५४४. ॐ तत्त्वपूजायै नमः
५४५. ॐ तत्त्वार्घ्यायै नमः
५४६. ॐ तत्त्वरूपिण्यै नमः
५४७. ॐ तत्त्वज्ञानप्रदानेश्यै नमः
५४८. ॐ तत्त्वज्ञानसुमोक्षदायै नमः
५४९. ॐ त्वरितायै नमः
५५०. ॐ त्वरितप्रीतायै नमः
५५१. ॐ त्वरितार्त्तिविनाशिन्यै नमः
५५२. ॐ त्वरितासवसुसन्तुष्टायै नमः

५५३. ॐ त्वरितासवर्तपितायै नमः
५५४. ॐ त्वग्वस्त्रायै नमः
५५५. ॐ त्वक्परिधानायै नमः
५५६. ॐ तरलायै नमः
५५७. ॐ तरलेक्षणायै नमः
५५८. ॐ तरक्षुचर्मवसनायै नमः
५५९. ॐ तरक्षुत्वग्विभूषणायै नमः
५६०. ॐ तरक्षवे नमः
५६१. ॐ तरक्षप्राणायै नमः
५६२. ॐ तरक्षुपृष्ठगामिन्यै नमः
५६३. ॐ तरक्षुपृष्ठसंस्थानायै नमः
५६४. ॐ तरक्षुपृष्ठवासिन्यै नमः
५६५. ॐ तर्पितोदैस्तर्पणाशायै नमः
५६६. ॐ तर्पणासक्तमानसायै नमः
५६७. ॐ तर्पणानन्दहृदयायै नमः
५६८. ॐ तर्पणाधिपतये नमः
५६९. ॐ तत्यै नमः
५७०. ॐ त्रयीमय्यै नमः
५७१. ॐ त्रयीसेव्यायै नमः
५७२. ॐ त्रयीपूज्यायै नमः
५७३. ॐ त्रयीकथायै नमः
५७४. ॐ त्रयीभव्यायै नमः
५७५. ॐ त्रयीभाव्यायै नमः
५७६. ॐ त्रयीभाव्यायै नमः
५७७. ॐ त्रयीयुतायै नमः
५७८. ॐ त्र्यक्षय्यै नमः
५७९. ॐ त्र्यक्षरेशान्यै नमः
५८०. ॐ त्र्यक्षरीशीघ्रसिद्धिदायै नमः
५८१. ॐ त्र्यक्षरेश्यै नमः
५८२. ॐ त्र्यक्षरीस्थायै नमः
५८३. ॐ त्र्यक्षरीपुरुषायै नमः
५८४. ॐ त्र्यक्षरीपदायै नमः
५८५. ॐ तपनायै नमः
५८६. ॐ तपनेष्टायै नमः
५८७. ॐ तपसे नमः
५८८. ॐ तपनकन्यकायै नमः
५८९. ॐ तपनांशुसमासह्यायै नमः
५९०. ॐ तपनकोटिकान्तिकृते नमः
५९१. ॐ तपनीयायै नमः
५९२. ॐ तल्पतल्पगतायै नमः
५९३. ॐ तल्पविधायिन्यै नमः
५९४. ॐ तल्पकृते नमः
५९५. ॐ तल्पगायै नमः
५९६. ॐ तल्पदात्र्यै नमः
५९७. ॐ तल्पतलाश्रयायै नमः
५९८. ॐ तपनीयतलायै नमः
५९९. ॐ तपनीयराज्यै नमः
६००. ॐ तपनीयाशुप्रार्थिन्यै नमः

६०१. ॐ तपनीयप्रदायै नमः
६०२. ॐ तप्तायै नमः
६०३. ॐ तपनीयाद्रिसंस्थितायै नमः
६०४. ॐ तल्पेश्यै नमः
६०५. ॐ तल्पदात्र्यै नमः
६०६. ॐ तल्पसंस्थितायै नमः
६०७. ॐ तल्पवल्लभायै नमः
६०८. ॐ तल्पप्रियायै नमः
६०९. ॐ तल्परतायै नमः
६१०. ॐ तल्पनिर्माणकारिण्यै नमः
६११. ॐ तरसापूजनासक्तायै नमः
६१२. ॐ तरसावरदायिन्यै नमः
६१३. ॐ तरसासिद्धिसन्धात्र्यै नमः
६१४. ॐ तरसामोक्षदायिन्यै नमः
६१५. ॐ तापस्यै नमः
६१६. ॐ तापसाराध्यायै नमः
६१७. ॐ तापसार्त्तिविनाशिन्यै नमः
६१८. ॐ तापसार्त्तायै नमः
६१९. ॐ तापसश्रिये नमः
६२० ॐ तापसप्रियवादिन्यै नमः
६२१ ॐ तापसानन्दहृदयायै नमः
६२२. ॐ तापसानन्ददायिन्यै नमः
६२३. ॐ तापसाश्रितपादाब्जायै नमः
६२४. ॐ तपसासक्तमानसायै नमः
६२५. ॐ तामस्यै नमः
६२६. ॐ तामसीपूज्यायै नमः
६२७. ॐ तामसीप्रणयोत्सुकायै नमः
६२८. ॐ तामस्यै नमः
६२९ ॐ तामसीसीतायै नमः
६३०. ॐ तामसीशीघ्रसिद्धिदायै नमः
६३१. ॐ तालेश्यै नमः
६३२. ॐ तालभुजे नमः
६३३. ॐ तालदात्र्यै नमः
६३४. ॐ तालोपमस्तन्यै नमः
६३५. ॐ तालवृक्षस्थितायै नमः
६३६. ॐ तालवृक्षजायै नमः
६३७. ॐ तालरूपिण्यै नमः
६३८. ॐ तार्क्षायै नमः
६३९. ॐ तार्क्षसमारूढायै नमः
६४०. ॐ तार्क्षेश्यै नमः
६४१. ॐ तार्क्षपूजितायै नमः
६४२. ॐ तार्क्षेश्वर्यै नमः
६४३. ॐ तार्क्षमात्रे नमः
६४४. ॐ तार्क्षेश्यै नमः
६४५. ॐ तार्क्षवरदायिन्यै नमः
६४६. ॐ तार्प्यै नमः
६४७. ॐ तार्पिन्यै नमः
६४८. ॐ तापसंहन्त्र्यै नमः

६४९. ॐ तापनाशिन्यै नमः
६५०. ॐ तापदात्र्यै नमः
६५१. ॐ तापकर्त्र्यै नमः
६५२. ॐ तापविध्वंसकारिण्यै नमः
६५३. ॐ त्रासकर्त्र्यै नमः
६५४. ॐ त्रासदात्र्यै नमः
६५५. ॐ त्रासकर्त्र्यै नमः
६५६. ॐ त्रासहान्यै नमः
६५७. ॐ त्रासितायै नमः
६५८. ॐ त्रासरहितायै नमः
६५९. ॐ त्रासनिर्मूलकारिण्यै नमः
६६०. ॐ त्राणकृते नमः
६६१. ॐ त्राणशीलायै नमः
६६२. ॐ तानेश्यै नमः
६६३. ॐ तानदायिन्यै नमः
६६४. ॐ तानगानरतायै नमः
६६५. ॐ तानकारिण्यै नमः
६६६. ॐ तानगायिन्यै नमः
६६७. ॐ तारुण्यामृतसम्पूर्णायै नमः
६६८. ॐ तारुण्यामृतवारिधये नमः
६६९. ॐ तारुण्यामृतसन्तुष्टायै नमः
६७०. ॐ तारुण्यामृततर्पितायै नमः
६७१. ॐ तारुण्यामृतपूर्णाङ्ग्यै नमः
६७२. ॐ तारुण्यामृतविग्रहायै नमः
६७३. ॐ तारुण्यगुणसंपन्नायै नमः
६७४. ॐ तारुण्योक्तिविशारदायै नमः
६७५. ॐ ताम्बूल्यै नमः
६७६. ॐ ताम्बूलेशान्यै नमः
६७७. ॐ ताम्बूलचर्वणोद्यतायै नमः
६७८. ॐ ताम्बूलपूरितास्यायै नमः
६७९. ॐ ताम्बूलारुणिताधरायै नमः
६८०. ॐ ताटङ्करत्नविख्यात्यै नमः
६८१. ॐ ताटङ्करत्नभूषिण्यै नमः
६८२. ॐ ताटङ्करत्नमध्यस्थायै नमः
६८३. ॐ ताटङ्कद्वयभूषितायै नमः
६८४. ॐ तिथीशायै नमः
६८५. ॐ तिथिसंपूज्यायै नमः
६८६. ॐ तिथिस्थायै नमः
६८७. ॐ तिथिरूपिण्यै नमः
६८८. ॐ त्रितिथिवासिन्यै नमः
६८९. ॐ त्रितिथिसेव्यायै नमः
६९०. ॐ तिथीशवरदायिन्यै नमः
६९१. ॐ तिलोत्तमादिकाराध्यायै नमः
६९२. ॐ तिलोत्तमादिकप्रभायै नमः
६९३. ॐ तिलोत्तमायै नमः
६९४. ॐ तिलप्रक्षायै नमः
६९५. ॐ तिलाराध्यायै नमः
६९६. ॐ तिलार्चितायै नमः
६९७. ॐ तिलभुजे नमः
६९८. ॐ तिलसंदात्र्यै नमः
६९९. ॐ तिलतुष्टायै नमः

७००. ॐ तिलालयायै नमः
७०१. ॐ तिलदायै नमः
७०२. ॐ तिलसकाशायै नमः
७०३. ॐ तिलतैलविधायिन्यै नमः
७०४. ॐ तिलतैलोपलिप्ताङ्गचै नमः
७०५. ॐ तिलतैलसुगन्धिन्यै नमः
७०६. ॐ तिलाज्यहोमसंतुष्टायै नमः
७०७. ॐ तिलाज्यहोमसिद्धिदायै नमः
७०८. ॐ तिलपुष्पाञ्जलिप्रीतायै नमः
७०९. ॐ तिलपुष्पाञ्जलिप्रियायै नमः
७१०. ॐ तिलपुष्पाञ्जलिश्रेष्ठायै नमः
७११. ॐ तिलपुष्पावभासिन्यै नमः
७१२. ॐ तिलकाश्रितसिन्दूरायै नमः
७१३. ॐ तिलकाङ्कितचन्दनायै नमः
७१४. ॐ तिलकाहृतकस्तूर्यै नमः
७१५. ॐ तिलकामोदमोहिन्यै नमः
७१६. ॐ त्रिगुणायै नमः
७१७. ॐ त्रिगुणाकारायै नमः
७१८. ॐ त्रिगुणान्वितविग्रहायै नमः
७१९. ॐ त्रिगुणाकारविख्यातायै नमः
७२०. ॐ त्रिमूर्त्यै नमः
७२१. ॐ त्रिगुणात्मिकायै नमः
७२२. ॐ त्रिशिरसे नमः
७२३. ॐ त्रिपुरेशान्यै नमः
७२४. ॐ त्रिपुरायै नमः
७२५. ॐ त्रिपुरेश्वर्यै नमः
७२६. ॐ त्रिपुरेश्यै नमः
७२७. ॐ त्रिलोकस्थायै नमः
७२८. ॐ त्रिपुर्यै नमः
७२९. ॐ त्रिपुराम्बिकायै नमः
७३०. ॐ त्रिपुरारिसमाराध्यायै नमः
७३१. ॐ त्रिपुरारिवरप्रदायै नमः
७३२. ॐ त्रिपुरारिशिरोभूषायै नमः
७३३. ॐ त्रिपुरारिवरप्रदायै नमः
७३४. ॐ त्रिपुरारीष्टसदात्र्यै नमः
७३५. ॐ त्रिपुरारीष्टदेवतायै नमः
७३६. ॐ त्रिपुरारिकृताद्धाङ्गचै नमः
७३७. ॐ त्रिपुरारिविलासिन्यै नमः
७३८. ॐ त्रिपुरासुरसंहर्त्र्यै नमः
७३९. ॐ त्रिपुरासुरमर्दिन्यै नमः
७४०. ॐ त्रिपुरासुरसंसेव्यायै नमः
७४१. ॐ त्रिपुरासुरवर्ययायै नमः
७४२. ॐ त्रिकुटायै नमः
७४३. ॐ त्रिकुटाराध्यायै नमः
७४४. ॐ त्रिकुटान्वितविग्रहायै नमः
७४५. ॐ त्रिकुटाचलमध्यस्थायै नमः
७४६. ॐ त्रिकुटाचलवासिन्यै नमः
७४७. ॐ त्रिकुटाचलसञ्जातायै नमः

७४८. ॐ त्रिकुटाचलनिर्गतायै नमः
७४९. ॐ त्रिजटायै नमः
७५०. ॐ त्रिजटेश्वर्यै नमः
७५१. ॐ त्रिजटावरदायिन्यै नमः
७५२. ॐ त्रिनेत्रेश्यै नमः
७५३. ॐ त्रिनेत्रायै नमः
७५४. ॐ त्रिनेत्रवरवर्णिन्यै नमः
७५५. ॐ त्रिवल्यै नमः
७५६. ॐ त्रिवलीयुक्तायै नमः
७५७. ॐ त्रिशूलवरधारिण्यै नमः
७५८. ॐ त्रिशूलेश्यै नमः
७५९. ॐ त्रिशूलीश्यै नमः
७६०. ॐ त्रिशूलभृते नमः
७६१. ॐ त्रिशूलिन्यै नमः
७६२. ॐ त्रिमनवे नमः
७६३. ॐ त्रिपनूपास्यायै नमः
७६४. ॐ त्रिमनूपासकेश्वर्यै नमः
७६५. ॐ त्रिमनुजपसन्तुष्टायै नमः
७६६. ॐ त्रिमनवे नमः
७६७. ॐ तूर्णसिद्धिदायै नमः
७६८. ॐ त्रिमनुपूजनप्रीतायै नमः
७६९. ॐ त्रिमनुध्यानमोक्षदायै नमः
७७०. ॐ त्रिविधायै नमः
७७१. ॐ त्रिविधाभक्त्यै नमः
७७२. ॐ त्रिमतायै नमः
७७३. ॐ त्रिमतेश्वर्यै नमः
७७४. ॐ त्रिभावस्थायै नमः
७७५. ॐ त्रिभावेश्यै नमः
७७६. ॐ त्रिभावपरिपूरितायै नमः
७७७. ॐ त्रितत्त्वात्मने नमः
७७८. ॐ त्रितत्त्वेश्यै नमः
७७९. ॐ त्रितत्त्वज्ञायै नमः
७८०. ॐ त्रितत्त्वधृगे नमः
७८१. ॐ त्रितत्त्वाचमनप्रीतायै नमः
७८२. ॐ त्रितत्त्वाचमनेष्टदायै नमः
७८३. ॐ त्रिकोणस्थायै नमः
७८४. ॐ त्रिकोणेश्यै नमः
७८५. ॐ त्रिकोणचक्रवासिन्यै नमः
७८६. ॐ त्रिकोणचक्रमध्यस्थायै नमः
७८७. ॐ त्रिकोणविन्दुरूपिण्यै नमः
७८८. ॐ त्रिकोणयन्त्रसंस्थानायै नमः
७८९. ॐ त्रिकोणयन्त्ररूपिण्यै नमः
७९०. ॐ त्रिकोणयन्त्रसपूज्यायै नमः
७९१. ॐ त्रिकोणयन्त्रसिद्धिदायै नमः
७९२. ॐ त्रिवर्णाढ्यायै नमः
७९३. ॐ त्रिवर्णेश्यै नमः
७९४. ॐ त्रिवर्णोपासिरूपिण्यै नमः
७९५. ॐ त्रिवर्णस्थायै नमः
७९६. ॐ त्रिवर्णाढ्यायै नमः
७९७. ॐ त्रिवर्णवरदायिन्यै नमः
७९८. ॐ त्रिवर्णाद्यायै नमः
७९९. ॐ त्रिवर्णार्चायै नमः
८००. ॐ त्रिवर्गफलदायिन्यै नमः
८०१. ॐ त्रिवर्गाढ्यायै नमः
८०२. ॐ त्रिवर्गेश्यै नमः

८०३. ॐ त्रिवर्गाद्यायै नमः
८०४. ॐ त्रिवर्गफलप्रदायै नमः
८०५. ॐ त्रिसन्ध्याच्यर्यायै नमः
८०६. ॐ त्रिसन्ध्येश्यै नमः
८०७. ॐ त्रिसन्ध्याराधनेष्टदायै नमः
८०८. ॐ त्रिसन्ध्यार्चनसन्तुष्टायै नमः
८०९. ॐ त्रिसन्ध्याजपमोक्षदायै नमः
८१०. ॐ त्रिपदाराधितपदायै नमः
८११. ॐ त्रिपदायै नमः
८१२. ॐ त्रिपदेश्वर्यै नमः
८१३. ॐ त्रिपदाप्रतिपाद्यायै नमः
८१४. ॐ त्रिपदेश्यै नमः
८१५. ॐ त्रिपदाप्रतिपादिकायै नमः
८१६. ॐ त्रिशक्त्यै नमः
८१७. ॐ त्रिशक्तेश्यै नमः
८१८. ॐ त्रिशक्तेष्टफलप्रदायै नमः
८१९. ॐ त्रिशक्तेष्टायै नमः
८२०. ॐ त्रिशक्तीष्टायै नमः
८२१. ॐ त्रिशक्तिपरिवेष्टितायै नमः
८२२. ॐ त्रिवेण्यै नमः
८२३. ॐ त्रिवेणीस्त्रिये नमः
८२४. ॐ त्रिवेणीमाधवार्चितायै नमः
८२५. ॐ त्रिवेणीजलसंतुष्टायै नमः
८२६. ॐ त्रिवेणीस्नानपुण्यदायै नमः
८२७. ॐ त्रिवेणीजलसंस्नातायै नमः
८२८. ॐ त्रिवेणीजलरूपिण्यै नमः
८२९. ॐ त्रिवेणीजलपूताङ्ग्यै नमः
८३०. ॐ त्रिवेणीजलपूजितायै नमः
८३१. ॐ त्रिनाडीस्थायै नमः
८३२. ॐ त्रिनाडीश्यै नमः
८३३. ॐ त्रिनाडीमध्यगामिन्यै नमः
८३४. ॐ त्रिनाडीसन्ध्यसञ्छेद्यायै नमः
८३५. ॐ त्रिनाड्यै नमः
८३६. ॐ त्रिकोटिन्यै नमः
८३७. ॐ त्रिपञ्चाशत नमः
८३८. ॐ त्रिरेखायै नमः
८३९. ॐ त्रिशक्त्यै नमः
८४०. ॐ त्रिपथगामिन्यै नमः
८४१. ॐ त्रिपथस्थायै नमः
८४२. ॐ त्रिलोकेश्यै नमः
८४३. ॐ त्रिकोटिकुलमोक्षदायै नमः
८४४. ॐ त्रिरामेश्यै नमः
८४५. ॐ त्रिरामार्च्यायै नमः
८४६. ॐ त्रिरामवरदायिन्यै नमः
८४७. ॐ त्रिदशाश्रितपादाब्जायै नमः
८४८. ॐ त्रिदशालयचञ्चलायै नमः
८४९. ॐ त्रिदशायै नमः
८५०. ॐ त्रिदशप्राथ्यायै नमः
८५१. ॐ त्रिदशाशुवरप्रदायै नमः
८५२. ॐ त्रिदशैश्वर्यसंपन्नायै नमः
८५३. ॐ त्रिदशेश्वरसेवितायै नमः

८५४. ॐ त्रिधामार्च्यायै नमः
८५५. ॐ त्रियामेश्यै नमः
८५६. ॐ त्रियामानन्तसिद्धिदायै नमः
८५७. ॐ त्रियामेशाधिकज्योत्स्नायै नमः
८५८. ॐ त्रियामेशाधिकाननायै नमः
८५९. ॐ त्रियामानाथवत्सौम्यायै नमः
८६०. ॐ त्रियामानाथभूषणायै नमः
८६१. ॐ त्रियामानाथलावण्यायै नमः
८६२. ॐ त्रिरत्नकोटियुताननायै नमः
८६३. ॐ त्रिकालस्थायै नमः
८६४. ॐ त्रिकालज्ञायै नमः
८६५. ॐ त्रिकालज्ञत्वकारिण्यै नमः
८६६. ॐ त्रिकालेश्यै नमः
८६७ ॐ त्रिकालार्च्यायै नमः
८६८. ॐ त्रिकालज्ञत्वदायिन्यै नमः
८६९. ॐ तीरभुजे नमः
८७०. ॐ तीरगायै नमः
८७१. ॐ तीरसरितायै नमः
८७२. ॐ तीरवासिन्यै नमः
८७३. ॐ तीरभुग्देशसंजातायै नमः
८७४. ॐ तीरभुग्देशसंस्थितायै नमः
८७५. ॐ तिग्मायै नमः
८७६. ॐ तिग्मांशुसंकाशायै नमः
८७७. ॐ तिग्मांशुक्रोडसंस्थितायै नमः
८७८. ॐ तिग्मांशुकोटिदीप्ताङ्ग्यै नमः
८७९. ॐ तिग्मांशुकोटिविग्रहायै नमः
८८०. ॐ तीक्ष्णायै नमः
८८१. ॐ तीक्ष्णतरायै नमः
८८२. ॐ तीक्ष्णमहिषासुरमर्दिन्यै नमः
८८३. ॐ तीक्ष्णकर्त्रीलसत्पाणये नमः
८८४. ॐ तीक्ष्णासिवरधारिण्यै नमः
८८५. ॐ तीव्रातीव्रगत्यै नमः
८८६. ॐ तीव्रासुरसङ्घविनाशिन्यै नमः
८८७. ॐ तीव्राष्टनागाभरणायै नमः
८८८. ॐ तीव्रमुण्डविभूषणायै नमः
८८९. ॐ तीर्थात्मिकायै नमः
८९०. ॐ तीर्थमय्यै नमः
८९१. ॐ तीर्थेश्यै नमः
८९२. ॐ तीर्थपूजितायै नमः
८९३. ॐ तीर्थराजेश्वर्यै नमः
८९४. ॐ तीर्थफलदायै नमः
८९५. ॐ तीर्थदानदायै नमः
८९६. ॐ तुमुल्यै नमः
८९७. ॐ तुमुलप्राज्ञ्यै नमः
८९८. ॐ तुमुलासुरघातिन्यै नमः
८९९. ॐ तुमुलक्षतजप्रीतायै नमः

९००. ॐ तुमुलाङ्गणनर्त्तक्यै नमः
९०१. ॐ तुरग्यै नमः
९०२. ॐ तुरगारूढायै नमः
९०३. ॐ तुरङ्गपृष्ठगामिन्यै नमः
९०४. ॐ तुरङ्गमनाह्लादायै नमः
९०५. ॐ तुरङ्गवेगगामिन्यै नमः
९०६. ॐ तुरीयायै नमः
९०७. ॐ तुलनायै नमः
९०८. ॐ तुल्यायै नमः
९०९. ॐ तुल्यवत्यै नमः
९१०. ॐ तुल्यकृते नमः
९११. ॐ तुलनेश्यै नमः
९१२. ॐ तुलाराशये नमः
९१३. ॐ तुलाराश्यै नमः
९१४. ॐ त्वसूक्ष्मविदे नमः
९१५. ॐ तुम्बिकायै नमः
९१६. ॐ तुम्बिकापात्रभोजनायै नमः
९१७. ॐ तुम्बिकाधिन्यै नमः
९१८. ॐ तुलस्यै नमः
९१९. ॐ तुलसीवर्यायै नमः
९२०. ॐ तुलजायै नमः
९२१. ॐ तुलजेश्वर्यै नमः
९२२. ॐ तुषाग्निव्रतसन्तुष्टायै नमः
९२३. ॐ तुषाग्नये नमः
९२४ ॐ तुषराशिकृते नमः
९२५. ॐ तुषारकरशीतांग्यै नमः
९२६. ॐ तुषारकरपूर्त्तिकृते नमः
९२७. ॐ तुषाराद्रये नमः
९२८. ॐ तुषाराद्रिसुतायै नमः
९२९. ॐ तुहिनदीधितये नमः
९३०. ॐ तुहिनाचलकन्यायै नमः
९३१. ॐ तुहिनाचलवासिन्यै नमः
९३२. ॐ तुर्यवर्गेश्वर्यै नमः
९३३. ॐ तुर्यवर्गदायै नमः
९३४. ॐ तुर्यवेददायै नमः
९३५. ॐ तुर्यवर्यात्मिकायै नमः
९३६. ॐ तूर्यायै नमः
९३७ ॐ तूर्येश्वरस्वरूपिण्यै नमः
९३८. ॐ तुष्टिदायै नमः
९३९. ॐ तुष्टिकृते नमः
९४०. ॐ तुष्टयै नमः
९४१. ॐ तूणीरद्वयपृष्ठधृगे नमः
९४२. ॐ तुम्बुराज्ञानसतुष्टायै नमः
९४३. ॐ तुष्टिसंसिद्धिदायिन्यै नमः
९४४. ॐ तूर्णराज्यप्रदायै नमः
९४५. ॐ तूर्णगदप्रदायै नमः
९४६. ॐ तूर्णपद्मदायै नमः
९४७. ॐ तूर्णपाण्डित्यसंदात्र्यै नमः
९४८. ॐ तूर्णायै नमः
९४९. ॐ तूर्णबलप्रदायै नमः
९५०. ॐ तृतीयायै नमः
१५१. ॐ तृतीयेश्यै नमः
९५२. ॐ तृतीयातिथिपूजितायै नमः

९५३. ॐ तृतीयाचन्द्रचूडेश्यै नमः
९५४. ॐ तृतीयाचन्द्रभूषणायै नमः
९५५. ॐ तृप्त्यै नमः
९५६. ॐ तृप्तिकर्यै नमः
९५७. ॐ तृप्तायै नमः
९५८. ॐ तृष्णायै नमः
९५९. ॐ तृष्णाविवर्धिन्यै नमः
९६०. ॐ तृष्णापूर्णकर्यै नमः
९६१. ॐ तृष्णानाशिन्यै नमः
९६२. ॐ तृषितायै नमः
९६३. ॐ तृषायै नमः
९६४. ॐ त्रतासंसाधितायै नमः
९६५. ॐ त्रेतायै नमः
९६६. ॐ त्रेतायुगफलप्रदायै नमः
९६७. ॐ त्रैलोक्यपूज्यायै नमः
९६८. ॐ त्रैलोक्यदात्र्यै नमः
९६९. ॐ त्रैलोक्यसिद्धिदायै नमः
९७०. ॐ त्रैलोक्येश्वरतादात्र्यै नमः
९७१. ॐ त्रैलोक्यपरमेश्वर्यै नमः
९७२. ॐ त्रैलोक्यमोहिन्यै नमः
९७३. ॐ त्रैलोक्येशान्यै नमः
९७४. ॐ त्रैलोक्यराज्यदायिन्यै नमः
९७५ ॐ त्रैत्रिशाखेश्वर्यै नमः
९७६. ॐ त्रैत्रीशाखायै नमः
९७७. ॐ त्रैत्रविवेकदायै नमः
९७८. ॐ तोरणान्वितगेहस्थायै नमः
९७९. ॐ तोरणासक्तमानसायै नमः
९८०. ॐ तोलकास्वर्णसंदात्र्यै नमः
९८१. ॐ तोलकास्वर्णकङ्कणायै नमः
९८२. ॐ तोमरायुधरूपायै नमः
९८३ ॐ तोमरायुधधारिण्यै नमः
९८४. ॐ तौर्यत्रिकेश्वर्यै नमः
९८५. ॐ तौर्यत्रिक्यै नमः
९८६. ॐ तौर्यत्रिकोत्सुक्यै नमः
९८७. ॐ तन्त्रकृते नमः
९८८. ॐ तन्त्रवत्सूक्ष्मायै नमः
९८९. ॐ तन्त्रमन्त्रस्वरूपिण्यै नमः
९९०. ॐ तन्त्राकृते नमः
९९१. ॐ तन्त्रासपूज्यायै नमः
९९२. ॐ तन्त्रोश्यै नमः
९९३. ॐ तन्त्रासम्मतायै नमः
९९४. ॐ तन्त्राज्ञायै नमः
९९५. ॐ तन्त्रविदे नमः
९९६. ॐ तन्त्रमाद्यायै नमः
९९७. ॐ तन्त्रस्वरूपिण्यै नमः
९९८. ॐ तन्त्रस्थायै नमः
९९९. ॐ तन्त्रजायै नमः
१०००. ॐ तन्त्र्यै नमः
१००१. ॐ तन्त्रभृते नमः
१००२. ॐ तन्त्रमन्त्रदायै नमः
१००३. ॐ तन्त्राद्यायै नमः
१००४. ॐ तन्त्रगायै नमः
१००५. ॐ तन्त्रायै नमः
१००६. ॐ तन्त्रार्च्यायै नमः
१००७. ॐ तन्त्रसिद्धिदायै नमः
१००८. ॐ तन्त्रसिद्धिदायै नमः

इति तकारादि-तारासहस्र-नामावली समाप्ता ।

तारा-प्रातःस्मरण-स्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भव-तारिणि ! तारिणीं त्वां
मन्दस्मितां त्रिनयनां घन-नीलवर्णाम् ।
कर्त्रीं-कपालोत्पल-खड्ग-धात्रीं
धात्रीं सुरा-ऽसुर-नृणामखिलेश्वरीं च ॥१॥

प्रातः स्मरामि खर्वापवर्गदात्री-
मक्षोभ्य-शम्भु सहितामहि भूषणाढ्याम् ।
प्रत्यर्पिताङ्घ्र-शिव-वक्षसि सुप्रसन्नां
भक्तार्ति-भयवारणकर्म-दक्षाम् ॥२॥

प्रातः स्मरामि पट्कोण-त्रिकोणगेहां
वस्वार-धरणीगृह-शोभमानाम् ।
शक्रादि-सुरसङ्घ सुसेव्यमाना-
मानन्दकन्दां पञ्चाणवीं ताम् ॥३॥

प्रातर्नमामि नृ-करोटि विशालमालां
हाला-विघूर्णिततरां त्रिनेत्रजालाम् ।
व्याघ्राम्बरावृतकटी-तटभासमानां
जाड्यापहां त्वरित-सिद्धिप्रदां परेशीम् ॥४॥

प्रातर्भजामि भव-ताप-विनाशिकाम्बां
सद्यः समृद्धि-निधि-बुद्धिप्रकाशिकां च ।
ज्वलच्चितामध्य-गतातियोरां
दंष्ट्राकरालामपि भक्तपालाम् ॥५॥

फलश्रुतिः

यः श्लोकपञ्चकमिदं पठति प्रभाते
तारां स्मरन् प्रतिदिनं भुवि भारहाराम् ।
विद्या-विभूति-सुख-शान्ति-यशांस्यवाप्य
सोऽन्ते प्रयाति सालोक्यपदं जनन्याः ॥६॥

इति कौलाचार्य-पण्डित-श्रीकाशीप्रसादशुक्लशास्त्रिणा
विरचितं तारा-प्रातःस्मरणं समाप्तम् ।

—:०:—

जो साधक भू भारहारिणी-जगन्माता तारा के इन पाँच श्लोकों को नित्यप्रति प्रातःकाल, उनका स्मरण करते हुए पाठ करता है। वह सभी विद्याओं, ऐश्वर्यों, सुख-शान्ति एवं यशादि को प्राप्त कर अन्त में तारालोक को प्राप्त करता है।

श्रीउग्र-तारा-कवचम्

कैलास-शिखरारूढं देव-देवं जगद्-गुरुम् ।
पप्रच्छ पार्वती देवी साधकानुग्रहेच्छया ॥१॥

त्वत्-प्रसादान्महादेव ! भैरवेणादितं पुरा ।
कवचं श्रोतुमिच्छामि तारिकाया मनोहरम् ॥२॥

श्रुत्वा नगात्मजा-वाक्यं विहस्य परमेश्वरः ।
महा-प्रीत्या परिष्वज्य साधु साध्विति वादयन् ॥३॥

शृणु तत्-कवचं देवि ! अज्ञानेन्धन-पावकम् ।
यस्य स्मरण-मात्रेण तारिका सम्प्रसीदति ॥४॥

यामवाप्य महात्मानो धर्म-कामार्थ-मुक्तिषु ।
नाऽसाध्यं मेनिरे किञ्चित् कवयः शुद्ध-बुद्धयः ॥५॥

विनियोगः—अस्य श्रीउग्र-ताराकवचस्य श्रीअक्षोभ्य ऋषिः, बृहती छन्दः, श्रीउग्रतारा देवता, सर्व-कामार्थ-साधने पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीअक्षोभ्य-ऋषये नमः, शिरसि । बृहती-छन्दसे नमः, मुखे । श्रीउग्रतारा-देवतायै नमः, हृदि । सर्व-कामार्थ-साधने पाठे विनियोगाय नमः, अञ्जलौ ।

इस उग्रताराकवच का नित्य प्रति श्रद्धा-भक्ति पूर्वक जो साधक पाठ करता है, उसके धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष चारों पदार्थ हस्तगत हो जाते हैं । संग्राम में विजय, समस्त रोग-शोक का नाश तथा मनवांछित सभी कामनाओं की सिद्धि होती है ।

प्रत्यालीढ-पदार्पितांघ्रि-शव-हृद्-घोराट्टहासा रवा,
खड्गेन्दीवर-कर्त्रि-खर्पर-भुजा हूङ्कार-बीजोद्भवा ।
खर्वा नील-विशाल-पिङ्गल-जटा-जूटोग्र-नागोज्ज्वला,
जाड्यं न्यस्य कपालके त्रि-जगतां हन्त्युग्रतारा स्वयम् ॥
संसार-तारिणी तारा पूर्वस्यां पातु मां सदा ।
प्रत्यालीढ-पदा घोरा तथाग्नेय्यां जगन्मयी ॥१॥
उग्र-तारा पातु याम्यां यम-भीति-विनाशिनी ।
नैर्ऋत्यां चण्डिका पातु मुण्ड-माला-विभूषिता ॥२॥
खर्वा लम्बोदरी भीमा व्याघ्र-चर्मावृता कटौ ।
एक-जटा सदा पातु पश्चिमे च हर-प्रिया ॥३॥
नव-यौवन-सम्पन्ना पञ्च-मुद्रा-विभूषिता ।
नील-सरस्वती पातु वायव्ये पुत्रिणी सदा ॥४॥
बालार्क-मण्डलाकार-लोचन-त्रय-भूषिता ।
कौबेर्य्यां च महा-तारा पातु नित्यं सुर-प्रिया ॥५॥
चतुर्भुजा ललज्जिह्वा भीम-रूपा महाबला ।
भैरवी च तथा पातु ऐशान्यां दिशि मां सदा ॥६॥
खड्ग-कर्तृधरा सव्ये वामे चोत्पल-खर्परा ।
ऊर्ध्वे वागीश्वरी पातु द्रुत-बुद्धिकरी सदा ॥७॥
पिङ्गलोर्द्ध्व-जटामध्ये वासुकीषु नियोजिता ।
सावेश-स्मेर-वदना वस्त्रालङ्कार-भूषिता ॥८॥
मस्तकं पातु मे पद्मा श्वेत-पद्मान्तर-स्थिता ।
भालं मे पातु पद्मा च नासिकां रूप-धारिणी ॥९॥

सुन्दरी पातु नेत्रे च सर्वानन्द-स्वरूपिणीम् ।
श्रवणे सर्वदा पातु कालिका मुण्ड-मालिनी ॥१०॥
श्मशान-भैरवी पातु स्कन्धं मे सर्वदैव हि ।
आनन्द-भैरवी बाहू पातु नित्यं सुर-प्रिया ॥११॥
हस्तौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं पातु सर्वदा ।
मध्यं रक्षतु मातङ्गी नाभिं पातु सुरेश्वरी ॥१२॥
कटिं कामेश्वरी पातु भक्त-काम-प्रपूरिणी ।
भुवनेश्वरी सदा पातु ऊरू मे सर्वमङ्गला ॥१३॥
महा-त्रिपुर-सुन्दरी च जानुनी पातु सर्वदा ।
अश्वारूढा तथा जङ्घे प्रचण्डासुर-घातिनी ॥१४॥
भद्रकाली तथा पादौ पायाच्चाभद्र-हारिणी ।
सर्वत्र त्वरिता पातु सर्वत्र हितकारिणी ॥१५॥
अग्रतः षोडशी पातु देवी त्रिपुर-सुन्दरी ।
पृष्ठतो मे गुह्य-काली नित्यं रक्षतु शोभना ॥१६॥
कृष्णदेहा दक्ष-पार्श्वे नित्यं पातु सु-शोभना ।
वाम-पार्श्वे सदा पातु रक्त-बीज-विनाशिनी ॥१७॥

फल-श्रुतिः—

इत्येतत् कवचं प्रोक्तं सर्व-कामार्थ-सिद्धिदम् ।
गोपनीयं सदा देवि ! न कस्मैचित् प्रदर्शयेत् ॥१८॥
यः सकृच्छृणुयादेतत् कवचं भैरवोदितम् ।
सर्वान् स लभते कामान् परत्र शिवरूपता ॥१९॥

सकृद् यस्तु पठेन्नित्यं कवचं भैरवोदितम् ।
स च सर्वं यज्ञ-फलं लभते नाऽत्र संशयः ॥२०॥
संग्रामे संजयेच्छत्रून् मातङ्गानिव केसरी ।
दहेत् तृणं यथा वह्निस्तथा शत्रून् दहेत् सदा ॥२१॥
न शस्त्राणि न चास्त्राणि शरीरे प्रभवन्ति हि ।
न तस्य जायते व्याधिर्न च दुःखं कदाचन ॥२२॥
उच्चाटनाद्यास्ताः सर्वाः प्रसिद्ध्यन्ति च सिद्धयः ।
न च वैर-गतिस्तस्य भवेदन्यैरबाधितः ॥२३॥
दीर्घायुः काम-भोगी च धनवानपि जायते ।
यो न्यसेत् कवचं देहे तस्य सम्यक् फलं शृणु ॥२४॥
जितव्याधिः शतायुश्च रूपवानपि जायते ।
सर्व-रत्नौघ-सम्पूर्णो विद्यावानपि जायते ॥२५॥
नाग्निर्दहति तत्कायं न चापः क्लेदयति च ।
न शोषयति तं वायुः क्रव्यादा न हि चैव हि ॥२६॥
शस्त्राणि नैव छिन्दन्ति न तापयति भास्करः ।
वेतालाश्च पिशाचाश्च राक्षसाश्च भयानकाः ॥२७॥
सर्वे तस्य वशं यान्ति भूत-ग्रामाश्चतुर्विधाः ।
नित्यं पठति यो भक्त्या कवचं हर-निर्मितम् ॥२८॥
धर्मार्थ काम-मोक्षाश्च नित्यं तस्य कर-स्थिताः ।
अन्यस्य वरदः सोऽपि नित्यं भवति पण्डितः ॥२९॥

एष संजायतेऽव्याधिः कवचं ब्रह्म-वादिनः ।
वदेत् श्लोक-शतशो भवेत् स श्रीधरो नरः ॥३०॥

लिखितं यस्य गेहे तु कवचं भैरवोदितम् ।
न तस्य दुर्गतिः काचिज्जायते नाऽत्र संशयः ॥३१॥

ग्रहाश्च सर्वे तुष्यन्ति वशं गच्छन्ति भूमिपाः ।
यद्-राज्ये कवचज्ञोऽस्ति जायन्ते तत्र तै त्रयः ॥३२॥

इति श्रीभैरवानन्दे शिव-पार्वती-सम्वादे महा-रहस्ये
श्रीउग्र-ताराकवचं सम्पूर्णम् ।

—:०:—

श्रीतारा-त्रैलोक्य-विजय-कवचम्

श्रीभैरव उवाच

इत्थमभ्यर्थितः श्रीमान् शङ्करः प्रियया प्रभुः ।
कृपया कवचं प्राह चतुर्वर्ग-फल-प्रदम् ॥१॥

श्रीमहादेव उवाच

अस्ति गुह्यं महादेवि ! कवचं ब्रह्म-सम्मतम् ।
तारिण्या ब्रह्म-रूपिण्या उग्रापत् तारणं नृणाम् ॥२॥
त्रैलोक्य-विजयं नाम कवचं मन्त्र-विग्रहम् ।
सर्व-शक्तिमयं देवि ! सर्वारिष्ट-विमर्दकम् ॥३॥

विनियोगः—ॐ त्रैलोक्य-विजय-कवचस्यास्य श्रीअक्षोभ्य ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीतारिणी देवता, ह्रीं बीजम्, श्रीं शक्तिः, हूं कीलकम्, अमुक-विजय-कामे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः— श्रीअक्षोभ्य-ऋषये नमः, शिरसि । अनुष्टुप्-छन्दसे नमः, मुखे । श्रीतारिणी-देवतायै नमः, हृदि । ह्रीं बीजाय नमः, गुह्ये । श्रीं शक्तये नमः, नाभौ । हूं कीलकाय नमः, पादयोः । अमुक-विजय-कामे पाठे विनियोगाय नमः, अञ्जलौ ।

ब्रह्म-विष्णु-महेशाद्यास्त्रिदशाः सर्व-सिद्धयः ।
माहेश्वरी-भयङ्कर्यौ नारसिंही तथैव च ॥४॥

उत्तर-गन्धर्व-तन्त्रोक्त इस दिव्य त्रैलोक्य-विजय नामक तारा-कवच का जो साधक सदा-सर्वदा पाठ करता है, उसे बिना पुरश्चरण किये ही शीघ्र सिद्धि मिल जाती है । चारों पदार्थ (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का वह अधिकारी बन जाता है, इसमें सन्देह नहीं ।

कुल्लुकाः स्युर्महोग्रायाः सर्व-तन्त्रेषु गोपिता ।
वासुदेवो हरो ब्रह्मा तारिणी प्रकृतिः सदा ॥५॥
एकमूर्तिः सदा चिन्त्या एकमूर्तिस्तु संस्थिता ।
तां च श्रीमूर्तिमूर्ध्वाऽधः संयोज्य मध्य-देशतः ॥६॥
कुल्लुका त्रिविधा चर्या प्रत्येकं त्र्यक्षरी सदा ।
माहेश्वरीति विख्याता श्रीमत्कुल्लुक-तारिणी ॥७॥
ऊर्ध्वं रक्षतु सा नित्यं चतुवर्ग-फलाप्तये ।
महा-मेघ-प्रभां श्यामां कला-बाहु-समन्विताम् ॥८॥
खड्ग-कर्त्रि-धरां पीत-वस्त्रां शवासनां स्मरेत् ।
प्रणव भुवनेशानीमनन्ताद्यं शिव तथा ॥९॥
बिन्दु-नाद-समायुक्तं कूर्म-बीजं तदन्तरम् ।
नमस्तारायै सकल-दुस्तराँस्तारय-द्वयम् ॥१०॥
स्वाहान्तोऽयं भयङ्करी श्रीमद्-भुवन-तारिणी ।
श्यामां द्वादश-हस्तां च रक्त-वस्त्रां शवासनाम् ॥११॥
खड्ग-कर्त्रि-धरां नित्यां संस्मरेद् हृदयाम्बुजे ।
कूर्च नृसिंह क्रों कूर्च लज्जास्त्रं च कूर्चकम् ॥१२॥
नारसिंहीति विख्याता श्रीमत्सङ्कट-तारिणी ।
श्यामां दश-भुजां खड्ग-कर्त्रि-हस्तां शवासनाम् ॥१३॥
शुक्ल-वस्त्रां सदा ध्यायेन्मूलाधार-निवासिनीम् ।
शिरो मे सततं पातु हसौं कुल्लुक-तारिणी ।१४॥
शिखां मे पातु कलहीं देवी या ब्रह्म-तारिणी ।
शिरसो दक्षिणे भागे हसस्त्रीं वज्रतारिणी ॥१५॥

पातु मां वाम-भागे तु वं सहूं दुर्ग-तारिणी ।
शिरसः पश्चिमे भागे रक्ष फट् उग्र तारिणी ॥१६॥

षडक्षरी कुल्लुकेशी विजयानन्द तारिणी ।
खड्गाम्भोज-वराभीति-धारिणीं मां सदाऽवतु ॥१७॥
मणि-धरि वज्रिणि हीं हूं श्रीं सर्व वशङ्करि ।
प्रति सरे रक्ष रक्ष मां हीं हूं हूं फट् स्वाहया ॥१८॥
शिखा-ग्रन्थि-स्थिताऽव्यान्मां देवी श्रीमणि-तारिणी ॥१९॥

ॐ हीं हूं क्ष्रौं सर्व-विघ्नानुत्सादय विदारय ।
हूं फट् स्वाहा विघ्न-तारा दिक्षु मां पातु सर्वदा ॥२०॥
ॐ हीं स्त्रीं आः सुरेखे हूं वज्ररेखे ठः हूं फट् ।
स्वाहा पातु भुवि प्रीता मां सुरेखोग्र-तारिणी ॥२१॥

इत्यष्टौ कुल्लुकामन्त्रान् विन्यस्य साधकोत्तमः ।
चतुरशीति-भेदांस्तान् मूलस्थान् विग्रहे न्यसेत् ॥२२॥
ॐ शिरो मे हीं स्त्रीं हूं फट् पातु मां पञ्च तारिणीम् ।
या देव्येक-जटा नाम त्रैलोक्ये जाड्य-हारिणी ॥२३॥
नेत्रयो हीं स्त्रीं हूं पातु नीलादेवी त्रिलोचना ।
भाले श्रींहींस्त्रींहंसः हूं फट् स्वाहा भीम तारिणी ॥२४॥
भ्रुवोर्मध्यं पातु नित्यं ॐहींहंसः सहीं सहुम् ।
फट् स्वाहा ज्ञान-तारा या अज्ञानेन्धनदाहिनी ॥२५॥
ॐहींहंसः श्रींहंसः स्त्रींहूं फट् श्रीं प्राण-तारिणी ।
पातु मां नासिका-मध्ये सर्वापत्-क्षय-कारिणी ॥२६॥

क्लीं ह्रीं स्त्रीं हूं ॐ क्लीं हूं फट् पातु मोहन-तारिणी ।
मुख-पद्मे ऽङ्कुशाम्भोज-वराभय-कराम्बुजा ॥२७॥
ॐ ह्रीं हूं फट् पातु ओष्ठं लम्बोष्ठी विश्व-मोहिनी ।
आं ह्रीं ऐं हूं हूं हसस्त्रीं फट् अधरं पातु मे सदा ॥२८॥
अनन्त-तारिणी देवी भोग-मोक्ष-फलप्रदा ।
ऐं ॐ हूं ऐं स्त्रीं ह्रीं फट् हूं ऐं वाक् तारिणी परा ॥२९॥
मां पातु वाक्प्रदा देवी वचने मङ्गलप्रदा ।
ॐ तारे स्त्रीं महातारे हूं तारिण्युग्र-तारिणी ॥३०॥
रक्ष रक्ष जगत्तारे हूं फट् तारिणी पाहि मां,
ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं स्त्रीं ह्रीं फट् ऐं ह्रीं वद वाग्विभवप्रदे ॥३१॥
सर्वज्ञाज्ञामय स्त्रीं हूं जिह्वां मे रक्ष तारिणी ।
ऐं ह्रीं हूं स्त्रीं हसस्त्रीं फट् चां चीं चण्डोग्र-तारिणी ॥३२॥
पातु मे चिबुकं देवी चण्ड-भीति-विनाशिनी ।
ॐ कलह्रीं हूं हसस्त्रीं क्लीं क्लीं फट् कालतारिणी ॥३३॥
कपोलौ पातु मे उग्रा स्वर्णाभा नाग-कुण्डला ।
ॐ युं हूं हूं श्रीं हसस्त्रीं क्लीं ह्रीं हं ह्रीं हूँ फट् ऐं सदा ॥३४॥
कर्णौ पातु महा-माया विद्या श्रीशब्द-तारिणी ।
ॐ श्रीं ग्लौं गं हूं हसस्त्रीं ऐं गण्डौ पातु मे सदा ॥३५॥
पद्म-युग्म-वराभीति-धारिण्यभय-तारिणी ।
ॐ क्लीं किलि किलि स्त्रीं फट् कण्ठं पातु सु-तारिणी ॥३६॥
श्रीं श्रीं ह्रीं ऐं स्त्रीं च्लूं हसस्त्रीं हूँ फट् स्त्रीं हूँ क्षें हूँ करालिनी,
रक्ष रक्ष महा-तारे हूं फट् स्वाहा ककुरस्थलं

ॐ ज्रींहींस्त्रींहूँ हसस्त्रींहूँफट् ग्रीवां रक्ष तारिणी,
ॐ हींहूँत्रीं क्लोंहसस्त्रीं भस्त्रीं भस्त्रीं जये जये।
महोग्रे पिङ्गल-जटे हींस्त्रींहूँ फट् स्वाहाऽवतु।
स्कन्धौ मे जयदा पातु देवी विजय-तारिणी ॥३७॥
ॐ हूं हीं त्रीं द्रां द्रीं क्लूं हसः हूँ फट्।
बाहु-मूले पातु नित्यं मम सा जय-तारिणी ॥३८॥
ॐ द्रां द्रीं द्राविणि क्लिन्ने द्रावय द्रावय द्रुतम्।
सर्व-शत्रून् महामाये महा-तारिणि हीं सहीं ॥३९॥
फट् स्वाहा बाहु-मध्यं मे पातु विद्राव-तारिणी ॥४०॥
ॐ हीं क्षं भमलवरयूं श्रींक्षींहूँपहीं सः फट्।
करौ पातु सिद्धि-तारा मम सर्वार्थ-साधिनी ॥४१॥
आंहींक्रों हूं हसस्त्रीं फट् अंगुली ऋद्धि-तारिणी।
ॐ खफ्रें स्त्रींहूं हंसः क्ष्रीं नखानखण्ड-तारिणी ॥४२॥
ॐ हींहूं द्रांद्रीं हूंल्लूं स्त्रीं सः खफ्रें चण्ड-योगिनि।
योगेश्वरि महा-तारे तारकासुर-मर्दिनि ॥४३॥
मर्दय प्रमथान् दुष्टान् मम शत्रून् विदारय।
शोषय त्रोटय क्षां क्ष्रीं धूं धूं बन्धय बन्धय ॥४४॥
सर्वारिष्टं संहर स्त्रीं करौ महोग्र-तारिणी।
पातु मे विजयानन्द-दायिनी खड्ग-धारिणी ॥४५॥
ॐ स्त्रीं हूं यरलवसहूं हसक्षमलवरयूं हीं हीं।
ॐ कुक्षि-देशं मे पातु योगिनी-तारिणी ॥४६॥

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्त्रीं स्त्रीं सः क्लीं क्लीं विमोक्षं हसः ।
क्लीं स्त्रीं पाहि मां पार्श्वौ भृगु-तारिणी स्वाहा हसः ॥४७॥

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं फट् साऽह महोग्र-तारिणी ।
पाहि मां हृदयासन्ना प्राण-शक्त्युप-बृंहिता ॥४८॥
ॐ तारे तारय त्रींहूं हंसस्त्रैलोक्य-त्राण-कारिणी ।
हूं फट् स्वाहा स्तन-द्वन्द्व रक्ष मे विजय-प्रदे ॥४९॥
ॐ क्षां हूं कलहस्त्रीं फट् काल-रुद्र-निवारिणी ।
रक्ष रक्ष हूं फट् ऐं हूं उदरं रुद्र-तारिणी ॥५०॥
ॐ ह्रींभस्त्रीं हसस्त्रीं फट् नाभिं मे जीव-तारिणी ।
ह्रींक्लीहूं सहस्त्रीं फट् लिङ्गं प्रजन-तारिणी ॥५१॥
ॐ ह्सौंह्रींहसस्त्रीं हूंहूक्लींस्त्रीं फट् सदा मम ।
आधारं पातु सा देवी त्रैलोक्याधार-तारिणी ॥५२॥
ॐ हूंह्रींस्त्रीं जम्भिनि श्रींह्रीं वशिनि क्लीं मोहिनि ।
ॐ द्रां द्राविणि मे शत्रून् हन द्रावय मोहय ॥५३॥
क्षोभय क्षोभय हूं हूं द्रुतं जम्भय जम्भय ।
तारे तारिणि रुद्रास्थि-धारिणि ब्रह्म-रूपिणि ॥५४॥
ब्रह्म-विष्णु-शिव-त्राण-कारिणि क्षीं फट् अम्बिके ।
रक्षिणि तारिणि देवि त्रिखण्ड पातु मे सदा ॥५५॥
हूंह्रींस्त्रींश्रीं हसस्त्रीं ह्रींहूं फट् स्वाहा ममाऽवतु ।
नितम्ब-स्थल-सर्वाङ्गी सर्वदा सर्व-तारिणी ॥५६॥
ह्रांहूं ह्रींक्लींव्लूंस्त्रींहूं फट् ऊरू मे भद्रतारिणी ।
ॐ ह्रींज्रीं क्रीं हसस्त्रीं फट् हूंह्रीं जम्भय मोहय ॥५७॥

स्तम्भय द्रावय द्रांद्रींक्लीं ठं सः शत्रु-पक्षगान् ।
मम जानु-युगं रक्ष देवी जम्भक-तारिणी ॥५८॥
ॐ श्रीं हूं ह्रीं क्रीं झ्रीं श्रींहूं हूं ममाऽवतु ।
जङ्घा-युग्मं महादेवी पातु सा भ्रम-तारिणी ॥५९॥
ॐ ह्रींगांगींग्लौंगूंगैंगौंग्लौंहूंन्त्रीं फट् परमेश्वरी ।
गुल्फ-युग्मं सदा पातु देवी श्रीगण-तारिणी ॥६०॥
ॐ हूं फट् पाद-पृष्ठं पातु परोक्ष-तारिणीम् ।
ॐ हूं ह्रीं फट् महा-तारा पातु मे चरणांगुलीः ॥६१॥
ॐह्रींस्त्रींग्लौंलंहसस्त्रींहूं फट् स्वाहा स्वरूपिणी ।
पादाधः पातु मे नित्यं देवी श्रीभूमि-तारिणी ॥६२॥
ॐ क्षौंक्षींहूं ह्रींस्त्रीं हसौं फ्रें फट् ईश्वरि ।
तुरु तुरु स्त्रीं श्रीं ह्रीं हूं वज्र-तेजोमये ऐं फट् ॥६३॥
सर्वास्त्र-शस्त्र-वारिणि सर्व-प्रहरण-निह्नदिनि ।
सर्व-कृत्याभिचार-ग्रहारिष्ट-निवारिणि ॥६४॥
सर्वास्त्राणि स्तम्भय स्त्रीं मर्दय ह्रीं विदारय ।
भञ्जय द्रां बन्धय बलूं सन्तापय हसौं हः फट् ॥६५॥
महोग्र तारिणी-विद्या रोम-कूपानि मेऽवतु ।
सर्वायुध करा देवी सर्वतोऽभय-दायिनी । ६६॥
ॐ ह्रींभ्रंत्रूंरुंज्रूं हूं नमो भगवति ! द्रंष्ट्रिणि भीम-वक्त्रे महोग्ररूपे कालिके केलिनिश्चले क्लुं क्लुं क्लुं विद्युज्जिह्वे हूं हूं कटि-श्राणि-मांसभरणे विशाल-मुण्ड-माला-धारिणि द्रावय द्रावय महा-रौद्रि परभट-गजाश्व-हृच्छोषिणि अखिल-दृष्टि-

भूषिणि निखिलास्त्र-परीवर्त्त-कारिणि भ्रूकुटी-कृत-नयने विषम-नेत्रे महा-रक्त-वसा-मांस-वसा-मेदोपलिप्त-गात्रे कह कह, मह मह, भ्रूंद भ्रूंद नाना-जीमूतवर्णे विस्रद्-घण्टावकीर्ण-देहे शव-मांस-प्रिये विम्बे विम्बे रण-विम्बे रौद्ररूपे ह्लौं ह्लौं ह्लः कुन्त कुन्त आकर्षय आकर्षय धुनु धुनु हेंहः खफ्रें विजृम्भिनि हूंक्षौं नमो जय त्रैलोक्य-विजये हूं फट् स्वाहा त्रैलोक्य-विजया तारा सर्वाङ्गं मे सदाऽवतु ॥ ॐ ह्रींस्त्रीं चांचींचैं हूं फट् श्रींह्रीं महेश्वरि हूं विद्युत्प्रभे विद्ये विजयानन्ददाऽवतु । ॐ ह्रीं स्त्रीं चांचींचैं हूं फट् श्रींह्रीं महेश्वरि हूं विद्युत्प्रभे विद्ये विजयानन्द-दायिनि चिदानन्द-मये देवि चेतने चित्स्वरूपिणि हंसः हंसां हंसीं हूं सः पातु चैतन्यतारिणी ॥

इति त्रिर्व्यापकं कृत्वा अष्टाधारान् प्रविन्यसेत् ।
शिव-शक्त्यात्मकैर्वर्णैस्तारिणी-मन्त्र-संयुतैः ॥६७॥

ॐ ह्रींस्त्रींडांडींडूंडैंडः डरलकसहैं हूं वंशंषसं ग्लौं भूमि-तत्त्वात्मिके डाकिनि तारिणि कालाग्नि-रुद्र-सहिते ममाधारं सदाऽवतु । ऐंह्रींश्रीं हसखफ्रें ह्सौं यरलवसहूं ह्सौं हसखफ्रें श्रींह्रींएं ॐ आधार-वासिनि कालाग्नि रुद्र-सहिते ममाधारं रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ ह्रींहूंरांरीं रूंरैंरौंरः स्त्रीं रडलकसहैं ऐंह्रींश्रीं हसखफ्रें स्त्रीं लवरयूं ह्सौंः सः फट् श्रींह्रींएं बंभंमंयंरलं राजसि आप्याश्रये ब्रह्मणा सहिते पाहि अधिष्ठानं जगन्मयि विघ्नान् मे जलजान् छिन्धि रक्ष राकिनि तारिणि ॥

ॐ स्त्रींह्रींलांलींलूंलौंलः फट् ह्मौः सः फट् लडरकसह्रौं ह्रैंहः ऐंह्रींश्रीं सहखफ्रें ह्मौः हसक्षमलवरयूं ह्सौः हसखफ्रें श्रींह्रींऐं डंढणंतंथंदंधंनंपंफ सात्त्विके जीवात्मरूपिणि श्रींह्रीं रुद्रानन्द-प्रदायिनि तेजोमये ज्वलत्कालानल-दीप्ते महेश्वरि मणिपूरं सदा पाहि देवि लाकिनि तारिणि ॐ ह्रींहूं कांकींकूंकेंकौंकः स्त्रीं ह्सौं सः क्लीं कलडग्सह्रौं हूं श्रीं हसखफ्रें ह्सौं ह्सौं हसक्षमलवरयूं ह्सखफ्रें श्रींह्रींऐं कंखंगंघंङंचंछंजंझंञंटंठं फट्। पर-तत्त्वात्मिके देवि ! जगच्चैतन्य-कारिणि । विष्णु-वक्षःस्थलावासे कमले कमलालये ॥ क्लींकारे कामदे देवि! प्राण-शक्ति प्रबोधिनि ! अनाहतं रक्ष नित्यं देवि ! काकिनि तारिणि ॥

ॐ ह्रींत्रींहूंह्रींश्रींह्रौंह्रैंस्त्रीं ह्सौं फट् परापरे सांसींसूंसैंसौंसः ह्रीं सडग्लकह्रौं ह्रीं हूं ऐंह्रींश्रां हसखक्रें ह्सौं क्षमलवरयूं ह्सौं हसखफ्रें श्रींह्रींऐंह्रां फट् परापरापरे अंआंइंईंउंऊं ऋंॠंऌंॡंएं ऐंओं औंअंअः फट् आकाशात्मिके देवि ! विद्युन्मति-विरोचने हिरण्य-गर्भाश्रये देवि ग्लौं हूं विशुद्धं पाहि मे सदा। चण्ड-प्रण्डल-पङ्काशे देवि ! साकिनि तारिणि ॥

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं ह्रांह्रीं हूं ह्रैंह्रौंहः फट् श्रीं हसकलरडें ऐंह्रींश्रीं हसखफ्रें ल्रौंः ह्रीं त्रीं फट् ठं ठः स्फुर स्फुर लव प्रक्ष सहस्त्रीं ह्सौं हसखफ्रें श्रींह्रींऐं हंक्षं हंसः हूं सोऽहं ह्रीं फट् मनोमये ब्रह्म-तारा-लये ईशे सदा-शिव-हृदि स्थिते साभिलाषं मनो नित्यं पाहि ह्राकिनि तारिणि ।

ॐ ह्रींस्त्रीं हं यांयीं यूं यैंयौं यः सौं हं हंसीं स्त्रीं हसौं ऐंह्रींश्रीं हूं हसखफ्रें हसौं भगवत्यम्ब चिन्मये बुद्धि-तत्त्वात्मिके हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं हसौं सहखफ्रें श्रींह्रींऐं प्रज्ञां रक्ष जगन्मये निखिल-प्रपञ्च-रूपिणि हंसः सोहं हसौं सः फट् जगत्-तत्त्वात्मिके देवि ! एक-पत्रं सदाऽवतु ॥

ॐ ह्रींस्त्रींहूं जगद्धात्रि जगदानन्द-दायिनि हांह्रींहूं हैं हौंहः स्त्रीं फट् जगद ह्लादरूपिणि ह्रींकारं मे अहं-तत्त्वं पातु सच्चित्-स्वरूपिणि ऐंह्रींश्रीं हसखफ्रें ह्रींहूं क्लीं सः हसौं स्त्रीं फट् अघोर-मुखि तारे हूं सर्व-प्रत्यय-कारिणि हसौं ऐं ह्रीं हसखफ्रें सक्लीं हूं श्रीं हसौं ह्रीं ऐं सः सहस्रारधिष्ठिते हूं ह्रीं महा-शिव-विभूषण रक्ष रक्षाहंकृतिं मे जगच्चैतन्य-तारिणि ॥

ॐ ह्रीं हूं स्त्रीं हसस्त्रीं हसकलह्रीं हसौं तारिणि ब्रह्मतारिणि हसौं हसखफ्रें हश्रीं श्रींह्रीं ऐं परमे परमे परे घोरे घोरे महा-घोरे अघोरे घोर-रूपिणि घो-घोर-तर भस्त्रां भस्त्रीं हूं हूं परमेश्वरि चिदा-नन्द-परब्रह्म-तारिणि श्रीं सः ह्रीं सः फट् परमे शिव-पर्यङ्क शुद्ध-पद्मासन-स्थिते सहजानन्द-सुस्निग्धे पाहि मामुग्र-तारिणि ॥

नव-तारा: प्रविन्यस्य षडङ्गं विन्यसेत् पुनः ॥

ऐंक्लींसौं ॐ हसस्त्रीं हुं हां स्त्रीं फट् स्वाहा हृदयेऽवतु खड्गोत्पलवर भीति-घोर-भैरव-तारिणि ऐंक्लींसौः ईंऐं कलह्रीं हसकलह्रीं सक्लीं क्लीं ह्रीं हूं ह्रीं स्त्रीं हूं ऐं क्लींसौः

मातङ्गिनि मोहिनि ह्रीं श्रीं हूं ऐं वज्र-वैरोचनीये हूं हूं ऐं हूं फट् स्वाहा ह्रीं शिरसे पातु देवि खड्गोग्र-तारिणि ॥

ॐ ईऐं कलह्रीं श्रींह्रींहूं स्त्रीं हूं फट् श्रीं हसकलह्रीं सह्रीं ही शिखां पाहि मम त्रैपुर-तारिणि ह्रींस्त्रींहूं श्रींह्रींत्रीं ऐं वज्र-वैरोचनाये हूंहूं फट् स्वाहा वज्र-तारे ममाङ्गे वज्रतां कुरु । कवचं मम सर्वाङ्गं रक्ष श्रीवज्र-तारिणि ॥

ॐ हूंह्रीं ऐंक्लींसौः नमो मातङ्ग-तारिणीश्वरि ! सर्व-मुख-रञ्जनि श्रीं सर्वसत्त्व वशङ्करि स्त्रीं सर्व-स्त्री-पुरुष-वशङ्करि सर्व-वैरि-वशङ्करि ह्रींक्लीह्रींहूंहूं हस्त्रां सर्व-राज-वशङ्करि सर्व-दुष्ट-वशङ्करि ऐंक्लींसौः नेत्र-मण्डले सदा स्थिता पाहि तारे मातङ्गि विश्व-मोहिनि ॥

ॐ ह्रींस्त्रींहूं फट् क्रींकींकीं हूंहूं ह्रींह्रीं हसौः स्त्रीं हः फट् स्त्रीं हूं ह्रीं ॐ कालि कालि ॐॐॐहः स्त्रींहूं खफ्रें क्षौं क्षः स्त्यौं स्त्यः सह्रैं हंसः नमो भगवति सःफ्रें प्रचण्ड-बालिके खड्ग शूल-गदा-धरे हूंहूं हैहैं सर्व-शक्ति-धरे सर्वारि-सूदनि रक्त-मांसाशने भीमे खर्प-खट्वाङ्ग-धारिणि मां रक्ष रक्ष विजये मम शत्रून् विनाशय विनाशय सर्व-दुष्टानरिष्टान् निवारय सर्व-ग्रह-यक्ष-भूत-क्रूर-मातृभयं हन कूष्माण्ड-भैरव क्षेत्रपाल-डाकिन्युङ्गमान् निवारय निवारय खेचरान् ब्रह्म-राक्षसान् ये मां हिंसन्ति प्रत्यक्षं कृत्या-द्रोहस्य कारकाः परोक्ष वा तान् ज्वल ज्वालिनि हूँ हन क्षयं नय नय प्रमर्दय प्रमर्दय प्रणाशय प्रणाशय शोषय शोषय भ्रूं रूं क्षौं क्षौं भ्रैं फट् ।

कर-द्वयम् कालिका-मन्त्रतो न्यस्य, गायत्र्या व्यापकं चरेत् ॥
ह्रींस्त्रींहूं फट् एक-जटे विद्महे ह्रींस्त्रींहूं परे नीले विकट-दंष्ट्रे ह्रीं धीमहि

ॐ ह्रींस्त्रीं हूँ फट् ऐं सः स्त्रीं तन्नस्तारे प्रचोदयात् मां पाहुग्र-तारिणि ।

ॐ अक्षोभ्यः शिरः पातु सर्वदा क्षोभ-कारकः ।
पूर्वं ऐंह्रींश्रीं ॐ मां रोचनः पातु सर्वदा ॥६८॥
ऐंह्रींश्रींॐ पश्चिमेऽव्यात् सर्वदा सिद्धि-नायकः ।
ऐंह्रींश्रींहूँ फट् आग्नेय्यां नामको मां सदाऽवतु ॥६९॥
ऐंह्रींश्रींहूँ फट् नैऋत्यां मां पातु मामकः सदा ।
ऐंह्रींश्रीं हूँ फट् वायव्यां पातु मां पावकः सदा ॥७०॥
ऐंह्रींश्रींहूँ फट् ऐशान्यां तारकः पातु मां सदा ।
तद्-बहिः पूर्व-दिग्भागे ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः ॥७१॥
नमो ब्रह्माणि रक्ष रक्ष हंस-वाहिनि हंसिनि अ ह्रींक्रों ह्रीं हसैं स्त्रीं सः असिताङ्ग-निषेविते ।

रक्ष रक्ष महा माये हंसः सोऽहं-स्वरूपिणि ।
आग्नेय्यां ऐंह्रींश्रीं ह्रींस्त्रींहूँ फट् ईंह्रीं नमो नमः ॥७२॥
माहेश्वरि वृषारूढे शूल-हस्ते महामाये ।
हैंह्रौं हूं ह्रींश्रीं रक्ष रक्ष मां रुरु-भैरव-भूषणे ॥७३॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ह्रीं हूं स्त्रीं ऐं नमो भगवति ह्रीं ह्रीं कौमारि मां रक्ष-रक्ष दक्षिणे शिखि-वाहने शक्ति-हस्ते ऐं ह्रीं हैं चण्ड-भैरव-भूषिते ऐंह्रींश्रीं ह्रीं हूंफट् ।

ॐ ग्लौं नमो भगवति स्रुवं वाराहि मां रक्ष रक्ष दंष्ट्रायुधे महाबले उन्मत्त-सहिते विद्ये नैऋत्यां रक्ष मां सदा। ऐंह्रींहूं ॐ क्लीं हैं हंसः सोहं नमो नमो भगवति वैष्णवि श्रीं ह्रीं त्रीं गरुड-वाहिनि चक्रायुधे मां रक्ष रक्ष ऐं जौं ह्रौं हं सौः सः फट् माया-सहस्र-परिवर्त्तिनि क्रोध-भैरव-भैरवि प्रतीच्यां रक्ष वेवेशि सर्व-विघ्नान् निवारय ऐंह्रींश्रीं ॐ ह्रींह्रीं द्रीं त्रीं हस्रैं ऐं त्रां इं ऊं ह्रीं नमो नमो भगवत्यजिते ऐन्द्रि गज-राजोपरि-स्थिते वज्र-हस्ते हैं ह्सौं मम वैरि-विनाशिनि कपालि-सहिते रक्ष वायव्यां दिशि मां सदा! ऐंह्रींश्रीं ॐ स्त्रीं हूं फट् चांचींचैं नमो भगवति श्रीं चामुण्डे शव-वक्षःस्थे खट्वाङ्गायुध-धारिणि ह्रौं ह्रीं ह्सौं भीषणाख्ये उदीच्यां रक्ष मां सदा। ऐंह्रींश्रीं ऊं ईं लं ह्रीं ॐ ह्रीं स्त्रीं स्त्रीं हूं फट् नमो नमो भगवति महा-लक्ष्मि पद्मासन-संस्थिते परे पद्मायुध-धरे ॐ ह्रीं ह्क्लीं ह्क्लीं ह्सैं ह्स्त्रीं विभूतिदे संहार-भैरवानन्दे ऐशान्यां पाहि मां सदा। ऐं ह्रैं ह्रौं हेतुकः पातु पूर्वे। ऐं वं हूं फट् ह्रौं स्लौं सः फट् आग्नेये। त्रिपुरान्तकः क्लौं हूं याम्ये। ऐं वं वह्नि-वेतालः पातु मां मयाद् दक्षिणऽव्यादग्नि-जिह्वः। ऐं अं कं नैऋत एव मे हूं ह्रीं क्रैं ईं कां भ्रूं ह्रीं हूं कालाक्षः पातु मां सदा। वायु-कोणे ऐं मं हूं मतयो भैरवोऽवतु। उदीच्यां एं ऐं हूं फट् एक-पादः सदाऽवतु। ऐं भीमा मां पातु भीम-वटुक ऐशान्यां पातु मां सदा। ॐ तारे तारे महा-तारे उत्तारे भय तारिणि। ॐ ह्रींश्रीं ज्रीं हूं क्रों वं क्रों लं

वज्राश्मा-स्त्राणि मर्दय मर्दय द्रावय हीं हः कह-कह विमोडय विमोडय हसस्त्रीं फट् स्वाहेन्द्रास्त्रात् पाहि तारिणि ।

ॐ तारे वं विश्व-तारे हीं स्त्रीं वारुण-तारिणि । वं क्रों वं क्रों अग्न्यस्त्राणि स्तम्भय द्रावय द्रुतं परिवर्त्तय कर्तयाशु भ्रामयास्त्रं विदारय सङ्कोचय छेदय स्त्रीं सर्व-शत्रून् विनाशय अग्न्यस्त्रेभ्यः पाहिमांत्वं वह्नि-स्तम्भन-तारिणि ॥

ॐ हीं तारे महा-तारे काल-दण्ड-विनाशिनि हूंक्रों यं क्रों हसक्रों फट् दण्डास्त्राणि निवारय भंजय त्रोटय क्षुन्न छिन्धि छिन्धि विपाटयास्त्रं स्तम्भय स्तम्भय क्षीं हीं याम्यास्त्राद् रक्ष तारिणि ।

ॐ क्लीं हीं त्रीं विष्णु-तारे सर्वासुर-विदारिणि असुरास्त्राणि सर्वाणि निवारय विदारय भञ्जय त्रोटय कुन्त मदय त्रोटय द्रुह सर्वासुर-प्रहरणेभ्य आः सुरेखे सुरेखे हूं वज्ररेखे विदारिणि क्षौं क्षीं क्षुं हीं हूं फट् हसौः कृत्या-द्रोहं प्रणाशय माया-व्यूहं विदारय त्रीं त्रासिनि मां रक्ष आसुरास्त्रेभ्य ईश्वरि ।

ॐ हीं त्रीं हूं महा-तारे हं हः क्रों वं क्रों वं क्रों क्षुं क्षौं वषट् ज्वल ज्वल शूलिनि क्षीं दुष्ट-ग्रह-भयापहे हूं फट् स्वाहा वरुणास्त्र-कृत्या-द्रोहान् निवारय शोषय क्षोभय क्ष्म्यं फट् भिन्दि भिन्दि विलोपय आप्य-दुर्गे आपदोऽस्मान् दुर्गे दुर्गे रक्षिणि फट् स्वाहा मां पश्चिमे पातु श्रीदुर्गोत्तारिणी तु या ।

ॐ ह्रीं श्रीं भीम-तारा या ज्ञेया गिरि-वराश्रया । महा-कटा महा-वेगा महा-घोरा महा-बला । हां हां स्थां स्थीं महोच्छुष्मा वाद्यस्त्राणि विनाशय धूं धूं धूमावति किलन्ने क्लेदय द्रावयाऽहितान् आधार-तारिणि छिन्धि सभीरास्त्राणि मे रिपोः ।

ॐ ह्रीं हूं वज्र-वैरोचनीये वज्र-तारिणि हूं हूं फट् स्वाहा हैं सकलीं गदां चूर्णय भञ्जय यक्षास्त्राणि यक्ष-मायां द्रीं द्रावय द्रीं विमोचय उदीच्यां रक्ष मां देवि ! परितो वज्र तारिणि ॥

ॐ ह्रीं स्त्रीं क्लीं स्त्रीं काल-रुद्र-तत्त्व-स्वरूपिणि हैं हौं क्ष्रौं महा-तारे तारिणि ब्रह्म-स्वरूपिणि प्रचण्डे प्रथमास्त्राणि भञ्जय ह्रीं हः खण्डय रौद्र-कृत्या-पशूनुग्रान् प्रमथान् सर्प-राक्षसान् ब्रह्म-राक्षस-वेतालानुत्सारय निवारय रुद्रास्त्रेभ्यः सदा पाहि मां त्वं प्रचण्ड-तारिणि ।

ॐ ह्रीं हंसः क्रों ॐ हंसः छां सोहं क्रों वषट् हक्लीं सक्लीं हसक्लीं फट् हूं स्त्रीं ब्रह्मोग्र-तारिणि द्रुतं ब्रह्मास्त्रण्यु-पशान्ति त्वं नय विश्वात्मिके शिवे वेदोदिताः क्रियाः सर्वाः कृत्या-द्रोह-फल-प्रदाः । ये मामुद्दिश्य कुर्वन्ति तांस्तान् हिंसन्तु हिंसकान् । प्रचण्ड-तारिणि चक्र-भीत्या क्रोधाग्नि-घर्षिताः ।

ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं हसस्त्रीं ह्रीं गांगींगूं गैंगौं गः सः फट् ऐंह्रींश्रीं हूं स्लूं सुपर्ण क्रों अम्बान्तां सहौं: हसौः सोहं नाग-बाणान् हन सहन द्रां द्रीं ह्रीं च्लूं स्त्रीं हसस्त्रीं खैं खैं क्षः तार्क्ष्य-

तारिणि विष-सर्प-भय-स्त्राणि संहराखिल-भीति-हेति-नाग-पाशान् संहरैहि देवि श्रीताक्ष्य-तारिणि ।

इति शत्रोरस्त्रत-दुर्गं निराकृत्य विशुद्ध-धीः ।
पठेदिमं महा-मन्त्रं सर्व-भीति-विनाशनम् । ७३॥

ॐ ह्सौं वसहूं कलह्रीं हसक्ष्रीं फट् नरान्त्र-माला-भरण-भूषिते महा-कौलिनि महा-ब्रह्म-वादिनि महाधनोन्माद-कारिणि महा-भोग-प्रदे अस्मदीयं शरीरं वज्र-मयं कुरु कुरु दुर्जनान् हन हन महीपालान् क्षोभय क्षोभय पर-चक्रं भंजय भंजय जयङ्करि गगन-गामिनि यमलवरयूं हयमलवरयूं भमलवरयूं शमलवरयूं क्षमलवरयूं भमलवरयूं हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयूं हंसः सोऽहं हूं ह्रीं क्ष्रीं हसौं द्रौंद्रींद्रूं त्रांत्रींत्रूं त्रौंत्रः श्रीमत् कुल्लुक-तारिणि सर्वत्र मां रक्ष रक्ष स्वाहा ।

ॐ ह्रींक्ष्रींश्रींह्रीं महादेवि अश्वारूढे जय-प्रदे । वाहनानि पातु नित्यं मम सर्वार्थ-साधिनि ॥ ह्रीं ध्रैं सुरेखे देवि हूंहूं फट् रथं ममाऽवतु । रांरींरूंरैं रौंरः रक्षिणि हूं फट् परमानन्द-तारिणि ॥

ॐ हूं पुष्प-केतु राजार्हते गतागतायै सम्यगुदितायै स-ग्रह-राशि-नक्षत्रायै उदिता-दित्य-मण्डल-वर्त्तिन्यै नित्य-चैतन्यो-दितायै ह्रींत्रीं पर-ज्योतिस्तारायै हूं फट् स्वाहा ह्रीं ज्योति-स्तारिणि क्लिन्ने क्लेदिनि मे ध्वजं सदा रक्ष रक्ष वैरि-पक्षान् क्षयं कुरु नमोऽस्तु ते ॥

ॐ क्लीं कामाकर्षिणी मां पातु सर्वार्थ-साधिनी ।
तेजसाकर्षिणी बुद्ध्याकर्षिणी ज्ञानाकर्षिणी ॥७५॥
चित्ताकर्षिण-देवी च मोहाकर्षण-रूपिणी ।
तपसाकर्षिणी शस्त्राकर्षिणी भूताकर्षिणी ॥७६॥
वाहनाकर्षिणी मन्त्राकर्षिणी क्षेत्राकर्षिणी ।
दुर्गाकर्षण-रूपा च रत्नाकर्षण-रूपिणी ॥७७॥
अहङ्काराकर्षिणी च योगाकर्षण-रूपिणी ।
विद्याकर्षण-रूपा च श्रद्धाकर्षण-रूपिणी ॥७८॥
ओजसाकर्षिणी चैव स्तम्भिनी मोहिनी तथा ।
द्राविणी क्षोभिणी चैव वशीकरण-रूपिणी ॥७९॥
आकर्षिणी सम्मोहिनी पञ्च-बाणेश्वरी परा ।
सर्व-रूपा महा-तारा समरे पातु मां सदा ॥८०॥
अरण्ये प्रान्तरे भीमे निरालम्बे जल-प्लवे ।
वराभयाम्भोज-हस्ता पातु मामुग्र-तारिणी ॥८१॥
विषमे सङ्कटे घोरे कान्तारे पर्वतालये ।
खड्गाम्भोज-धरा देवी पातु मां दुर्ग-तारिणी ॥८२॥
सिंह-व्याघ्र-समाकीर्णे कानने भीषणालये ।
भीम-दंष्ट्रा पातु नित्यं खड्ग-खर्पर-धारिणी ॥८३॥
सभायां शास्त्र-वादे तु रिपु-संघ-समाकुले ।
मुष्टि-यन्त्रित-हस्ता मां पातु नील-सरस्वती ॥८४॥
खर्वा प्रत्यालीढ-पदा शवासना-गता शिवा ।
मुष्टि-हस्ता स्मृता देवी सद्यः स्तम्भयतेऽखिलान् ॥८५॥

क्षारत्रीयुग्-कलिका सौम्य-स्मेराम्बुजानना ।
रोगेभ्यः पातु मां नित्यं देवी याऽमृत-तारिणी ॥८६॥
प्रमथेभ्यः पिशाचेभ्यो राक्षसेभ्यो ग्रहादपि ।
ब्रह्म-राक्षस-वेताल-कूष्माण्डादिभ्य एव च ॥८७॥
सर्वत्र रक्ष मां देवि ! सिंहास्याद् भूत-तारिणि ।
पूर्वस्यां दिशि चाग्नेये दक्षिणे नैर्ऋते तथा ॥८८॥
वारुणे चैव वायव्ये कौबेरे रौद्र-गौरवे ।
छिद्र-स्थानेषु सर्वेषु रन्ध्र-देशेषु च क्रमात् ॥८९॥
कर्त्रि-खर्प-धरा देवी पातु मामुग्र-तारिणी ।
सैन्यानि वाहनान्येव गजाश्वादीनि भेऽवतु ॥९०॥
उग्रापत्-तारिणी देवि सर्व-मङ्गल-दायिनी ।
गोत्रं मित्राणि मे रक्ष पत्नीः प्रणव-शालिनीः ॥९१॥
महोग्र-तारिणी पातु सर्व-भीति-विनाशिनी ॥९२॥
ॐ हूङ्कार-बीजोद्भवे लोलजिह्व भयङ्करि ।
कर्त्रि-खर्प-धरे उग्रे उग्र-तारे नमोऽस्तु ते ॥९३॥
आकाश-निलये तारे त्र्यक्षरे ब्रह्म-वादिनि ।
सिद्धानां शुद्धिदे शुद्धे नमस्ते चोग्र-तारिणि ॥९४॥
सर्वत्र रक्ष मां देवि ! भयेभ्यश्चोग्र तारिणि ।
प्रसादादुग्र-तारायाः न मां हिंसन्ति हिंसकाः ॥९५॥
ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं स्त्रीं हसस्त्रीं स्फुर स्फुर हसस्त्रीं फट् प्रस्फुर प्रस्फुर स्त्रीं ह्रीं चट चट ह्रूं ह्रीं श्रीं हसकलरीं प्रचट प्रचट ह्रूं ह्रीं कह कह क्षीं क्षीं क्रों ह्रूं वम वम स्त्रों ह्रूं मे

रिपून् घातय घातय हूं फट् क्लीं क्रों ठः क्ष्रीं सः हसक्षमल-वरयूं सहक्षमलवरयीं हसखफ्रें ह्सौं सहं हंसः सोऽहं हूं फट् सोऽहं सर्वाङ्गं मेऽवतु तारिणी ॥

पातु मे सर्वदा नित्या सर्व-मन्त्र-प्रबोधिनी ।
भैरवी सुन्दरी काली मातङ्गी छिन्न-मस्तका ॥९६॥
नील-सरस्वती चेति मन्त्र-षट्कमुदाहृतम् ।
इति ते कथितं वत्स ! कथितं देव-दुर्लभम् ॥९७॥

फलश्रुतिः

त्रैलोक्य - विजयं नाम ब्रह्म - मन्त्रैक - विग्रहम् ।
अनेन कवची भूत्वा भावयन्नुग्र - तारिणीम् ॥९८॥
आधारस्था परां शक्तिमाकुंच्यानीय यत्नतः ।
षडङ्ग - सहितां मूर्ध्नि परानन्दे निमील्य च ॥९९॥
सहजानन्दजं तेज आत्माभेदेन भावय ।
शिवोऽहं भैरवश्चाहं नित्यानन्दोऽहमव्ययः ॥१००॥
संहर्त्ताऽहं रिपूणां वै महोग्र-तारिणी ह्यहम् ।
सर्व - शक्ति - मयो ब्रह्म - रूपोऽहं तारिणी-मयः ।
इत्यात्मानं भावयस्त्वं मन्त्राण्यरिषु योजय ॥१०१॥
ब्रह्म-मन्त्रं स्मरन् मन्त्र - तेजोभिरुज्ज्वलान्यपि ।
दह्यन्त्यविरलान्येव स्व - शुष्कान्यनलो यथा ॥१०२॥
ब्रह्म-मन्त्रैः पुटं कृत्वा यो जपेत् तारिका - मनुम् ।
कवचं वा तारिकायास्तस्य सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥१०३॥

ॐ क्लीं ह्रीं ऐं क्लीं सौं कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों ह्रीं हूं श्रीमदेक-जटे ब्रह्म-षोडशी-स्वरूपिणि त्रिपुर-सुन्दरि ह्रीं त्रीं हूं फट् कएईलह्रीं स्त्रीं हूं नीलसरस्वति महा-तारे सर्वसिद्धिं प्रयच्छ ॐ ह्रीं क्लीं ह्रीं ग्लौं स्त्रीं फट् स्वाहा ।

यः पठेत् कवचं दिव्यं महोग्राया इदं शुभम् ।
मन्त्र-सिद्धिर्भवेत् तस्य पुरश्चर्यां विना द्रुतम् ॥१०४॥

सिद्धयोऽष्टौ करस्थाः स्युर्देवी-पुत्रोऽयमीरितः ।
धर्मार्थ-काम-मोक्षाणां भाजनोऽयं न संशयः ॥१०५॥

या स्त्रियो भाग्यतो लब्ध्वा धारयन्ति इदं महत् !
कवचं तत्प्रभावेण दिव्यान् पुत्रान् समाप्नुयुः ॥१०६॥

सौभाग्यं विपुलं भोग्यमारोग्यं सर्व-सम्पदः ।
प्राप्नुवन्ति जय-पराः साक्षाद् देवीति सोच्यते ॥१०७॥

इतीदं कवचं वत्स ! कथितं तव भक्तितः ।
मम प्राणाधिकं ह्येतद् गोप्तव्यं तत् प्रयत्नतः ॥१०८॥

इति उत्तर-गन्धर्व-तन्त्रे त्रैलोक्य-विजयं नाम श्रीतारा-कवचं सम्पूर्णम् ।

*

ताराकपूर-स्तोत्रम्

श्रीकण्ठामर-केशवर्ण-घटितं चन्द्रार्द्ध-विन्दूज्ज्वलं
बीजं यत्परमं गुणत्रयमयं कामप्रदं मुक्तिदम् ।
मातः शङ्करवल्लभे प्रतिदिनं ध्यायन्ति ये ये सदा
ते ते यान्ति चिदात्मकं हरि-हर-ब्रह्मादिसाम्यं मुदा ॥१॥

व्योमार्णं वाम-नेत्रान्वितमनलयुत विन्दु-चन्द्रार्धयुक्तं
बीजं ते गुह्यमेतत् त्रिभुवनजननि ! त्रिक्षणे ये जपन्ति
तेषां वक्त्रारविन्दे विहरति मधुरा गद्य-पद्य वली भी-
र्मातश्चन्द्रार्धचूडे सकलभयहरे सिद्धिभाजां नराणाम् ॥२॥

शुक्रार्णं पूतनास्थं कलित-शशिकला-विन्दुभूषं सवह्नि-
भ्राजिद् वामाक्षियुक्त जननि ! तव बधू-बीजमेतज्जपन्ति ।
ते ते लोलेक्षणानां विगलितरसना-पीनवक्षोज-वासः
केशानां चित्तमाशु स्मरहर-महिले ! मोहयन्ति प्रकामम् ॥३॥

ईशानं वामकर्णोल्लसित-शशिकला-विन्दुयुक्तं प्रगुह्यं
बीजं मातस्त्वदीयं यदि जपति जनो वारमेकं जडात्मा ।
चञ्चत्पञ्चाशदुग्र-ग्रथित-नरशिरो मालिकाकान्त-कण्ठे
मातः ! शैलेन्द्रपुत्रि ! त्रिभुवनमपि संक्षोभयत्येव शीघ्रम् ॥४॥

प्रतिदिन पूजा के समय, प्रसन्न मनसे जो साधक फेत्कारिणी-तन्त्रोक्त इस ताराकपूंरस्तोत्र का पाठ करता है वह यश, आयुष्य एवं यथेच्छ धन-धान्यादि सभी सुखों को प्राप्त कर अन्तमें मोक्ष प्राप्त करता है ।

पश्चादस्त्रं तदन्यत् पुरहर-महिले ! बीजमत्यन्तगुह्यं
भालोद्यत्-पञ्चमुद्रे ! प्रकट-विकट-दंष्ट्रोग्र-वक्त्रारविन्दे ।
नित्यं ये भावयन्ति प्रतिदिनममले ! घोररूपाट्टहासे !
ते नूनं भ्रामयन्ति त्रिजगदघहरे ! चक्रवद् विश्वमेतत् ॥५॥
माया-स्त्री-कूर्चबीजैर्नव-तपनहरित् सार्द्धचन्द्रांशुवर्णे !
मातर्नीलाख्यमेतत् तव मनुमनिशं ये प्रकामं जपन्ति ।
वित्ते वित्तेशतुल्याः सुरगुरु-सदृशास्तर्क-काव्यागमादौ
ते ते नीलाम्बुदाली-रुचि-रुचिरतनो कामरूपा भवन्ति ॥६॥
भवान्येभिर्बीजैर्हिमगिरिसुते ! चास्त्रसहितै-
र्निगूढ ये मातस्तव मनुं जपन्त्येकजटिले ।
त्रियामानाथार्ध-प्रविलसितभाले ! त्रिनयने !
गृहे तेषां नित्यं निवसति मुदा सिन्धुतनया ॥७॥
अमीभिर्बीजैस्ते प्रणवसहितैः शैलतनये !
निजस्वान्ते सास्त्रं परिजपति पञ्चाक्षरमिति ।
स सिद्धः स त्यागी स तु पुर-हरोऽसौ मुरहरः
स धाताऽसौ मुक्तो भवति हि चिदानन्दरसिके ॥८॥
शवासीनां कण्ठे कलित-नृकरीटीं करलसत्
कपालासि-श्यामोत्पल-रुचिरकर्त्रीं त्रिनयनाम् ।
नवोन्मदश्यामां विकटरद-भीमां पृथुकुचां
सदैव त्वां ध्यायन् जननि ! सजडो वाक्पतिसमः ॥९॥
तटे नद्याः सिन्धोर्गिरि-शिरसि मालूरगहने
श्मशाने गोष्ठे वा गिरिशभवने शून्यसदने ।

हविष्याशी लक्षं प्रजपति वशी-भावनपरः
स सर्वज्ञो वाग्मी भवति सुजनो पीनजघने ॥१०॥

मुदा मातः ! शुद्धोदक-रुचिर-गन्धाक्तसलिलैः
स्वयम्भू-पुष्पस्रक्-कुलतनुभग-क्षालितजलैः ।
शिवे ! त्वं संध्यायन् हरमहिषि ! सन्तर्पयति यः
सदैव स्त्रीवृन्द वशयति स विद्याधरपतिः ॥११॥

जवापुष्पैर्विल्वैर्भरु-वकुलमुख्यैश्च कुसुमैः
सुगन्धैः कर्पूरैरगरुसहितैर्धूप-निकरैः ।
प्रदीपैरुज्ज्वालैर्घृत - रचित - नैवेद्यनिकरैः-
स्तवार्चां यः कुर्यात् स भवति पूज्यः क्षितिपतेः ॥१२॥

स दूर्वाभिः पद्मैस्त्रिमधु-सलिलैः श्रीफलदलैः
घृतैर्गव्यै रक्तैः सुकुल-भग-लिङ्गामृतरसैः ।
त्रिकोणे कुण्डे यो हुतवहमुखे होमविधिना
जुहोति त्वां मातः ! स भवति कवीन्द्रः क्षितिपतिः ॥१३॥

निशीथे कल्याणि ! प्रमुदितमना या पितृवने
बलिं ते मेषाद्यैः स नर-महिषैर्वा परिचरेत् ।
स राजानं क्षिप्रं वशयति मृगाक्षी-समुदयं
त्रिलोकीं वा भूमौ स भवति नरः सत्कविवरः ॥१४॥

महापूजां मातस्तव वितनुते यस्तु मधुना
तथा मांसै-र्मत्स्यै-र्विविध-नवमुद्रादिभिरपि ।
वरस्त्रीभिः सार्धं निधुवन-विनोदेन मुदितो
निशीथे संसारात् स भवति विमुक्तः पशुभयात् ॥१५॥

त्रिकोणे पीठे त्वां वर-निधुवनासक्त-हृदयां
महाकालेनोद्यत् - पुलकनिचयां स्मेरवदनाम् ।
स्वयं नक्तं कान्ता-रतिरस-समासक्तहृदयो
मनुष्यो यो ध्यायेद् भवति शिवतुल्यः स धरणौ ॥१६॥

समुत्तुङ्गापीन - स्तनजघन - राजत् - कुलवधू-
व्यवाय-व्यासक्तो जपति तव भक्तो यदि मनुम् ।
गलद्-वासः केशो जननि ! मनुजो मेदिनितले
स सिद्धीशः शक्त्या जयति सुचिरं सर्व-सुजनम् ॥१७॥

भवानि ! श्रीमातर्निज-गलित-वीर्याप्त-चिकुर-
मथ प्रेम्णा लब्ध्वा वचन-भुवनेशीयुत-मनुम् ।
समुच्चार्य क्षोणीतनयदिवसे प्रेतसदने
स दीर्घायुर्वाग्मी भवति शतहोमात् क्षितितले ॥१८॥

अजस्रं यो मन्त्रं जपति भूमीधरसुते !
विचिन्त्याग्रे मातः ! कुसुम-ललित मारभवनम् ।
धरण्यां कन्दर्प-प्रतिम-तनुभृतः स सकलान्
निजेष्टानाप्नोति प्रविशति मुदा तारिणिपदम् ॥१९॥

तमोग्रस्ते चन्द्रे यदि जपति लोकस्तव मनुं
नवम्यां वा मातर्धरणिधरकन्ये ! वितनुते ।
तथा सूर्ये पृथ्वी-वलय-तिलकः काव्यतरनी-
पयोधिः सिद्धीनां भवति भवनं सर्वविदितः ॥२०॥

सदा पादाम्भोजे भ्रमतु हृदयं भृङ्ग इव मे
सदा पाणिद्वन्द्वं परिचरतु कर्णस्तव कथाम् ।

श्रृणोतु त्वत्कीर्तिं हरमहिषि ! गीर्गायतु सदा
सदा दृष्टिर्भूयाद् भवदनुचरालोकनपरा ॥२१॥
कदा काले शैलेश्वरतनुभवे ! पादयुगलं
मुदा द्रक्ष्ये ब्रह्म-प्रमुख-विबुधानां परिणुतम् ।
कृपापारावारे ! भवजनन-भीतैकशरणे !
शरण्ये ! कारुण्यं मयि वितर दीने भगवति ॥२२॥

फलश्रुतिः

सदैव स्तोत्रं यः पठति मुदितः साधकवरो
न दारिद्र्यं तस्य प्रभवति कदाचित् क्षितितले ।
त्रिवर्गो हस्ते स्याज्जगदखिलमेतच्च वशगं
चिरं जीवन्नन्ते जननि ! लभते मोक्षपदवीम् ॥२३॥
इदं स्तोत्रं मातः प्रपठति दिवा-रात्रिमनिशं
स सर्वज्ञो योगीश्वर-निकर-चूडामणिसमः ।
जडोऽपि त्वद्-रूपं जपति यदि सञ्चिन्त्य मनसा
त्वदग्रे भूयोऽन्धैः क्षितिपतिसमानः क्षितितले ॥२४॥
महापुण्यं धन्यं सकल-पुरुषार्थैक-निलयं
यशस्यं चायुष्यं सतत-भवतापापहमिदम् ।
रहस्यं प्राकाम्यं नहि खलु कदाचित् पशुजने
पठेत् पूजाकाले जननि ! लभते मोक्षपदवीम् ॥२५॥

इति फेत्कारिणी-तन्त्रे ताराकपूरस्तोत्रं समाप्तम् ।

*

त्रैलोक्य-मोहन-तारा-कवचम्

देव्युवाच

तारा-पूजा श्रुता नाथ ! विद्याश्च सकलास्ततः ।
साम्प्रतं श्रोतुमिच्छामि कवचं मन्त्र-विग्रहम् ॥१॥
त्रैलोक्य-मोहनं नाम सर्वापद्-विनिवारकम् ।
पूर्वैव सूचितं नाथ ! कृपया मे प्रकाशय ॥२॥

ईश्वर उवाच

देव-दानव-विद्या-धृक् पूजिते प्राण-वल्लभे ।
त्रैलोक्य-मोहनं नाम कवचं श्रूयतां परम् ॥३॥
सर्व-विद्या-मयं देवि ! सर्व-मन्त्र-मयं ध्रुवम् ।
सर्व-रक्षाकरं देवि ! सिद्धि-विद्या-प्रदायकम् ॥४॥
वेद-व्यासोऽपि यद् धृत्वा सर्वज्ञः पठनाद् यतः ।
यद् धृत्वा पठनादीशस्त्रैलोक्य-विजयी प्रभुः ॥५॥
धनाधिपः कुबेरोऽपि देवाधिपः शचीपतिः ।
पठनाद् धारणात् सत्यं यतः सर्वे दिगीश्वराः ॥६॥
सर्व-सिद्धियुताः सन्तः सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः ।
यस्य प्रसादादीशोऽहं भैरवानां महेश्वरि ॥७॥

प्रस्तुत तारा-कल्पोक्त-त्रैलोक्यमोहन-तारा-कवच देव-दुर्लभ अत्यन्त प्रभावशाली सिद्धस्तोत्र है। श्रद्धापूर्वक नित्यप्रति इसके पाठसे शत्रु-नाश, सन्तानप्राप्ति एवं मनचाही सभी सुखों की उपलब्धि अवश्यंभावी है।

क्रोधाधिपो महा-भीमो देवेषु पृथितः प्रभुः ।
न दद्यात् पर-शिष्येभ्यो दद्याच्छिष्येभ्य एव हि ॥८॥

विनियोगः—अस्य त्रैलोक्य - मोहन - कवचस्य श्रीशिवः ऋषिः, विराट् छन्दः, श्री उग्रतारा देवता, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः ।

ऋष्यादि-न्यासः—श्रीशिव ऋषये नमः शिरसि, विराट्-छन्दसे नमः मुखे, श्री उग्रतारा-देवतायै नमः हृदि, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-सिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगाय नमः अञ्जलौ ।

ॐ ह्रीं स्त्रीं मे शिरः पातु हूं फट् पातु ललाटकम् ।
सार्द्ध-पञ्चाक्षरी तारा पायान्नेत्र-युगं मम ॥९॥
ॐ ह्रीं स्त्रीं हूं श्रुती पातु नमः पातु च नासिकाम् ।
तारा षडक्षरी पायाद् वदनं मुण्ड-भूषणा ॥१०॥
ह्रीं स्त्रीं हूं च फट् वदनं जिह्वां पायान्महेश्वरी ।
ह्रीं स्त्रीं हूं मे गलं पातु सापि नील-सरस्वती ॥११॥
स्त्रीं स्कन्धौ पातु नियतं तारैकाक्षर-रूपिणी ।
हूं घाटां सा सदा पातु बीजैकाक्षर-रूपिणी ॥१२॥
ऐंह्रींस्त्रींहूं च फट् पायाद्वाक्तारा मे भुज-द्वयम् ।
श्रींह्रींस्त्रींहूं च फट् पायात् श्रीतारा मे स्तनद्वयम् ॥१३॥
ह्रींह्रींस्त्रींहू च फट् माया तारा च हृदयं मम ।
हूंह्रींस्त्रींहूं च फट् बीजं तारा पृष्ठं सदाऽवतु ॥१४॥
क्लींह्रींस्त्रींहूं च फट् पायात् पार्श्वौ काम-स्वरूपिणी ।
ॐ ह्रींस्त्रींहूं नमः पायात् कुक्षिं महा - षडक्षरी ॥१५॥

ऐंसौः ॐ ऐंह्रीं फट् स्वाहा कटि-देशं सदाऽवतु ।
अष्टाक्षरी महाविद्या साक्षाद् ब्रह्म-स्वरूपिणी ॥१६॥
खं हूं हौं ॐ ऐं ल्रीं ह्रीं सा गुह्यदेशं सदाऽवतु ।
सप्ताक्षरी चोग्रतारा मूल-विद्या-स्वरूपिणी ॥१७॥
ॐ ह्रीं हां हूं नमस्तारायै हूं सकल-पदं ततः ।
दुस्तरं तारय पदं तारय प्रणव-द्वयम् ॥१८॥
स्वाहेति च महाविद्या जानुनी सर्वदाऽवतु ।
ऐंसौंॐऐं क्लीं फट् स्वाहा जङ्घे पातु पराम्बिका ॥१९॥
ॐह्रीं स्त्रीं हूं च फट् तारा हंसाद्यन्ता नवाक्षरी ।
महोग्रतारा पादौ मे पातु नित्यं महेश्वरी ॥२०॥
ऐंह्रींस्त्रीं ह्सौः स्सौः वद वद वाग्वादिनीति च ।
काम-बीज-त्रयं नील-सरस्वती-स्वरूपकम् ॥२१॥
ऐंऐंऐं काहि काहि कलरीं स्वाहेति च पावति ।
चतुस्त्रिंशल्लिपिमयी पातु ताराखिलं वपुः ॥२२॥
इन्द्रो वामाक्षियुक् पृथ्वी सरस्वत्यनल-प्रिया ।
कूर्चाद्यन्ता पातु चोर्ध्वं मूल-विद्या दशाक्षरी ॥२३॥
तारं माया वधूः कूर्चं कालिका कमला ततः ।
उग्रतारे भगं कामः परा लक्ष्मी शिवांकुशौ ॥२४॥
सा महा-षोडशी प्रोक्ता तारा-देव्या मयाऽधुना ।
विधिवद् गृह्णात् तस्यामृत्युं मृत्यु-पथं नयेत् ॥२५॥
एषा विद्या महा-गुप्ता तन्त्रादि-यामलेषु च ।
साम्प्रतं कथिता तुभ्यं कवचाङ्गतया प्रिये ॥२६॥

इति ते कथितं देवि ! गुह्याद् गुह्यतरं परम् ।
त्रैलोक्य-मोहनं नाम कवचं मन्त्र-विग्रहम् ॥२७॥

फलश्रुतिः

ब्रह्म-विद्यामयं भद्रे ! केवलं ब्रह्म-रूपिणम् ।
मन्त्र-विद्यामयं चैव कवचं मन्मुखोदितम् ॥२८॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवत् कवचं प्रपठेद् यदि ।
त्रिः सकृद् वा यथा-ज्ञानं भैरवस्तत्क्षणाद् भवेत् ॥२९॥
सर्व-पाप-विनिर्मुक्तः कुल-कोटीः समुद्धरेत् ।
गुरुः स्यात् सर्व-विद्यानामधिकारी जपादिषु ॥३०॥
शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्या-विधिः स्मृतः ।
शतमष्टोत्तरं जप्त्वा भवेद् भूमि-पुरन्दरः ॥३१॥
त्रैलोक्यं विचरेद् धीरो गणनाथो यथा गुहः ।
गद्य-पद्य-मयी वाणी भवेद् गङ्गा-प्रवाहवत् ॥३२॥
पुष्पाञ्जल्यष्टकं दत्वा मूलेनैव पठेत् सकृत् ।
पञ्चवर्ष-सहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३३॥
भूर्जे विलिख्य गुलिकां स्वर्णस्थां धारयेद् यदि ।
पुरुषो दक्षिणे बाहौ योषिद् वाम-भुजे तथा ॥३४॥
बहु-पुत्रवती नारी पुरुषो बहु-पुत्रवान् ।
सर्व-सिद्धियुतो भूत्वा विचरेद् भैरवो यथा ॥३५॥
तद्-गात्रं प्राप्य शस्त्राणि ब्रह्मास्त्रादीनि भैरवि ! ।
माल्यानि कुसुमान्येव भवन्ति सुखदानि च ॥३६॥

तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्वाणी वक्त्रे वसेद् ध्रुवम् ।
इदं कवचमज्ञात्वा तारां यो जपतेऽधमः ॥३७॥
अल्पायुर्निर्धनो मूर्खो भवत्येव न संशयः ॥३८॥

इति श्रीताराकल्पे त्रैलोक्य-मोहनं नाम तारा-कवचं सम्पूर्णम् ।

❀

विद्याप्रद-तारा-स्तोत्रम्

श्रीभैरव उवाच

अथोच्यते महादेवि ! तारिण्या स्तवमुत्तमम् ।
घोर-रूपे ! महारावे ! सर्व-शत्रु-क्षयङ्करि ।
भक्तेभ्यो वरदे देवि ! त्राहि मां शरणागतम् ॥१॥
सुराऽसुरार्चिते देवि ! सिद्ध-गन्धर्व-सेविते ।
जाड्य-पापहरे देवि ! त्राहि मां शरणागतम् ॥२॥
जटा-जूट-समायुक्ते ! लोल-जिह्वकरालिनि ।
द्रुत-बुद्धिकरे देवि ! त्राहि मां शरणागतम् ॥३॥
सौम्य-रूपे घोर-रूपे चण्ड-रूपे नमोऽस्तु ते ।
सृष्टि-रूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥४॥
जडानां जडतां हंसि भक्तानां भक्त-वत्सले ।
मूढतां हर मे देवि ! त्राहि मां शरणागतम् ॥५॥

प्रस्तुत विद्याप्रद-तारा-स्तोत्र बृहन्नील तन्त्र से लिया गया है। जो मनुष्य श्रद्धा-भक्ति एवं विश्वासपूर्वक प्रतिदिन इसका पाठ करता है, वह छः महीने में ही सिद्धि प्राप्त कर लेता है। शत्रु-नाश और विद्या-प्राप्ति के लिए तो यह स्तोत्र राम बाण है।

हूं हूंकार-मये देवि ! बलि-होम-प्रिये ! नमः ।
उग्रतारे ! नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥६॥
बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे ।
कुबुद्धिं हर मे देवि ! त्राहि मां शरणागतम् ॥७॥
इन्द्रादि-देव-वृन्देश-वन्दिते करुणामयि ।
तारे ताराधिनाथास्ये ! त्राहि मां शरणागतम् ॥८॥

फलश्रुतिः

अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां यः पठेन्नरः ।
षण्मासैः सिद्धिमाप्नोति नात्र कार्या विचारणा । ९॥
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्क-व्याकरणादिकाम् ॥१०॥
इदं स्तोत्रं पठेद् यस्तु सततं भक्ति-तत्परः ।
तस्य शत्रुः क्षयं याति महा-प्रज्ञा च जायते ॥११॥
पीडायां वाऽपि सङ्ग्रामे जप्ये दाने तथा भये ।
य इदं पठति स्तोत्रं शुभं तस्य न संशयः ॥१२॥
स्तवेनानेन देवेशि ! प्रणमेद् भक्ति-भावतः ।
योनिमुद्रां दर्शयित्वा वर-प्रार्थनमेव च ॥१३॥
स्तोत्रेणानेन देवेशि ! स्तुत्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।
सर्वान् कामानवाप्नोति सर्वविद्या - निधिर्भवेत् ॥१४॥
इति ते कथितं दिव्यं स्तोत्रं सारस्वतप्रदम् ।
अस्मात् परतरं नास्ति स्तोत्रं तन्त्रे महेश्वरि ॥१५॥

इति बृहन्नीलतन्त्रे विद्याप्रदं तारा-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

❀

देवी-आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामे गौरी।
मैया जय मंगलकरणी, मैया जय आनन्दकरणी ॥
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ १ ॥ जय अम्बे०
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृदमद को। मैया टीको०
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको ॥ २ ॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै। मैया रक्ता०
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै ॥ ३ ॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी। मैया खड्ग०
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी ॥ ४ ॥ जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती। मैया नासा०
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती ॥ ५ ॥ जय अम्बे०
शुम्भ-निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती। मैया महिषा०
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती ॥ ६ ॥ जय अम्बे०
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे। मैया शोणित०
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे ॥ ७ ॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी। मैया तुम०
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी ॥ ८ ॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरों। मैया नृत्य०
बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू ॥ ९ ॥ जय अम्बे०
तुम ही जग की माता, तुम ही हो भरता। मैया तुम०
भक्तन की दुःख हरता, सुख-सम्पति करता ॥१०॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित बरहु अभयधारी। मैया वर०
मन वांछित फल पावत, सेवत नर नारी ॥११॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत, अगर कपूर बाती। मैया अगर०
श्री मालकेतु में राजत, कोटिरत्न ज्योती ॥१२॥ जय अम्बे०
ये अम्बे जी की आरति, जो कोई नर गावैं। मैया जो०
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावैं ॥१३॥ जय अम्बे०

ग्रन्थकारसंस्तवः

देवरिया-जनपदके ख्याते ग्रामे मझौलिकाऽभिख्ये ।
उद्भटशूरा मल्ला यत्राऽऽसन् विश्वविख्याताः ॥ १ ॥
विद्या-सदाचारगुण-प्रसिद्धा लोकद्वयी साधनकर्मसिद्धाः ।
यत्राऽभवँल्लोक - ललामभूता, विप्रा जगद्वन्दित-पादपद्माः ॥ २ ॥
पितामहोऽभून्मम लोकवित्तः, श्रीकान्तनामा-ऽऽगममर्म-विज्ञः ।
तदात्मजौ द्वौ परमार्थनिष्ठौ, जातौ प्रतीक्ष्याऽर्चनरक्तचित्तौ ॥ ३ ॥
श्रीसन्तशरणनामा ज्यायानासीन्नितान्त-विख्यातः ।
शास्त्राऽनुशीलनपरः शुभकर्मपरायणः सततम् ॥ ४ ॥
श्रीसत्यनारायणनामधेय आसीत्कनीयाञ्छुभभागधेयः ।
द्वावप्यभूतां पितृभक्तिभाजौ, लोकोपकारे परमप्रवीणौ ॥ ५ ॥
श्रीसन्तशरणविदुषो द्वौ पुत्रौ भक्तिसम्पन्नौ ।
श्रीलजगन्नाथ इति ज्यायानासीद् गुणाऽग्रणीर्धीमान् ॥ ६ ॥
तदनुजनुर्गुरुभक्तः शिवदत्तोऽहं समाख्यया प्रथितः ।
पित्रोः परिचरणपरः शास्त्राऽम्बुधिमज्जने रसिकः ॥ ७ ॥
वागीश्वरी नाम ममाऽऽद्यपत्नी, सावित्रिकाया प्रसवित्रिकाऽऽसीत् ।
सा द्रौपदी नाम मदन्यपत्नी, पुष्पाप्रसूर्द्वे अपि मुक्तिभाजौ ॥ ८ ॥
पौरस्त्य-पाश्चात्त्य-विशिष्टविद्या कलाप्रवीणस्य विचक्षणस्य ।
सत्यव्रतस्याऽस्ति कलत्ररत्नं सावित्रिका नाम मदीयकन्या ॥ ९ ॥
कनीयसी मे दुहिताऽस्ति पुष्पा, श्रीमद्-रमेशाख्यबुधस्य पत्नी ।
उभे मदीये तनये, स्वधर्मं, सम्पाद्य सौभाग्य-समन्विते स्तः ॥१०॥
आचार्योऽहं शब्दशास्त्रे तथैव, साहित्याऽब्धिग्रन्थनिर्माणशीलः ।
तन्त्रे,स्तोत्रे,व्याकृतौ धर्मशास्त्रे,सन्ति ग्रन्था निर्मिता मामकीनाः ॥११॥
अद्याऽवधि ग्रन्थशताऽधिकं मे प्रकाशितं भूरिपरिश्रमेण ।
अशान्तयत्नेन कृतिं करोमि शास्त्रोक्तकृत्य विदधामि नित्यम् ॥१२॥
स्वचित्त-शिष्टा-ऽऽस्तिक-तोषणाय निरन्तरं शास्त्रचयं समीक्ष्य ।
मया प्रणीता विविधाः प्रबन्धाः संप्रार्थये तत्र सतां सुदृष्टिम् ॥१३॥

*

क्षमा-प्रार्थना

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ! ॥ १ ॥
आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ! ॥ २ ॥
यद्दत्तं भक्तिमात्रेण पत्रं पुष्पं फलं जलम् ।
निवेदितं च नैवेद्यं तद्-गृहाणाऽनुकम्पया ॥ ३ ॥
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि !
यत्पूजितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ ४ ॥
अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् ।
यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥ ५ ॥
अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ ६ ॥
कामेश्वरि ! जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे ।
गृहाण त्वं स्तुतिमिमां प्रसीद परमेश्वरि ! ॥ ७ ॥
गतं पाप गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ।
आगता सुख-सम्पत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥ ८ ॥
यदत्र पाठे जगदम्बिके मया, विसर्ग-विन्द्वक्षर-हीनमीरितम् ।
तदस्तु सम्पूर्णतमं प्रसादतः, सङ्कल्पसिद्धिश्च सदैव जायताम् ॥ ९ ॥
मोहादज्ञानतो वा पठितमपठितं, साम्प्रतं ते स्तवेऽस्मिन् ।
तत्सर्वं साङ्गमास्तां भगवति वरदे !, त्वत्प्रसादात् प्रसीद ॥ १० ॥
यस्याऽर्थं पठितं स्तोत्रं तवेदं शङ्करप्रिये ! ।
तस्य देहस्य गेहस्य शान्तिर्भवतु सर्वदा ॥ ११ ॥

इति तारा-रहस्ये क्षमा-प्रार्थना समाप्ता ।

इति देवरिया-मण्डलान्तर्गत - 'मझौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी)-वास्तव्येन पण्डितश्रीसन्तशरणमिश्रात्मज-आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्त-मिश्रशास्त्रिणा 'शिवदत्ती' हिन्दीव्याख्या विभूष्य प्रणीतं सम्पादितं च तारा-रहस्यं समाप्तम् ।

—:o:—

अन्य महत्वपूर्ण तंत्र ग्रंथ

उड्डीशतन्त्रम् । 'शिवदत्ती' हिन्दी व्याख्यासहिता । व्या०-पं० शिवदत्त मिश्र ८०-००

कर्पूरस्तवः । संस्कृत-हिन्दी टीका सहित । व्या०-डॉ०सुधाकर मालवीय ६-००

कालीरहस्यम् । 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित । (कालीपंचांगकाली-तंत्र-काली उपासना-कालीपूजापद्धति) सम्पा०-पं०शिवदत्तमिश्र शीघ्र

क्रमदीपिका । केशवभट्टप्रणीत । विद्याविनोद श्रीगोविन्द भट्टाचार्यकृत विवरण सहित । डॉ० सुधाकर मालवीयकृत सविमर्श 'सरला' हिन्दी व्याख्या । श्रीमद्वैष्णवाचार्य श्रीनिवासाचार्यप्रणीत वधुस्त-वराजस्तोत्र । वैष्णव पुरुषोत्तमप्रसादकृत 'गुरुभक्तिमन्दाकिनी' व्याख्या सहित । व्या०-डॉ० सुधाकर मालवीय १००-००

Tripura-Rahasya (Jnanakhanda). English Translation by A. U. Vasavada. 100-00

त्रिपुरारहस्य का तंत्रविश्लेषण । हिन्दी रूपान्तरकार-डॉ० भवानीशंकर उपाध्याय ३०-००

दत्तात्रेयतन्त्रम् । 'शिवदत्ती' हिन्दी टीका सहित ८-००

Mahanirvana Tantra. A Prose English Translation by M. N. Dutt. 85-00

रुद्रयामलतन्त्रम् । (उत्तरतन्त्रम्) । सम्पा०-डॉ० रामकुमार राय । मूलमात्र १५०-००

षट्चक्रनिरुपणम् । पूर्णानन्दयति विरचित । कालीचरणकृत 'श्लोकार्थ-परिष्कारिणी' शंकरकृत 'षटचक्रभेद'-टिप्पणी-विश्वनाथकृत 'षट्चक्र-विवृत्ति' संस्कृत तथा सविमर्श 'प्रह्लाद' हिन्दी व्याख्या सहित । हिन्दी व्याख्याकार-गोस्वामी प्रह्लाद गिरि वेदान्तकेशरी ३५-००

षट्चक्रनिरुपणम् । पूर्णानन्दयति विरचित । सविमर्श 'प्रह्लाद' हिन्दी व्याख्या सहित । हिन्दी व्याख्याकार-गोस्वामी प्रह्लाद गिरि वेदान्तकेशरी २०-००

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, पो०बा० १००८, वाराणसी-२२१००१